ॐ

✳ श्रीवीतरागाय नमः ✳

श्रावक स्तवन संग्रह।

द्वितीय भाग।

संग्रहकर्ता—

भैरोदानजी तत्पुत्र पानमल सेठिया।

बीकानेर निवासी।

PANMULL SETHIA,

MOHOLLA MAROTIAN WARD,

BIKANER, *Rajputana*

J B Ry

मूल्य प्रेमस पठनम्
प्रति ३०००

वीर सवन २४४९
विक्रम सवन् १९७९
ई० सन १९२३

35336

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्रावक स्तवन संग्रह।

द्वितीय भाग।

संग्रहकर्ता—

भैरोदानजी तत्पुत्र पानमल सेठिया।
बीकानेर निवासी।

PANMULL SETHIA,
MOHOLLA MAROTIAN WARD,
BIKANER, *Rajputana*
J B Ry

मूल्य प्रेमसें पठनम्
प्रति ३०००

वीर सवत् २४४९
विक्रम सवत् १९७९
ई० सन १९२३

श्रीगौतमाय नमः ।

❋ दोहा ❋

पोथी प्यारी प्रेमकी, हर हिवड़ेको हार ।
जीव जतन कर राखजो, पोथी सेती प्यार ॥

जलसु जतनकर राखजो, तेल अग्न सुं दूर ।
मूर्खहाथ मत दीजिये, जोखम खाय जरूर ॥

पानमल्ल सेठिया।

जन्म दिवस सम्वत १९५७ मिती चैत सुदी १२
तारीख १२ अप्रैल सन १९००

Panmull Sethia
(Born 12th April 1900)

श्रीवीतरागाय नमः ।

विषय	पृष्ठ

अर्हन्तोभगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः
आचार्या जिनशासनोन्नति कराःपूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्टिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥१॥

महावीर जी स्वामी आप विराजो चंदण चौकमें ॥ एदेशी ॥

म्हारी वंदणा झेलो मैं छु श्राविका सुन्दर शहर की, बांध मुखपति करुं सामायिक, राखूं पुंजणी आच्छी । प्रतिक्रमणा वे वरियां करती, तो मैं श्राविका साची जी ॥ म्हारी० ॥ १ ॥ वास व्रतमें करूं तपस्या नहीं करणीमें काची । पर्व्व पर्वका पोषद करती तो मैं श्राविका साची जी ॥ म्हारी० ॥ २ ॥ भाणे बैठी भांउ भावना, साची शियलमें राची । स्थानक जाऊं बेगी उठने, तो मैं श्राविका साची जी ॥ म्हारी० ॥ ३ ॥ देवगुरुकी किनी ओलखना लीनी जांची जांची । हिंसा धर्म के संग न जाऊं, तो

मैं श्राविका साची जी ॥ म्हारी० ॥४॥ हीरालाल कहे एहवी बाई, भणी गुणी पुस्तक वांची। विनयवंत गुणवंत गिणावे, सोही श्राविका साचीजी।। म्हारी वंदणा झेलो मैं छु श्राविका सुन्दर शहर की ॥ ५ ॥

॥ इति पदम् ॥

वाईजी म्हारा प्रभुजी पधारया उतरया बागमें, वंदवाने चालो दर्शण करस्यां जो होसी भागमें । दर्शण करलो प्रश्न पूछलो वांणी सुणलो प्यारी, भांत भांतका मुनि देखलो, खुली केसर की क्यारी जी ॥ वाईजी० ॥ १ ॥

इन्द्र इन्द्राणी देवी देवता मिल मिल मंगल गावे । निरख नयणा नाथ न हिये हरष नहीं मावे जी ॥ बाईजी० ॥ २ ॥ तीन लोकमें मोहन गारा प्यारा प्रभुजी लागे । मृगी मारने रोग नहीं आवे, सौ सौ कोश आगे जी ॥ बाईजी० ॥३॥ हाथी घोड़ा रथ पालखी केई गज ऊपर चढ़िया, आभूषण सोहे भारी पड़दा रत्न जड़िया जी ॥ बाई जी० ॥ ४ ॥ आपां चालो करो वंदणा करो प्रश्नका निरणा । हीरालाल कहे हरष धरी ने, भेटो जिनवर का चरणा ॥ बाईजी० ॥ ५ ॥

॥ इति पदम् ॥

श्री आदीसरस्वामी हो प्रणमुं
शिर नामी तुम भणी ॥ एदेशी ॥

अथवा
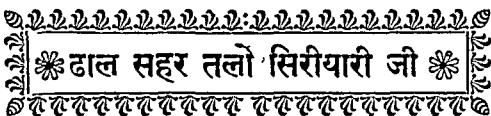
❋ ढाल सहर तलो सिरीयारी जी ❋

सामाइ सुखदाईजी चित लाई कीजै चूंप सुं, कांई आतम रो आधार। दोय घड़ी प्रमाणे जी वातां नहीं कीजे दूसरी, धर्म शुक्ल मन धार ॥ सा० ॥ १ ॥ समता भाव सामाइ जी वताई सूत्रमें सही, कांई ममता देवो मार। प्रेम धरी नव कोटी जी नहीं खोटी रूड़ी पालजो, कांई पाप सकल परिहार ॥ सा० ॥ २॥ सायत्र समरण कीजे जी पीजे रस समता शीलरो, कांई उलट घणो मन आंण। जन्म मरण मिट जावे जी जोखो नहीं थावे जीवने,

कांई कोड़ां होवे कल्याण ॥ सा० ॥ ३॥ प्रभु घररी
बातां जी गुण दाता कीजे प्रेम सुं, कांई तवन
सस्कार्या तंत । सुणजे भणजे गुणजे जी
सीखीजे चरचा गुरु कने, कांई खरी धरी मन
खंत ॥ सा० ॥ ४ ॥ निंद्या विकथा आलस जी
कषाय च्यार निवार जो, कांई परहरो पंच
परमाद । झूठी बातां छोड़ो जी मन मोड़ो
झगड़ा झोड़ सुं, कांई वरजो फोगट वाद
॥ सा० ॥ ५ ॥ वर्षा चैन बखानी जी जाणी
गुण बादल बीजली, कांई नृपति चैन निशाण ।
आच्छी रीत सामाइ जी सुखदाई रूड़ी आदरो,
ए श्रावकरा अहनाण ॥सा० ॥६॥ कोड़ भवांरा
कीधाजी उड़ावे पातक आपणा, अवल सामाइ
एक । सुरनर पदवी पावैजी शिवपुर रा सुख
लहे सासता, आणंद लील अनेक ॥ सा० ॥ ७॥
सफल दीहाड़ा जावेजी आवे नहीं पाछा
आपरा, कांई धर्म बिना किसो धन सफल

दीहाड़ा तेही जी चित्त देई धर्म समाचरे, कांई जपो वीर एक मन ॥ सा० ॥ ८ ॥ करणी रूड़ी कीजे जी लावो भल लिजे कोड़ सुं. कांई अवसर लाभो आज । काल अनंतो दोरो जी नहीं छै सोरो जिण कह्यो, कांई सारो आतम काज ॥ सा० ॥ ६ ॥ समत अठारै गुणसठैजी सुदी माह तिथि भली सातमी, कांई सोमवार सुखदाय। ऋषि चन्द्रभाण सराइ जी सामाइ रूड़ी रीत सुं, कांई चारित्र सु चित्त लाय ॥ सा० ॥ १० ॥

॥ इति ॥

कर्म तणी गति वांकडी, सुणजो भवि-लोको ॥ कर्म० ॥ टेर ॥ वड़ा पुरुष वे राम लिछमण, ज्यां सेव्यो वनवास । सती सीता कूं रावण ले गयो, राम भयो उदास हो ॥ सुणजो० ॥ १ ॥ कर्म धको दीयो रावणकूं, सीताने घाल्यो हाथ । जीव संपदा सबही खोई तीन खंड को नाथ हो ॥ सुणजो० ॥ २ ॥ वन भुगत्यो है पांचे पांडव, जिनकी सुणजो बात । जूवा मांहि हारी संपदा, दुर्योधनके साथ हो ॥ सुणजो० ॥ ३ ॥ धातकी खंड़को राय पद्-मोत्तर, बडी करी उत्पात । समुद्र उल्लंघ द्रौपदी ले गयो, हुई असम्भव बात हो ॥ सुण जो० ॥ ४ ॥ सती शिरोमण बड़ी अंजना,

उत्तम वांकी जात । विखो तूं भुगत्यो वीस वर्ष, दो संग दासीके साथ हो ॥ सुण० ॥ ५ ॥ देखो जी कर्म्मन की या स्थिति, वड़ा वड़ामें होय । मुनिराम कहे समजाय ने सजी, कर्म बांधो मति कोय हो ॥ सुण जो० ॥ ६ ॥

॥ इति उपदेशी पद समाप्तम् ॥

— ❀ —

❀ अथ वैरागी पद ❀
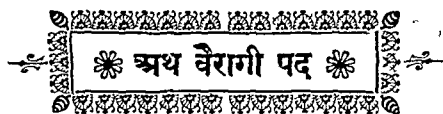
वरजूं वरजूं रे पापीडा निंदा छोड दे ॥टेर॥ तूं क्रोध पूतलो शुद्ध न थारे, बोले आल पंपाल । क्रोड पूरवकी तपस्या करने, छिन्नमें देवे जाल ॥ वरजूं ॥ १ ॥ विना पूंजीको निकमो कंगलो, वृथा जन्म गुमावे । साधु

गृहस्थ दोनु में नाहीं, अचविच गोता खावे ॥ वरजू० ॥ २ ॥ तूं औगुण सुं भरीयो पापी, जिणने तूं नहीं देखे । मनसूं वैरागी बणने बैठो वास व्रत नहीं लेखे ॥ वरजू० ॥ ३ ॥ पर्वत सेती माथा फोड़े, भिष्टामें मुख घाले । लोभ तणो तूं लाय पली तो, ज्ञान विना तूं चाले ॥ वरजू० ॥ ४ ॥ इण भवमें तो लाज गमोई परभव देसी खोय । दोनु भव तुज बिगड्यां पापी, मेल पराया धोय ॥ वरजू० ॥५॥ गांव गांवरा टुकड़ा मांगे, धर्म ठगाई करतो । रसनेंद्री के वश तूं पड़ियो, लाजे नहीं झगड़तो ॥ वरजू० ॥ ६ ॥ एम सुणी शुद्ध रीतमें चले, तो सुधरे परलोक । मुनिराम कहे शुद्ध पंथे चलता, पामे सगलां लोग ॥ वरजू० ॥ ७ ॥

॥ इति वैरागी पद समाप्तम ॥

—:*:—

उपदेशी पदम्

वीती रात हुयो अव नड़को।
अव जागणकी वारा रे ॥ टेक ॥

कोई नहीं तेरा तूं नहीं किसको। तूं सव सेती न्यारा रे ॥ वीती० ॥ १ ॥ मोह मिथ्यात की नींद घणेरी। सोया काल अपारा रे ॥ अव जागण की वार भई है। जागो चेतन प्यारा रे ॥ वीती० ॥ २ ॥ कुण तेरा तात कोण तेरी माता। कोण तेरी घरको दारा रे ॥ अंत समे तेरा कोई न साथी। झूटा सकल पसारा रे॥ वीती० ॥ ३ ॥ क्या तूं लाया क्या तेंने खाया। क्या जीता क्या हारा रे ॥ हिसाव लेवेगा परभव में। करलो जन्म सुधारा रे ॥ वीती० ॥ ४ ॥ कोड़ी कोड़ी माया जोड़ी। तृष्णा अनन्त अपारा रे ॥ अन्त समे तेरे संग न चाले। जावे हाथ

पसारो रे ॥ वीती० ॥ ५ ॥ कर कुछ ज्ञान ध्यान तप संजम । ये अवसर अब थारा रे ॥ कहे धनदास खेतड़ी मांही । ये थारे ईखत्यारा रे ॥ वीती० ॥ ६ ॥

॥ इति उपदेशी पदम् समाप्तम् ॥

॥ स्तवन ॥
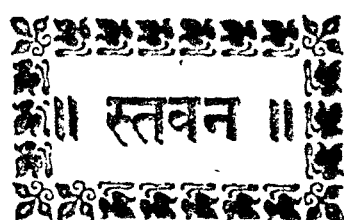
गौतम गणधर वंदिये ।
पूरण लब्धि भंडार ॥ गौतम० ॥ टेक ॥
चौवीस मां बर्द्धमान के चेला चतुर सुजान ॥ सब साधां में शिरोमणी । हुवा जगत में भाण ॥ गौतम० ॥ १ ॥ चवदे पुरवना पाठीया । ज्ञान चार बखांण ॥

तपस्या कीधी हो चित्त नीर मली नहीं मन गलयाण ॥ गौतम० ॥ २ ॥ पर्वत में मेरू वड़ो सीता नदीयां के मांय ॥ स्वयंभुरमण दधियां विषे। ऐरावत गज जाण ॥ गौतम० ॥ ३ ॥ सब रस में इखुरस वड़ो। दानमें वड़ो अभय-दान ॥ ऐम अनेक ही ओपमां। कहा लग करूं वखाण ॥ गौतम० ॥ ४ ॥ सर्व बानुं वर-सनो आउखो। दस जुग रयो घर वास ॥ पीछे एवा गुरु भेटीया। चौवीसमा जिन-राज ॥ गौतम० ॥ ५ ॥ तीस वरस छदमस्थ-रया पीछे केवल ज्ञान। दुवा दस वरसनें पारनें। पहुंच्या अमर वीमाण ॥ गौतम० ॥ ६ ॥ अनंत सुखां में विराज्या। माता पृथ्वी का नंदन ॥ खूवेचन्द कहे थारा नाम सुं भयो मगन आनंद ॥ गौतम० ॥ ७ ॥

॥ इति स्तवन समाप्तम् ॥

— ❀ —

❀ अथ बुढ़ापो लिख्यते ❀

(ए देशी फाटकारी या तेरा काठीयारी)

एजी बालपणो हस खेल गमायो, जोवन त्रिया वसको । बुढ़ापा में जरा सतावे, खातां पीतां टसको रे ॥ बुढ़ा० ॥ वैरी किण विधथासी थासु छूटवो रे ॥ आकड़ी ॥ १ ॥ एजी जोत भइ नेणाकी मंदी, दांत पड्या सब ढीला । नाक झरे सुणवा में घाटो, केश भया सब पीला रे ॥ बुढ़ा० ॥ २ ॥ एजी गोडा हाथ देईने उ[illegible]मर करडी कीनी । डांग पकड़ने डिगतो चाले, सुद बुद्ध सब खो दीनी रे ॥ बुढ़ा० ॥ ३ ॥ एजी बहुवां छोड्या कांण कायदा, कद मरसी तूं डाकी । खाय सकां नहीं पहर सकां नहीं, हीड़ा कर कर थाकी रे ॥ बुढ़ा० ॥ ४ ॥ एजी बोले तो बोलण नहीं देवे,

सीखन माने घर का। साठी वुद्ध नाट्ठी कहे सरे, पड्यो रहनी चरखा रे ॥ वुढ़ा० ॥ ५ ॥ एजी दोय पडां की हांडी मांय, खीर रावड़ी होवे। वेटा सवड़े खीर खांडने। वावो टुग मुग जोवे रे ॥ वुढ़ा० ॥ ६ ॥ एजी वैठा खावो हुक्म चलावो, हमपर ज़ोर जमावो। पुरसां जैसो खायलो सरे, नहीं तर जाय कमावो रे॥ वुढ़ा० ॥ ७ ॥ एजी पीसां पौवां करा रसोई, टावर टुवर रोवे। जाय पूकारो वेटां आगे, म्हासुं काम न होवे रे॥ वुढ़ा० ॥ ८ ॥ एजी वेटा वात सुणे नहीं तिलभर, वहुवां रा भरमाया। वर में वैठा माला फेरो, कांइ कमायने लाया रे॥ वुढ़ा० ॥ ९ ॥ एजी अठी उठीरा धका लाग्या, पुरो होय गयो कायो। कुण सुणे किणने कहुं रे, जाणे काग उडायो रे॥ वुढ़ा० ॥ १० ॥ एजी एकंत खाट पिछो-कड़े पटकी, कोयन आवे नेड़ो। कूरां कूरां

कर मूड पचावे, डोसेने मत छेड़ो रे ॥ बुढ़ा० ॥ ११ ॥ एजी घर सु रोटी करड़ी आवे, नरम खीचड़ी भावे। दातासु चावी नहीं जावे, मन दिल गीरी लावे रे ॥ बुढ़ा० ॥ १२ ॥ एजी दोरो खरच चलावां घरको, टाबर छै परणाणा। थाने माल मसाला भावे, म्हाने मांग नहीं खाणा रे ॥ बुढ़ा० ॥ १३ ॥ एजी सीख्यो ज्ञान गयो गेबाउ, पड्यो ध्यान में घाटो। भर्या बजारां धाडो पाड्यो, लूंट लियो सब लाटोरे ॥ बुढ़ा० ॥ १४ ॥ एजी पूर्व पूंजी खाय खुटाई, उमर लंबी पावे। जम-दूत जब घांटी पकड़े, अंत समे पिस्तावे रे ॥ बुढ़ा० ॥ १५ ॥ एजो पाप करीने माया जोड़ी, घरका फिर फिर जोवे। रोग असाता उदे होय जब, आप एकेलो रोवे रे ॥ बुढ़ा० ॥ १६ ॥ एजी रोया गरज सरे नहीं भोला, हुसीयारी का काम। भव भव मांए साथे

चाले, एक प्रभु रो नाम रे॥ बुढ़ा०॥ १७॥
एजी ज्ञानी होय सो गत सुधारे, मूर्ख
मरण बिगाड़े। बाल मरण ने पण्डित मरणो,
केई जीते केई हारे रे॥ बुढ़ा०॥ १८॥
एजी आया जाया सगा सनेई, चित्त नहीं
देवे परणी। दोष नहीं देणो किसीने, जोवो
आपरी करणी रे॥ बुढ़ा०॥ १९॥ एजी जीव-
तड़ा री सारन पूछी, विदविद पाड्यो वेला।
मुंवां पछे जात जीमावे, रोवे देदे हेला रे॥
बुढ़ा०॥ २०॥ एजी सिख सु वनीत सुपात्र
बेटा, विरला जुगमें पावे। जीवत मरण
सुधारे दोनु, ते उसरावण थावे रे॥ बुढ़ा०
॥ २१॥ एजी उगणीसे इकसट्ठ भाद्रवे,
गोगानमी वखाण। जैपुर मांए जड़ावने
सरे, जरा कियो हेरांण रे॥ बुढ़ा०॥ २२॥

॥ इति बुढ़ापो समाप्तम्॥

— ❀ —

❋ साधु शिक्षण ❋
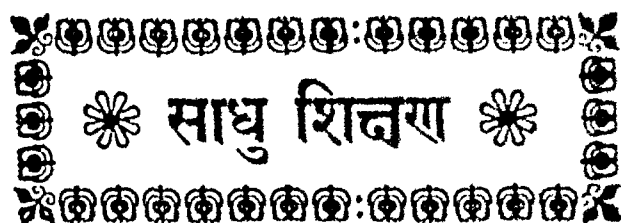
(कृपानाथ विनतड़ी अवधार ए देशी)

मोरा गुरुजी हवे करो आप विहार ॥ टेर ॥
आप गुरु हुं श्राविकाजी केवा नथी अधिकार, तोपण कहुं गुण जाणने जी, सीधो मननो विचार मोरा गुरुजी हवे करो आप विहार ॥ १ ॥ एक स्थान रहता नथी जी मुनि गुणाना भंडार, गाम नगर में विचरता जी, करे नवकलपि विहार ॥ मोरा० ॥ २ ॥ ज्ञान घटे परचे थकी जी, वली बधे अपमान, संचय परचय वधे घणो जी, घटे मुनि जननो मान ॥ मोरा० ॥ ३ ॥ शील तणी संका पड़े जी, बाधे मोहनो जोर, त्याग करी संसारनो जी, दृष्टि ने करो तस ओर ॥ मोरा० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा जी, लाग्या छै

तुम लार, नाश करे संजम तणो जी, अग्नि-
कण तृण भार ॥ मोरा० ॥ ५ ॥ थोड़ो पण
घणो मानजो जी, माफ करी अपमान, हुं
अव गुणनी कोथली जी, आप गुणनी खान ॥
मोरा० ॥ ६ ॥ गुरु कहे सुण श्राविका जी थारी
सफल जवान, तें सूताने जगाड़ीयोजी, मान
प्रभुजी आण, हवे जल्दी करसुं आज
विहार ॥ ७ ॥ धन धन ते नर नारी ने जी, जे
साचा करे वखाण आत्म लक्ष्मी पद वरेजी,
वल्लभ हरष अमान, हवे जल्दी करसुं
आज विहार ॥ ८ ॥

॥ इति साधु शिक्षण समाप्तम् ॥
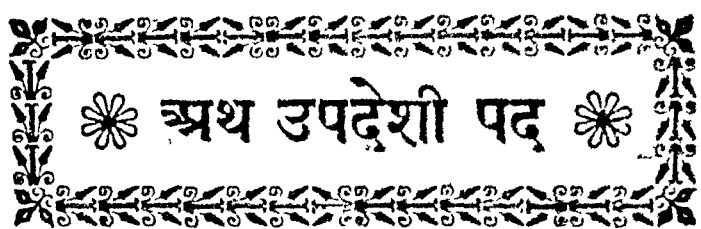
अथ उपदेशी पद

चालो चालो चतुरनर नीचा झांक झांकने, ॥ ए टेर ॥ लीलण फूलण और लीलोती, कीड़ीयां मकोड़ीयांको टाल टालने ॥ चालो० ॥ १ ॥ और भी चवदे जीव ठीकाणे, उसका भी रखो खूब ख्याल ख्याल में ॥ चालो० ॥ २ ॥ किसी जीवको नहीं रे सताना चढ़ता प्रणाम राखो तार तारके ॥ चालो० ॥ ३ ॥ बदला किया सो देना पड़ेगा, मैं भी चेताउं हेला पाड़ पाड़ के ॥ चालो० ॥ ४ ॥ गुरु नथ-मलजी चोथ मुनिका केणा, होले होले चालो दया पाल पालके । धीमा धीमा चालो जयणा राख राखने ॥ चालो० ॥ ५ ॥

॥ इति उपदेशी पद समाप्तम् ॥

—:❀:—

अथ एलापुत्र की सज्झाय

नाम एलापुत्र जाणीये, धनदत्त सेठरो पुत। नटवी देखीरे मोहियो नहीं राख्यो घर तणो सुत॥ कर्म न छूटे रे प्राणीयां॥१॥ ए आंकड़ी॥ कोईक पूरव नेह विकार, निज कुल छांडी रे नट थयो। न आणी शर्म लिगार॥ कर्म० ॥ २ ॥ आप कमाया रे कर्मडा, दीजे केहने रे दोप। कर्म विपाक भुगत्या विना, नहीं होवे जीवने मोच ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ नट-वर आयोरे नांचवा, ऊंचो वांस विशेप। तिहां राय जोवाने आवीयो, मिलीया लोक अनेक ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ सेठ कुंवर पण तिहां आवीयो, जोयो नटवी नो रूप। पूरव नेह जो जागीयो, लाग्यो वचन अनूप ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ नाटकने नारी निरखतो, उपज्यो हर्प अपार। दान मान

देई करी, पहुंच्यो घर मझार ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ महलां जाईने रे पोढीयो, मन आर्त अधिक अपार । जोर कोई चाले नहीं, चित्तमें चिंतवे कुंवार ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ भोजन की विरीया हुई, जननी जोवे रे बाट । अजहुं न आयो रे न्हानडो, लाग्यो मन उचाट ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ माता दासी परते यों कहे, जाय जोवो नगर मझार । सोधी ने लावो कुंवर ने, ज्युं होय हिवडै हर्ष अपार ॥ कर्म० ॥ ९ ॥ दासी महलां में आयके, लागी कुंवरके पाय । भोजन की विरीया हुई, करो भोजन चित्त लाय ॥ कर्म० ॥ १० ॥ एक बे वार बुलावीयो, बोले नहीं रे लिगार । फिर दासी माता पे आयके, नाखती आंसुडे री धार ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ काम धाम छोडी करी, माता आई कुंवरने पास । थाने काई मन चिन्ता उपनी, थे कहो कुंवर हुलास ॥ कर्म० ॥ १२ ॥ हाथ जोड़ कुंवर करतो

विनति, लाग्यो माता ने पाय । आज सुणो मुझ मायड़ी, जो आवे तुझ दाय ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ नाटक देखने रे में गयो, देखीयो नटवी रूप जो सार । वह मुझने परणाय दो, म्हारे मन राग अपार ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ माता तेहने रे समझावती, सुण सुण म्हारा अंग जात । नटवी साथे जांवतां, लाजे मायने तात ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ पिता तेहने समझावलो, सुण सुण प्यारा पुत । ब्याहुं रंभा रे सारखी, इससे अधिक स्वरूप ॥ कर्म० ॥ १६ ॥ स्त्री तेहनी समझावती, सुण सुण वालम शीख । थोड़ा सुखांरे कारणे, मती लगावो कुल लीख ॥ कर्म० ॥ १७ ॥ समझायो समझे नहीं, मिलीयो कुटुंब परीवार । बात न मानी जी न्हानड़े, पूरव कर्म विकार ॥ कर्म० ॥ १८ ॥ सेठजी घरथी चालीयो, आयो न वाने पास । या पुत्री तुम्हारी दीजिए, मुझ मन पूरोजी

आस ॥ कर्म० ॥ १६ ॥ मणि माणक मोती घणा, हीरा लाल जवहार। तुल तोलीने रे लीजीए ढील न करो रे लिगार ॥ कर्म० ॥ २० ॥ कर जोड़ी नटवो कहे, सेठजी सुणो मुझ बात। अन्य जात न देवां नहीं, देस्यां अपनी जात ॥ कर्म० ॥ २१ ॥ नट बचन सेठजी सांभल्यो, जाने लागी शस्त्र नी धार। कुलमें कपुत जो उपन्यो, तो वचन कह्या निरधार ॥ कर्म० ॥ २२ ॥ फिर सेठ इम बोलीयो, सुण सुण नटवा मेरी बात। पुत्री तुम्हारी निरखके, मुझ पुत्र करे घात ॥ कर्म० ॥ २३ ॥ कर जोड़ी नटवो कहे, सुणो सेठ अरदास। भोजन हम घर जीमवे, कुंवर रहे हमारे जी पास ॥ कर्म० ॥ २४ ॥ हम साथ हिल मिल रहे, नाटक सिखे चित्तलाय। मुझ मन हुवे जी मानतो, तो पुत्री देऊं परणाय ॥ कर्म० ॥ २५ ॥ नट वचन सांभल आवीयो, कहे कुंवरने समझाय। बात

कुंवर पितानी सांभली, हिवड़ै हरषित थाय॥ कर्म०॥२६॥ मात पिता रे समझावीया, अवर कुटुंब परीवार। बात न मानीजी कुंवरने, मोह कर्म दुःख दाय॥ कर्म०॥२७॥ मणि माणक मोती तज्या, हीरा लाल जवहार। कोड़ारा धन छोड के, गयो नटवा रे लार॥ कर्म०॥२८॥ कर्म थकी कोई छूटे नहीं, कर्म महा रिपु जोर। नटवी रे घर जाय वस्यो, छोड्यां लाख क्रोड़॥ कर्म०॥२९॥ माता तेहनी रे रोवती, नैना नीर झराय। पुत्र बहुत दुखां कर पालीयो, अब क्यो चाल्यो छिटकाय॥ कर्म०॥३०॥ कर जोड़ी कामण भणे, कंत सुणो मन लाय। तुम चाल्यां संग नटवी तणे, हम कीस सरणे जाय॥ कर्म०॥३१॥ घर सब विध छिटकाय ने, और कुटुंब परीवार। कह्यो पुत्र मान्यो नहीं, सब छांड़

दियो निरधार ॥ कर्म० ॥ ३२ ॥ कांधे लीधो रे वांसड़ो, नटवो लीधी जी लार । तात मात नो मोह आण्यो नहीं, भुरे सगलो परीवार ॥ कर्म० ॥ ३३ ॥ फिर नटवो ईम बोलीयो, सुणो कुंवर मन लाय । धन कमाई ने लावस्यो, तो पुत्री देसुं परणाय ॥ कर्म० ३४ ॥ नहीं तरतो व्याहुं नहीं, करजो कोड़ उपाय । कुटुंब परीवार सब लजावसो, नहीं घर पाछो जी जाय ॥ कर्म० ॥ ३५ ॥ बारां वरस तिहां वित गया, रहता नटवी के साथ । नाटक चेटक सीखीया, हुआ सारण धार ॥ कर्म० ॥ ३६ ॥ एक पुर आव्यो रे नांचवा, ऊंचो वांस विशेष । तिहां राय आव्यो रे जोववा, मिलीया लोक अनेक ॥ कर्म० ॥ ३७ ॥ दोय पग पेहेरी रे पावड़ी, वांस चढ्यो गज गेल । निराधार ऊपर नांचतो, खेले नया नया खेल ॥ कर्म० ॥ ३८ ॥

ढोल वजावे रे नटवी, गावे किन्नर साद। पाय तले घुघरा घम घमे, गाजे अम्बर नाद ॥ कर्म० ॥ ३६ ॥ नटवी रंभा रे सारखी, नैना निरखी रे राय। जो अंतेउर में ए रहे, तो जन्म सफल होय जाय ॥ कर्म० ॥ ४० ॥ फिर राजेन्द्र मन चिंतवे, लुवध्यो नटवी ने साथ। जो नट पड़े रे नाच तो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ कर्म० ॥ ४१ ॥ कर्म वसे रे हुं नट हुवो, नाचुं छुं निराधार। मन नही माने रे राय रो, तो कीजै कौन विचार ॥ कर्म० ॥ ४२ ॥ दान न आपे रे भूपति, नट जानी नृप वात। हुं धन वंच्छु रे राय नो, राय वंन्छे मुझ घात ॥ कर्म० ॥ ४३ ॥ दान लेऊं जो हुं रायरो, तो मुझ जीवित सार। युं मन मांहि चित के, चट्यो चोथी वार ॥ कर्म० ॥ ४४ ॥ वहुत गई थोड़ी रही, थोड़ी

थोड़ी वी जाय । ईस थोड़ीके कारणा, क्युं रहा तान चूकाय ॥ कर्म० ॥ ४५ ॥ वांस चढ्यो इम हस करे, देखे आयने लोक । नाटी से नटणी हुई, नट से नटवर होय ॥ कर्म० ॥ ४६ ॥ थाल भरी शुद्ध मोद के, पद-मणी उभी छे द्वार । ल्यो ल्यो केहता लेता नहीं, धन धन निर्लोभी अणगार ॥ कर्म० ॥ ४७ ॥ एम तिहां मुनिवर देखीया, धन धन साधु निराग । धिग् धिग् विषयी जीवने, इम पाम्यो वैराग ॥ कर्म० ॥ ४८ ॥ संवर भावे रे केवली, थयो मुनी कर्म खपाय । केवल महिमा रे सुर करे, लब्धि विजय गुण गाय ॥ कर्म० ॥ ४९ ॥

॥ इति एलापुत्र की सज्झाय समाप्तम् ॥

ये पोलासपुर नृप विजयसेन भूपाला, महाराज कुंवरकी करूं बडाई जी। धन ऐवंता अणगार, नीरमें नाव तिराई जी ॥ ए टेक ॥ राणी श्रीदेवी कूख जन्म जो लीना, महाराज जीन्होंका पुन्य सवाया जी। श्रीत्रिशला दे जीना नंद, विचरतां वागमें आयाजी। गौतम गणधर आज्ञा जिनवरसे मांगी, महाराज आवे वेलाके पारणेजी। निज नगर गोचरी काज, चले भव्यजीव तारणे जी। मारगके मांहि खेल रह्यां ऐवंता, महाराज कुंवर पूछै हुलसाई जी ॥ धन ऐवंता० ॥ १ ॥ तव इन्द्रभूतिजी कहे गौचरी कारण, महाराज आहार निर्दोषण

है राजी । तब कुंवर कहे सुणों आप, चलो महिलांमें लै राजी । मुनि अवसर देखी दिलमें ज्ञान लगायो, महाराज कुंवरजी साथे आया जी । अंगुली ऐवंता पकड़ आज निज महेला लायाजी । तब माता कहे धन भाग जहाज घर आणी, महाराज आहार पाणी वैराई जी ॥ धन ऐवंता० ॥ २ ॥ तब इन्द्र भूतिजी आया बागके मांही, महाराज संग ऐवंता आया जी । श्री त्रिशला दे जीना नंद, तणां वे दर्शन पाया जी । ऐवंता वाणी सुणी आप जिनवरकी, महाराज अति संयम चित्त चाया जी । श्री जिनवर चरणां माय कुंवरने शिश नमाया जी । घर आय कुंवर ईमं कहै सुणी मैं वाणी, महाराज मुझे आज्ञा दो माई जी ॥ धन ऐवंता० ॥ ३ ॥ कुंवर की वाणी सुणकर अचरज कीधो, महाराज बहोत हितकर समझाया जी । नहीं माने बात लगार,

कुंवर दिल संयम लाया जी अति हर्ष भाव ऊच्छव कर दीक्षा लीनी, महाराज प्रभुका चरण भेटीया जी। ए चतुर गति संसार तणां सब दुःख मोटिया जी। वर्षा ऋतुमें मुनि मील कर थंडिले चाल्या, महाराज कुंवर जी है संग मांईजी॥ धन ऐवंता॥४॥ सब और संततो गया दूर जंगलमें, महाराज ऐवंता मारग मांहि जी। पाणीको धोरो जाय रह्यो वहां पाल बणाई जी। थोड़ी वेरामे पाणी आय भराणो, महाराज कुंवर पातरी तिरावे जी। या नाव तरे जल मांहि खुसी हो शब्द सुणावे जी। सब साधु जंगल जई आवतां देख्यां, महाराज अति शका मन मांहि जी॥ धन ऐवंता० ॥५॥ सब ही वृतांत कयो त्रिशलानंदन आगे, महाराज रीत साधुकी नांहि जी। देख्यो ऐवंता समजाय, करे हीलणां सब आई जी। या सुणी बात त्रिशलानंदन ईम फुरमावे, महा-

राज सबीसे कही था वाणी जी । ये चरम शरीरी जीव पंचमी गतिका प्राणी जी । जिनवरकी वाणी सुणकर मन सुलटाया, महाराज सबीने शिश नमाय जी ॥ धन ऐवंता० ॥ ६ ॥ ऐसे मुनिवरका निसि दिन ध्यान लगाना, महाराज आप शिवपुर सुख पाया जी । किया आगम मांहि वखाण, श्री मुखसे फुरमाया जी । ऐवंता मुनिवर हुआ बाल ब्रह्मचारी महाराज ध्यान एक चित्तसे धरना जी । मैं अर्ज करुं कर जोड़ गुरु देवनके चरणां जी । ये नंदरामने जोड़ लावणी गाई महाराज साल अडसटके मांहि जी ॥ धन ऐवंता० ॥ ७ ॥

॥ इति श्री ऐवंताकुंवरकी लावणी समाप्तम् ॥

॥ दोहा ॥

शासन नायक सुरतरु वर्द्धमान सुखकंद ।
प्रणमि कहुं तिणनो चरित सुणतां परमानन्द ॥१॥
समकीत आई जीहांथी भव सत्तावीस मूल ।
पंचकल्याणक वरणवुं आगम वयण कबूल ॥२॥

॥ ढाल पहली ॥

॥ धर्म पावे नो कोई पुन्यवंत पावे ॥ ए देशी ॥

जय जय शासन स्वामी दयाला, परमपति उपगारी जी । नयसार प्रथम भव मांही, उपशम समकित धारी जी ॥ जय० ॥ १ ॥

तिहां थी सुरभव स्थिति क्षय करीने, थयां भर-
तजीका नंदो जी । मीरिची नाम कहाणो तिण
भव, संजम मद स्वच्छंदो जी ॥ जय० ॥ २ ॥
तापसव्रत पाली भव चोथे, लीनो सुर अवतारो
जी । तिहांथी तापस निर्जरा भाव, वली तापस
व्रत धार्यो जी ॥ जय० ॥ ३ ॥ तिहांथी अंबड़
तापस किरिया, वली गया देव विमाने जी ।
तिहांथी तापस सुरपद पाया, तापसना कने
ठाणे जी ॥ जय० ॥ ४ ॥ ए सोलां भव मोटा
करीने, रूलीयो बहु संसार जी । विश्वभूति
भवे करे नीयाणो, तिहांथी सुर अवतारो जी ॥
जय० ॥ ५ ॥ उगणीसमें भवे हरिपद पाया,
नामे त्रिपृष्ठ कहाणो जी । सातमी पृथ्वी नीकली
तिहांथी, सिंह तणो भव जाणोजी ॥ जय०
॥ ६ ॥ नरक गया तिहांथी कर्मावश, चक्रवर्ती
पद पाया जी । संजम पाल्यो कोडीवर्ष लगे,
अंते अणसण ठाया जी ॥ जय० ॥ ७॥ तिहांथी

सातमें स्वर्ग सिधाया, चोविसमें भव मांही जी। तिहांथी पचीसमां भव मांही, हुवा नंद महाराय जी ॥ जय० ॥ ८ ॥ संजम लेकर तप आदरीओ, मास मास तप ठाया जी। एकसठ सहस्स ने लाख इग्यारा, दोसे अधिक वखाणा जी ॥ जय० ॥ ६ ॥ वीस बोल सेवन करी बांध्यो, गोत्र तीर्थंकर नामो जी। तिहांथी दशमें स्वर्ग सिधाया, वीस सागर स्थिति ठामो जी ॥ जय० ॥ १० ॥ तिहांथी भव स्थिति चय करी स्वामी, मास अषाढ मजारो जी। शुक्ल पक्ष छठ मध्यनी सामे, फाल्गुणी उत्तरा विचारो जी ॥ जय० ॥ ११॥ क्षत्री कुल सिद्धारथ राजा, त्रिशलादे राणी सुं जाणो जी। चउदे सुपना देईने उपना, पुन्य तपो परमाणो जी ॥ जय० ॥ १२ ॥ चैत सुदि तेरस आध रयणी, जनम्यां अंतरजामी जी। चोसठ इन्द्र मीली महोच्छव करके, मेल गया शिर नाजी जी ॥ जय०

॥ १३ ॥ सिद्धार्थ नृप महोच्छव कीधो, निज सहु जाति जिमाईजी। नाम दियो श्रीवर्द्धमान, दिन दिन अधिक बढाई जी ॥ जय० ॥ १४ ॥ तीस वरस गृहवासमें वसीयो, पुत्री एकज जाणो जी। मात पिता पोहता सुरलोके, अभिग्रह ताम पुराणो जी ॥ जय० ॥ १५ ॥ वरसी दान दियो नित्य साहिब, भाव संजमका आया जी। तिलोक ऋषि कहे पहेली ढालमें भव सत्तावीस दरसावीया जी ॥ जय० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

मिगशिर वदी दशमी तिथि छठ तपस्या प्रभु धार।
एकाकी साहस पणे लीनो संजम भार ॥ १ ॥

॥ ढाल दूजी ॥

हमीरीया की ॥ एदेशी ॥

धन्य धन्य त्रिशला नंद जी, सिद्धार्थ कुल-चंद जिनेश्वर। तप तप्यां प्रभु आकरो, तोड्यां कर्म ना वृन्द जिनेश्वर॥ धन्य०॥ १॥ नव चौमासी तप कियो, एक करी छवमास जिनेश्वर। अभिग्रह दूजी छवमासी में, तेरा बोल विमास जिनेश्वर॥ धन्य०॥ २॥ एकसो पचोत्तर दिवसमें, चंदनबाला हाथ जिनेश्वर। जोग मिल्यो कोसंबी में, पारणो कियो जगनाथ जिनेश्वर॥ धन्य०॥ ३॥ मास खमण द्वादश किया, पख बहोत्तर कीध जिनेश्वर। आसन विविध प्रकार नां, सुतरमें सहु विध जिनेश्वर। धन्य०॥ ४॥ अढाई मासी तीन मासी दो, दोय मासी षट् जाण जिनेश्वर। देढ मासी बली दो करी, दोसे गुणतीस बेला मान जिने-

श्वर ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ भद्र महाभद्र शिवभद्र तपे, सोलह दिन इम जोय जिनेश्वर। भिक्षु पडिमा अष्टम तणी, कीनी द्वादश सोय जिनेश्वर ॥ धन्य० ॥६॥ साडी इग्यारा वर्षने उपरे, पच्चीस दिन तपधार जिनेश्वर। एक कम साडा तीनसे पारणो तार्या दातार जिनेश्वर ॥ धन्य० ॥७॥ देश अनारज विचरीया, सह्यां परिसह कठोर जिनेश्वर। कुत्ता लगाया डरामणा, बंध वधण कह्यां चोर ॥ धन्य० ॥८॥ श्रवणे खीला खोडीया, पग-पर रांधी खीर जिनेश्वर। डंक दियो चंडकोसिये, रह्या अचल गिरि धीर जिनेश्वर ॥धन्य ॥९॥ अभ-व्य संगमो देवता, आणी दुष्ट परिणाम जिनेश्वर। छमास लगे दुःख दिओ, राखी समता खाम जिनेश्वर ॥ ध० ॥१० ॥ नर सुर तिर्यंच नां सहु, सह्यां परिसह सर्व जिनेश्वर। शम दम उपशम भावसुं, रंच न आणयो गर्व जिनेश्वर ॥धन्य०॥ ॥ ११ ॥ चउविहार तपस्या सहु, निंद्रा मुहूर्त्त

एक जिनेश्वर। तिण मांही सपनां दश लह्यां गो दुज आसन टेक जिनेश्वर ॥ धन्य ॥ १२॥ धन्य धीरज प्रभुजी तणी, धन करणी करतुत जिनेश्वर। धन्य कुल जिहां प्रभु जनमीया, धन्य जाया एहवा पुत जिनेश्वर ॥ धन्य ॥ १३ ॥ मायडी जायो एहवो, दूजो नहीं संसार जिनेश्वर। क्षमा शूरा अरिहंतजी उपमा सूत्र मझार जिनेश्वर ॥ धन्य० ॥ १४ ॥ करम भरम चक चूरीया, दूजी ढाल मझार जिनेश्वर। तिलोक ऋषि कहे धन्य प्रभु, प्रणमुं वारंवार जिनेश्वर ॥ ध० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

शुक्ल दशमी वैशाखनी दिन उगत परिमाण।
वीर जिनेश्वर पामीया निर्मल केवल नाण ॥१॥

— ❀ —

॥ ढाल तीजी ॥

कर्म समो नहीं कोई ॥ एदेशी ॥

जाणी लोकालोक की रचना, षट् द्रव्य-गुण पर जायो। चोतीस अतिसय पेंतीस वाणी, जग तारक जिनरायो रे भविका श्रीजिन पर उपगारी, तार्या बहु नरनारी रे ॥ भ० ॥ १ ॥ चोसठ इन्द्र आया तिण अवसर त्रिगड़ो रच्यो तिण वारे। फिटक सिंहासन उपर विराजे, अमृत वेण उचारे रे। भविका श्री० ॥ २ ॥ मध्य पावापुरी में तिण वेला, यज्ञ रचाणो छे भारी। बहु पंडितो नो थयो समागम, जावे सूर गगन बिहारी रे। भविका श्री० ॥ ३॥ महिमा देखी मान विशेषे, पंचसया परिवार रे। इन्द्रभूति आया प्रभु पे, संशय गर्व नीवारी रे। भविका श्री० ॥४॥ संयम ले गणधर पद लीनो, अग्नि भूति

चल आवे। ते पिण संशय दूर भयाजी, संजमसुं चित्त लावे रे। भविका० ॥ ५ ॥ इम इग्यारा गणधर रचना, चमालीससे संख्या जाणो। एकज दिन में लीनी दीक्षा, गुण-रत्नागर खाणो रे ॥ भविका श्री० ॥ ६ ॥ तीन से चउदापूर्व धारक, तेरासे ऋषि ओहिनाणी। पांच से मनःपर्यव मुनि जाणो, बोले यथारथ वाणी रे ॥ भविका श्री० ॥ ७ ॥ सातसे वैक्रिय लब्धिना धारक, चारसे चर्चा-वादी। आठसे अनुत्तर विमाने विराज्या, सातसे ऋषि शिव साधी रे ॥ भविका श्री० ॥ ८ ॥ चउदा सहस्र ऋषि संपदा सारी, ज्येष्ठ गौतम गणधारी। चंदन बालादिक सहस छत्तीसी, थई श्रमणी सु विचारी रे ॥ भविका श्री० ॥ ६ ॥ एक लाख गुणसठ सहस श्रावक, आणंदादिक व्रतधारी। अठारा सहस्र तीन लाख श्राविका, सुलसादिक अधिकारी रे॥

भविका श्री० ॥ १० ॥ विचर्या गाम नगर पुर पाटण, तार्या बहु नरनारी । प्रथम चोमासो अस्थिगामसें, दूजो प्रष्ठ चंपा मझारी रे ॥ ॥ भविका श्री० ॥ ११ ॥ तीजो चंपा चतुर सावत्थी, विशाला वाणीय कह्यां वारा । चउदा चोमासा राजगृहीमें, मथुरा षट् सारा रे ॥ भविका श्री० ॥ १२॥ भद्दिलपुरीमें दाय दीपाया आठ तीस एम जाणो । एक आंबिलका एक सावत्थी, एक अनारज थाणो रे ॥ भविका श्री० ॥ १३ ॥ तार्या बहु भवियण नरनारी, विचरतां श्रीजिनराया । अनुक्रमे आया पावा-पुरीमें, हस्तिपाल जिहां राया रे ॥ भविका श्री० ॥ १४ ॥ कर जोड़ी प्रभुसे करे अर्जी, रथ शालाने मझारो । अबके चोमासो इहां करो प्रभुजी, विनति ए अवधारो रे ॥ भविका श्री० ॥ १५ ॥ क्षेत्र फरसना जाणी दयानिधि, किनो चरम चोमासो । धर्म दिवाकर धर्म दीपायो,

पूरी भविजन आसो रे ॥ भविका श्री० तिलोक ऋषि कहे तीजी ढाले, धन्य धन्य अंतरजामी, गुण रत्नाकर परम उपगारी, वंदु नित शिरनामी रे ॥ भविका श्री० ॥ १७॥

—❀—

॥ दोहा ॥

चोथो मास वरसाद नो, पच्च सातमो ठाण।
तेरस आधी रात सु, अणसण धार्यो जाण ॥१॥
देश अठारनां भूपति, छठ तप पोपध कीध।
सोल प्रहर लग देशना, स्वामी निरंतर दीध ॥२॥
सूत्र विपाकज उचर्यो, उत्तराध्ययन छत्तीस।
भवि जीवां हित कारणे, पूरी एह जगीस ॥३॥
गौतम मोहने टालवा, जो इ अवसर सार।
पर उपगारी परम गुरु, शिव सुखना दातार ॥४॥
कार्तिक वदि अमावस्यां, कहे गौतमसु स्वामी।
देवशर्मा विप्र बोधवा, जावो तिणने ठाम ॥५॥

सहु तुमे टालता जी, प्रत्यक्ष दीनदयाल जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥ १० ॥ तुम दर्शन अविलोकता जी, रोम रोम उलशंत। हिवे दर्शन किहां आपना जी, भय भंजन भगवंत जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥ ११ ॥ तुम वाणी अमृत समीजी साकर दुध सवाय। हिवे किणनी सुणसुं गुरांजी, जगतारक जिनराज जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥ १२ ॥ वली मनमांहि चिंतवेजी, धिक धिक मोहिनी कर्म। धन धन श्री जिनरायने जी, साध्यो आतम धर्म जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥१३॥ तुच्छ कर्म प्रभावथी जी, रुलीयो बहु चउगति माय। एका कि तिहुं काल में जी, ए जिनशासन राय जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥१४॥ वीतराग साचा प्रभु जी, शंका नहीं लिगार। तूं किम भूल्यो भर्म में जी शमदम उपशम धार जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥१५॥ ध्यान शुक्ल तिहां ध्याइयो जी, दीनां कर्म

खपाय। केवल ज्ञान प्रगट थयो जी, आरत रही नही काय जिनेश्वर॥ हिवे०॥ १६॥ केवल महोच्छव सुरपति कियो जी, निर्वाण पिण तिण ठाम। चार तीर्थ मीली थापीया जी, पाटे सुधर्मा स्वाम जिनेश्वर॥ हिवे० ॥१७॥ शिष्य थया जंबूजीसा जी, राते परणीया नार। कोडी नीनाणुं त्यागने जी, दिन ऊगा व्रत धार जिनेश्वर॥ हिवे०॥ १८॥ तीन पाट थयां केवली जी, श्रीजिन आगम वयण। जे धारे भवि प्राणियां जी, उघड अंतर नयण जिनेश्वर॥ हिवे०॥ १६॥ दिपायो जिन धर्मने जी, पूर्व वर्ष हजार। हिवे तो सूत्र व्यवहार छे जी, हमणा परम आधार जिनेश्वर॥ हिवे प्रभु वचन आधार॥ एटेक ॥२०॥ इण परमाणे चालसी जी, टालसी आतम दोष। तो भवि प्राणी जीवडां जो, अनुक्रमे जासी मोक्ष जिनेश्वर॥ हिवे प्रभु०

तहत्ति करी तिहां संचर्या, पिछे दीन दयाल ।
जाय विराज्या मोक्षमें, अब फेरा दिया टाल ॥६॥

—:o:—

॥ ढाल चौथी ॥

क्षमावंत जोय भगवंतनो रे ज्ञान ॥ ए देशी ॥

श्रीजिन शिवपुर संचर्याजी, थयो जगमें अंधकार । गौतम स्वामी जाणीयो जी, आरत आइ अपार जिनेश्वर ॥ हिवे मुज कवण आधार ॥ ए टेक ॥ धसीकी पड्यां धरणी तदा जी, शुद्धि न रही लिगार । धिक धिक मोहिनी कर्मने जी, देखो कर्म विकार, जिनेश्वर ॥ हिवे मुज कवण आधार ॥ २ ॥ एक मुहूर्त्त ने आंतरे जी, आइ चेतना ताम । मोह वसे करे झुरणा जी, छोड़ी गया केम स्वाम जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥ ३ ॥ अंतेवासी हुं आपको जी, रहे तो

जिम तन छाय। छेले समे कियो तुम जुगतुं नाय जिनेश्वर॥ हिवे० ॥ ४ ॥ पलो नहीं झालतो जी, जाता मोक्ष मझार। जाग्या पण नहीं रोकतो जी, किम आयो तुम खार जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥ ५ ॥ वाल ज्युं अड्डो न माड़तो जी, भाग न मांगतो ज्ञान। अणख न करतो आपसुंजी, लाग्यो तुमसुं ध्यान जिनेश्वर॥ हिवे० ॥ ६ ॥ कारमो राग होतो नहीं जी, तुमसुं महारो नाथ। तुम सम मोहरे दूसरी जी, होती नहीं आथ जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥ ७ ॥ एक पखी जे प्रीतडी जी, पार पड़े नहीं तेह। आ जाणी परतखमें जी, इणमें नहीं संदेह जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥ ८॥ गोयम गोयम नाम ले जी, कुण बोलावसी मोय। कुण कने लेस्युं आज्ञा जी, चिंता मुजने सोय जिनेश्वर ॥ हिवे० ॥ ६ ॥ जो मुज मन शङ्का हुंती जी, पुछता सहु ततकाल। अम

॥ २१ ॥ संवत उगणीसे जाणीये जी, तेतीस वर्ष मजार। दीपमाला दिने ए कह्यो जी, तिलोक ऋषि सुविचार जिनेश्वर ॥ हिवे प्रभु० ॥ २२ ॥ अहमदनगर देश दक्षिणे जी, सुखे रह्यां चोमास। भणसे गुणसे भावसु जी, लेहेशे शिव सुख वास जिनेश्वर ॥ हिवे प्रभु० ॥ २३ ॥

॥ कलश ॥

समकित पाया भव घटाया सत्तावीस थूल जाणीया, तेह वरणव्या श्रावक हेते चार ढाल वखाणीया। शासन नायक सुख दायक प्रणमुं वारंवारए, तिलोक ऋषि कहे नाथ अरजो करजो भव नीस्तारए, प्रभु दीजो जय जयकारए ॥ १ ॥

॥ इति ढाल चौथा समाप्तम् ॥

अथ चतुर्विंशति जिन पच्चीसी
❀ प्रारंभ ❀

॥ दोहा ॥

सुरतरु जिन समरु सदा, चार वीस जिनचंद ।
गिरवारां गुण गायवा, उपनो मन आणंद ॥१॥
प्रणमुं चउवीसे प्रेमसुं, सखरो अर्थ सुजाण ।
आपण पर उपगारने करवा कोड कल्याण ॥२॥

—.❀.—

॥ सवैया ३१ सा ॥

नाभिमरुदेव्या नंद, छोड़ दिया सहु फंद, जोग लियो जिणचंद, ममता मिटाई है। करी ने कर्म हांण, लियो है अनंत नाण, भविक कमल

आगा, कुमति उडाई है ॥ तिरण तारण स्वाम, पाम्यां शिवपुर धाम, तिहुं लोक ठाम ठाम, कीरत सवाई है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, आदि अरिहंत ध्यान, महासुख दाई है ॥ १ ॥

छोड़ीने सर्व आथ, जोग लियो जगनाथ, शिवने चलायो साथ, अमीरस वाण है। सुण सुण राय राण, साचो मत लियो जाण, निस दिन जिन आण, करी परमाण है ॥ वालियो कर्म वंश, राख्यो नहीं एक अंश, उत्तम परम-हंस, पाम्या निरवाण है। भणे मुनि चद्रमान, सुणो हो विवेकवान, अजितजिणंद ध्यान, महा सुख खाण है ॥ २ ॥

वमण आहार जिम, अंगनाने गिणी एम, ततक्षण कियो नेम, तज्यां राजकाज है। घातियां करम धाय, केवली ते ज्ञान पाय। उपकारी जिनराय, बांधी धर्म ज्याज है। जीव

घणां किया दृढ़, क्षपक की श्रेणी चढ, पामियां मुगति गढ, अविचल राज है॥ भणे मुनी चंद्रभान, सुणो हो विवेकवान, संभव जिनेंद्र ध्यान, अखंड जहाज है ॥ ३ ॥

देखीने अधिक रूप, परशंसे सुर भूप, करी चित्त धर चूप, वार वार वंदणं। जगनी अस्थिर जाण, सुपन संजोरो जाण, भवहर भगवान, तोड्या मोह फंदणं ॥ अखंड चारित्र पाल, मोक्ष गया कर्म टाल, शास्वता सदाई काल, लिया सुख कंदण। भणे मुनि चंद्रभान, सुणो हो विवेकवान, अंगमें उलट आण, वंदो अभिनंदनं ॥ ४ ॥

सुमति सुमति धार, कुमति ने देई टार, सुमति भोजन सार, जीम्यां गुण पात है। सुमति में रह्या झूल, सुमतिरा पेर्यां फूल, सुमति भूषण मूल, दीठां दुःख जात है॥ सुमति दातार सूर, अन्धकार कियो दूर, सुमति

रा रिणातूर, वाजे दिनरात है। भणो मुनी चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, सुमति रा किया ध्यान, सुमताइ आते है ॥ ५ ॥

हिंगलु वरण गात, लीलामणि दिन रात, जोग लियो जगतात, तजी राज रिद्ध है। तप जप खप कर, षट मास जिनवर, पाम्यां है केवल वर, हुवा परसिद्ध है ॥ सुरनर इन्द्र पास, कियो ज्ञान परकाश, कलेश करम नाश, करी थया सिद्ध है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, पद्म जिनेन्द्र ध्यान, किया नवनिद्ध है ॥ ६ ॥

लोकांतिक सुर आय, प्रतिबोध्या जिनराय, बैठा किम घरमाय, जगत बबूर है। काम भोग तजी कीच, मार लियो मोहनीच, बारे पुरुषदा वीच, गाजे ज्युं शार्दुल है ॥ राव रंक पर मुक, काहुकी न राखे रुख, शिवपुर पाम्यां

सुख, साश्वता अतुल है । भणे मुनि चंद्रभान, सुणो हो विवेकवान, सुपार्श्व जिणंद ध्यान, महा सुख मूल है ॥ ७ ॥

चंदसी वरण देह, लागे दीठां धर्म नेह, उत्तम चारित्र लेह, तज्यां लोभ वैरी है । मार लिया मोह पाप, भारी तेज परताप, तीनु ही भवन आप, निज आण फेरी है । सुरनर करे सेव, रात दिन नितमेव, हुवा निरंजन देव, वाजी जश भेरी है । भणे मुनि चंद्रभान, सुणो हो विवेकवान, चंद्रप्रभु जिन ध्यान. मुगतिकी सेरी है ॥ ८ ॥

सुगरीव रायनंद देही फूल अरविन्द, परहरे सहु फंद, थया अणगार है। करणी करीने हद, मार लियो, मोह मद, पामिया केवल पद, जगत आधार है ॥ उपकार कियो अति, मेठ दियो मिथ्यामति. पामि अविचल गति, सुखां को न पार है । भणे मुनि चंद्-

भान, सुणो हो विवेकवान; सुविधि जिणंद ध्यान, महासुख कार है ॥ ९ ॥

दाघ ज्वर रोग तात, गयो मात तणे हात, नाम द्यो शीतल नाथ, दियो माय वाप है। जगत दुखांसु डर, मनमें वैराग धर, काम भोग पर हर, तज्यां सब पाप है ॥ भलो उपदेश दीध, जगत शीतल कीध, अविचलगढ सिद्ध, मेटिया संताप है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, शीतल जिणंद ध्यान, टाले भव ताप है ॥ १० ॥

ज्ञान घोड़े भगवान, चढ्या बहु बलवान, शील सैना सावधान, समगत शेल है। धीरज कटारी धार, तपस्या की तरवार, गुणांकी गुरजसार, पाप दिया पेल है ॥ जीत हुई जिन राय, सुरनर लाग्यां पाय, मुगत विराज्या जाय, सदा सुख रेल है। भणे मुनि चन्द्रमान सुणो हो विवेकवान श्रेयांस जिणंद ध्यान, आपे सखवेल है ॥ ११ ॥

वासु पूज्य जाग्रापूत, शिवपुर ढिया सूत, ओपे घणां अदभुत, संवरी कशाय है। अठलख दशवास, लीलामणी गृहवास, परिहरे मोहपास तजी लोभ लाय है॥ धरीने शुकल ध्यान, पाम्या पद निरवाण, सुरनर राय राण, वंदे शिर नाय है। भणे मुनि चन्द्रभान सुणो हो विवेकवान, वासुपूज्य जिन ध्यान, महा सुख-दाई है॥ १२॥

विमल विमल वेण अमल कमल नेण, सकल जीवारा सेण, दीठा जागे प्रेम है। समतासु रहा सोभ, लाभे नहीं मूल लोभ, साथर ज्युं आण खोभ, निरमल नेम है॥ सुरनर काज सार, जनम मरण जार, निरमल निराकार. लया सुख पेम है। भणे मुनि चन्द्रभान सुणो हो विवेकवान, विमल विमलवेण चिन्तामणि जेम है॥ १३॥

अयोध्यापुरी ना ईश, आयुः वर्ष लखतीस, जोग लियो जगदीश दया दिल आणी है। काम कुंभ जेम स्वाम, सारिया जगत काम, जीव घणा ठाम ठाम, किया गुण खाणी है ॥ सुखदाई सुरतरु, पारस जिम गुण करु, अजर अमरपुर थया निरवाणी है। भणे मुनि चंद्र-भान, सुणो हो विवेकवान, अनंत केवल ज्ञान, शिवकी निशाणी है ॥ १४ ॥

धरम धरम धार, कीधां घणा उपकार, उप-देश दियो सार, मोटा किरपाल है। उघाड्या अंतर नेत्र, किया घणा सावचेत, पर उपकार हेत बांधी धर्मपाल है ॥ धर्मको व्यापार कीध, अनुपम चीज लीध, तिहुं लोक परसिद्ध, कीरति विशाल है। भणे मुनि चन्द्रभान, सुणो हो विवेकवान, धरम जिणंद ध्यान, काटे भव जाल है ॥ १५ ॥

पट् खंड शिरदार, चोसठ हजार नार, हयगय परिवार, अखूट भंडार है। अनुंतर काम भोग आंय मिल्यो पुन्य जोग, खमा खमा करे लोग, कीरति अपार है ॥ ऐसी ऋद्धि तणा ठाट, तजी लियो शिव वाट, आठुं ही करम काट, थया सिद्ध सार है। चंद्र भान चित्त धार, शीख कही हितकार, शांतिनाथ तंतसार, जप्यां जै जै कार है ॥ १६ ॥

चउदे रतन सार, अद्भुत गुणाकार, नर वर आज्ञाकार, बत्तीस हजार है। षोडश हजार सुर, आज्ञाकारी तंतपर, षटखंड नरवर, सारा शिरदार है॥ नाटक बत्तीस विध, ऋद्धि सिद्धि नवनिध, सऊ छोड़ी हुवा सिद्ध, लाया सुख सार है। भणे मुनि चंद्रभान सुणो हो विवेकवान, कुंथु नाथ तंतसार, तिरत संसार है ॥ १७ ॥

चउरासी लख वाज, रथ रुडा गजराज, पाय दल सर्व साज, छिंनवे करोड है। छिनवे करोड गांव, चोसठ हजार वाम, पासवान दुणी ताम, रहे कर जोड़ है॥ एसी ऋद्धि तज कर, जोग लियो जिनवर, अजर अमरपुर गया कर्म तोड़ है। भणे मुनि चंद्रभाण, सुणो हो विवेकवान, अरिनाम तंतसार, कटे कर्म क्रोड है॥१८॥

विरगत रया आप, जगको न लागो पाप, परहर सउत्ताप, बैठा धर्म पोत है। दयावंत खंत दंत, गुणां तणो नहीं अंत, उपगारी अरिहंत, टाली मिथ्या छोड है॥ घट मांहि ज्ञान घाल, काटिया कर्म साल, धर्ममें रह्यां लाल, लई शिव जोत है। भणे मुनि चन्द्रभाण, सुणो हो विवेकवान, मल्लिजिन किया ध्यान, निरमल होत है॥ १९॥

वीसमा जिणंदराय, सांवली सुरत काय, चारित्र सुं चित्त लाय, तज्या राज ठाठ है॥ आरिस्या ज्युं यथातथ जिनमत परमत, उपदिशा जिनपथ, माया तणा मेट है॥ पातिक पडल हर, घटमें उद्योत कर, जीव घणां जिनवर, घाल्यां शिव वाट है। भणे मुनि चंद्रभान सुणो हो विवेकवान, मुनि सुव्रत ध्यान सेती मिटे कर्म काट है॥ २०॥

राजऋद्धि परिहर जोग लियो जिनवर, डोले नहीं तिल भर, मेरु ज्युं अडिग है। मिथ्यामत अति घोर, फेल रह्यो चिहुं ओर, ताही कुं हरण जोर निरमल स्वर्ग है। थोपिया तिरथ च्यार तार्या घणां नरनार, शिवपुर पाम्यां सार, सुखांको न थाग है। भणे मुनि चन्द्रभान सुणो हो विवेकवान, नमिजिन किया ध्यान, नासे कर्म ढंग है॥ २१॥

समुद्र विजय नन्द, बावीसमा जिनचंद, सोहत सुरत इंद, बाल ब्रह्मचारी है। पशु वेंण सुणी कान, ततक्षण बोली जान, बार बार कह्यो कान, ऐसी क्युं विचारी है॥ नारी तणो मारे नेम, मुगतिसुं लाग्यो प्रेम, राजमती रिट्ठ-नेम, हुवा जोग धारी है। भणे मुनि चन्द्रभान सुणों हो विवेकवान, नेम प्रभु किया ध्यान, महा सुखकारी है ॥ २२ ॥

नव कर तन मान, सोहत सुरत भान, पट् काया दियो दान, तजी धनराश है। बडभागी वीतराग, गुणां तणो नहीं थाग, जथा तथ जिनमार्ग, कीयो परकाश है। मोक्ष गया कर्म तोड़ जगमें कीरत जोर, सुरनर ठौर ठौर, सुमरत पास है। भणे मुनि चंद्रभान, सुणो हो विवेकवान पार्श्व प्रभु किया ध्यान, शिवपुर वास है ॥ २३ ॥

चोईसमा महावीर, सुरवीर महाधीर, वाणी मीठी दूध खीर, सिद्धारथ नंद है। नागिणीसी नारी जाण, घटमें वैराग्य आण, जोग लियो जग भाण, तज्या मोह फंद है। चवदे हजार संत, तार दिया भगवंत, करमा को करि अंत, पाया सुख फंद है। भणे मुनि चंद्र-भान सुणो हो विवेकवान महावीर किया ध्यान, उपजे आणंद है॥ २४॥

तीर्थंकर वीस च्यार, गुणां तणो नहीं पार, मेरी बुद्धि अनुसार, किया मैं वखाण है। सवैया पचीस गाया, गुण जगदीश राया, भणे गुण निशदिन करत कल्याण है। संवत अठारे वास, पंचावन माघ मास, शुदी पांचमी फली आस, वार भलो भानु है। भणे मुनि चंद्रभान सुणो हो भविकवान, चोविस जिणंद ध्यान, महा सुख खाण है॥ २५॥

॥ इति चतुर्विंशति जिन पचीसी समाप्तम ॥

॥ अथ मेघरथ राजानो स्तवन प्रारम्भ ॥

॥ देशी ख्याल री रंगरेज रंगीला कांचूतो रंग दे म्हाने केसरया ए चालमें ॥

श्री मेघरथ राजा राख्यो परेवो सरणे भासूं ॥ श्री० ॥ टेर ॥ जंबुदीपरा भरत में स कांइं, जिणपद देश रसाल । मृगावति राणी जनमीयो स कांइं धन मेघरथ दयाल हो ॥ श्री० ॥ १ ॥ एक दिवस पोसा माहीं स कांइं, राय गुणै नवकार । दृढ धरमी दृढ आतमा स कांईं, हिरदे ज्ञान अपार हो ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद्र परसंसा करे स कांइं, भरी सभारे मझार । मेघरथ राजा जाणीयो स कांइं, हिरदे दया अपार हो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दोय मिथ्याती

देवता स कांइ, सरध्या नहीं लगार। राजाने छलवा भणि सकांइ, आया छे ततकार हो॥ श्री०॥ ४॥ एकवणीयो परेवड़ो स कांइ, दूजो पारधी जाण। अति धूजे अति कांपतो स कांइ, जाय पड़ीयो गोदमें आण हो०॥ श्री०॥ ५॥ लारे हुवो पारधी स कांइ, आयो राजाके पास। म्हारा खज म्हांने देवो स कांइ, राम करे अरदास हो॥ श्री०॥ ६॥ लेले रे तूं खांड खजूरां, ले ले दाडिम दाख। लेतूं मेवा-सूंखड़ी स कांइ, थारे दाय आवै सो चाख हो॥ श्री०॥७॥ नहीं लूं खारक खांड खजूरां, नहीं लूं दाडिम दाख, म्हारा खज म्हांनै देवो स कांइ, एम करे अरदास हो॥ श्री०॥ ८॥ रे रे पारधी तूं अछे स कांइ, बोलो वचन विचार। सरणागत आयो किम दीजे, बोले राय तिवार हो॥ श्री०॥ ६॥ अचित वस्तु देउं तने स कांइ, पोखूं थारी काय। सरणागत किम

दीजीये स कांइ, म्हारो छत्रीकुल कहवाय हो ॥ श्री० ॥१०॥ अचित वस्तु नहीं लेउं स कांइ सुणतूं मोरा राय, तोकतराजू तालके स कांइ, आपो अपनी काय हो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इतनी बात राजा सुणी स कांइ, शस्त्र लिया संगाथ। तोकतराजू तोलवा स कांइ, खंडण लागो काय हो ॥ श्री० ॥ १२ ॥ तोक तराजू तोलतां सकांइ, चढ़ गयो सकल शरीर। ढलति दांडी तोलसूं स कांइ, राजा नहीं दिल गिर हो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इतनि वात सूणी राजानी, महलां पड़ी पुकार। राजाको राणी घणी स कांइं, करे विलाप अपार हो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ हाटवाट सूना पड़ा स कांईं, सूना सरवर आज। अति थो मोटो राजवी स कांइ, राय करे अकाज हो श्री० ॥ १५ ॥ रायं मुसद्दी आवीया स कांइ, अरज करे कर जोड़। सुन्दर काया केम खंडाये, सब दुनिया के

मोड़ हो ॥ श्री० ॥ १६ ॥ राय कहे सब लोकने स कांइं, मत करो वृथा झोड़। मांसकाट तन नहीं देउं स कांइं. लागै मोटी खोड़ हो ॥ श्री० ॥ १७ ॥ देव अवध उपयोग सूं स कांईं, जाण्या शुद्ध परणाम। देव रूप परगट कीयो स कांइं, अरज करे सिर नाम हो श्री० ॥ १८॥ कांने कुंडल सोभता स कांइं, माथे मुकट विराज। घूघरीया घमकावता स कांइं, आय नम्या सिरताज हो॥ श्री० ॥ १६ ॥ देव गया निज थानके स कांइं, राय दयारी खाण। गोत तिरथंकर बांधीयो स कांइं, अभय दान परधान हो ॥ श्री ॥ २०॥ संजम ले करणी करी स कांईं, गयास्वारथ सिद्ध मझार। तिहांथी चवि श्री सांतिनाथजी, हुवाछे पदवी धार हो॥ श्री ॥ २१ ॥ लाख वरस नो आउखो सरे, धनुष चालीस काया जाण। तिलोक रिषीजी इम कहे स कांईं,

पाम्या पद निरवाण हो ॥ श्री० ॥ २२ ॥ उन्नीसे उणतीसमें स कांइ, आद फागुण सुध नोम । परतापगढ़ मांही कह्यो स कांईं, उपज्यो दया रस सोम हो ॥ श्री० ॥ २३ ॥

॥ इति मेघरथ राजानो स्तवन समाप्तम् ॥

अथ ऋषभदेवजी की लावणी

शीसनमाके करू रे वीनती, चरणकमल मैं चितलाउं हे जीरेचर० ऋषभ देव महाराज, करो सिद्धकाज, आज मैं जसगाऊं (टेर) अवल हकीगत कहू रे आपकी सरबार्थसिद्धथी चविया, माता कूखे आया, बहोत सुखपाया उदर मैं वासलिया, चवदे सुपना आयारे मातानैं माताका हुलसा जोहिया, गई पतीकै

पास, अर्थ देवो भास, सुनो तुम मेरा पिया, (उड़ावणी) हे अब कहता राजा सुपना भला तो है आया, एहां आया, तुम वहोत खुसीसें रहो हुसी जिनराया, एहां राया, माता मनमें हरख पांमियो जायके मंगल गवाउं ॥ ऋ० १ ॥ शुभ वेला में जन्म लियो प्रभु, इन्द्रादिक मिलकर आये, मेरू परवतपर जाय, देव सव आय, महोच्छव करवाये, आठजातके कलस मंगाके, सुगंधजलसें भरवाये, प्रभुजीका जस-गावें, चमर ढोलावें, प्रभुजीकूं नवाये, (उडा-वणी) हे इंद्राणयां मिलके भगती सें मंगल गावें, एहां गावें, अटाई महोच्छव करके पीछा जावें, एहां जावें, इन्द्र प्रभूजीसें करें वीनती स्वर्ग लोकमें में जाऊं, ॥ ऋ० २॥ कंचन वरणी देह प्रभूकी वृषभ लंछन है सुखदाई, धनुष पांचसें है काया मेरे मन भाया यही है अधि-काई, जुगला धर्म निवारें प्रभुजी कला वहो-

त्तर सिखलाई, वरसी दांन प्रभु दिया, जगमैं जसलिया, फेर दीक्षा पाई, (उडावणी) हे सब देवी देवता दीक्षा महोच्छवमैं आये, एहां आये, हे प्रभुजीके चरनमैं लुल २ सीस नमाये, एहां नमाये, च्यार सहससें लीनी है दीक्षा जिनकूं मैं नित उठ ध्याऊं, ॥ ऋ० ३ ॥ लाख चौरासी पूरब आयू बीस लाख रह्या कँवर पदे, पूर्व लाख दीक्षा पाली, शास्त्रमें चाली, एवं भगवंत वदे; सहस्त्र वरस छदमस्तरया प्रभुवाकी रह्या केवली स्वामी, तीरथ थाप्याचार, भवी हितकार, मोक्ष नगरी पांमी, (उडावणी) हे कहे श्रावड महात्मा प्रभुजीका जसगातै, एहां गातै, हे देवो आवागमण निवार यही हम चातै, एहां चातै, सुखसंपत आपो मेरेकूं आपका दरशण मैं पाऊं ॥ ऋ० ४ ॥

॥ इतिपदं ॥

—:❀:—

कहती है राजुलनार ह्मांरी सहियां है इसडो हठीलो ह्मारो दिलजानी, नेम गये गिरनार सावीरी एक वात मोरी नहीं मानी, (टेर) विधसें जांन वणाय मोरी सहियां है जूनेगढ प्रभू आये हैं, छपन कोड़ जादवकी जोड़ मिल जांन सजाकर लाये हैं, इन्द्रादिक सव साथ ह्मारी स० सखियन मंगल गाये हैं, तरेनरेका वाजा वाजता सुनकर महु हरखाये हैं, (उडावणी) हे अव कहती सखियां सारी रे. हमारो वनड़ो फूल हजारी, हे क्या जानवणी हद भारीरे, जिनकी शोभा लगती प्यारी, हाथी घोड़ा रथ ऊंट ह्मारी सहियां हे. घूम रया चारु कानी॥ नें० १॥ सुणके पशुकी पुकार ह्मारीस० नेमजिनंद कियो

वीचारी, जांनवास्ते लाये पसुकूं भोजन होसी तइयारी, पशुवांकों दिये छोडाय ह्मारी स० छोडदीवी राजुलनारी, तोरणसें रथ फेर प्रभूजी संजमकी दिलमें धारी (उडावणी) हे प्रभु जाय चढै गिरनारी रे वहांपर पंच महाव्रतधारी, हे अब सुणलो वचन हमारेरे, प्रभुजी छोड दियो संसार, करी हसीकी वात ह्मारी स० राजुल होरही दीवानी, ॥ ने० २ ॥ सब सखियां मिल आई ह्मारी स० राजुलदेकूं समभावै, नेम गयो तो जावो वाईजी और वींद तोहे परणावै, जुगमें वींद अनेक ह्मारी स० जोथांरे चितमें चावै, परसनकर मनोगमवरलो यूं सखियां सब वतलावै, (उडावणी) हे जब राजुल यूं फुरमांईरे, ह्मारे और पुरुष सवभाई, हे मैं किसीकूं परणूं नांईरे, ह्मारे एक बींद जादुराई सुण राजुलकी बात ह्मारी स० सखी लगी सब पिछताने ॥ ने० ३ ॥

सब सखियां लेलार ह्मारी स० चाली राजुलगढ गिरनारे, उठी घटा घनघोर मारगमें मेहवरस्यो मुसलधारे, सब सखियां गई विछड़ ह्मारी स० न्यारी २, हुयगई सारे, चीर सुकावण काज सती जब गई है गुफाके मझारे (उडावणी) हे सती रहनेमी समझायोरे, उनकूं धर्मको राह बतायो, हे जब रहनेमी सरमायोरे, सतीकूं वारंवार खमायो, आवड़ महात्मा गावे ह्मारी स० पिऊसे पहली गई निरवानी, ॥ ने० ४ ॥

॥ इति पद ॥

—.❀.—

॥ प्रभु जाय चढै गिरनारी रे, वानै छोड़ी है राजुलनारी, सुनी पशु पुकारी दयाचितधारी चारी ममताकूं मारी विसारी, (टेर,) जलचरी खेचरी मरतांउवारी वाने मिरगाकी सुनी पुकारी, पशुवांको छोडदीना ॥ प्रभुजा० १॥ संहसारी वनमें संजमलीनो वाने पंचमहाव्रतधारी,

ऋद्धिना त्यागकीना ॥ प्र० २॥ चौतीस अतिशय पैतीसवानी, प्रभु भये हैं केवल ज्ञानी, आवड़नैं छंद कीना ॥ प्रभु जा० ३ ॥

॥ इति पदं ॥

शिव रमणीको स्तवन

मुक्ति खूब बणी छे जी, देखण हुंस घणी छे जी । ज्यांरा सिद्ध धणी छेजी, आगम बैण सुणीजे जी ॥ मुक्ति खूब बणीछेजी देखण हुंस घणी छे जी ॥ टेर ॥ १ ॥ सम् भूमि तल्ल थी ऊंची अलगी, सात राज प्रमाणे । लाख पेंतालीस जोजन चिहुं दिस, ज्ञान विना नवी जाणे ॥ मुक्ति० ॥ २ ॥ फिटक रतन में हार

मोत्यांरो, सख सम उज्जल दाखी। अरजन सोना मांही मनोहर, वीर जिनेसर भाखी॥ मुक्ति०॥३॥ सुर नर इन्द्र असुर सुं अधिका, मुनिवर नो सुख जाणो तिणथी अनंत अचल सुख जिणमें, कर्म हणीने माणो॥ मुक्ति०॥४॥ दस दरवाजा हिवडे जडीया, पांच रहे नित्य खूटा। करो किलो कायम एक छिनमें आठ कर्म थी छूटा॥ मुक्ति०॥५॥ त्रिण भूखने दुख सुख पुद्गल, मूल न दीसे कोही। एक नहीं पिण रहे अनंता, नहीं वसती नहीं रोही॥ मुक्ति०॥६॥ तिण नागरीमें वसे धनवंता, चिहुं दिस हुंड्यां चाले। माल खरीद लेवे चिहुं दिसनो, मूल न पाछो घाले॥ मुक्ति०॥७॥ शुभ अशुभ तो एक न छोड़े जे जग छोटो मोटो। वितो काल अनंतो व्यापारे, नफो न दिसे टोटो॥ मुक्ति०॥८॥ काया नहीं वले अटल अवघेणा, आंख्यां नहीं

पिण देख । धर्म पापतो मूल न दीसे, जोग भोग नहीं एक ॥ मुक्ति० ॥ ९ ॥ डोल नहीं पिण रहे जग फिरता । दान नहीं पिण दायक जावे छे पिण नहीं आवे पाछा, नहीं सेवक नहीं नायक ॥ मुक्ति० ॥ १० ॥ यही पुरमें शिवपुरमें गायो, पायो परम आणंदा । रतनचंद कहे तिण नगरी विना, कटे नहीं दुखका फंदा मुक्ति० ॥ ॥ ११ ॥ एकसठ साल रसाल नगरमें, भरे भाद्रव में गायो। काल अनंत रूल्यो चिहुं गतमें, अब तो मारग पायो ॥ मुक्ति० ॥ १२ ॥

॥ इति शिवरमणी रो स्तवन समाप्तम् ॥

दोष विना सोचन कोय। निर्मल संजम शुद्ध प्रणामें कांसुं कहे सी लोय॥ म्हारी निंद्या कोई करे रे॥ १॥ आप तणा गुण कर कर मैला॥ निर्मल करथ्यौ मोय॥ म्हारी निंद्या कोई करे रे॥ २॥ निंदक सम उपकार करे कुंण॥ अंतर करने जोय॥ म्हारी निंद्या कोई करे रे॥ ३॥ विन साबु रोजगार लियां विन॥ कर्म मेल देवे धोय॥ म्हारी निंद्या कोई करे रे॥ ४॥ रतन जतन कर मन शुद्ध राख्यां सोने काट न होय॥ म्हारी निंद्या कोई करे रे॥ ५॥

॥ इति पद ॥

—❀—
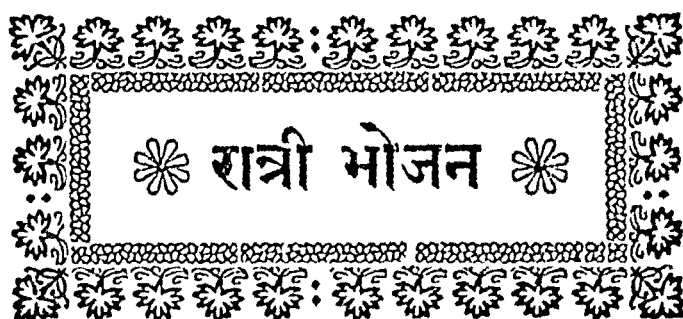
(कुंडलिया छन्द)

आंधो भोजन रातरो करे अधरमी जीव, ओछा जीतब कारणे दहे नर्कमें नीव। दहे नर्कमें नीव रींव करसी भव भवमें, पचसी कुंभीमांय जले ज्युं ठूंठा दव में। परमा धामी देवता घणी उड़ासी भीख, रतन कहे तज मानवी सुण सतगुरुकी सीख ॥ १॥ चिड़ि कम्मेड़ी कागला रात चुगण नहीं जाय, नर देह धारी मानवी रात पड़्यां किम खाय। रात पड़्यां किम खाय जाय मार्‍या त्रस प्राणी, कीठ पतंग्या कुन्थवा पड़े भाणे में आणी। लट गजाई सुल सुली इल्लि इन्ड समेत, रतन कहे अग तेहने खावे कर

कर हेत ॥ २ ॥ जलंदर उत्पत हुवे जुंके
पडीयां पेट, मुखमें जावे मक्खिका वमन करावे
नेठ। वमन करावे नेठ धेठ तजो मनकी धठाई,
वाल करे सुर भंग कोढ़ मकड़ी थी थाई।
कुपोली सड़ सड़ मरे विच्छु तणे संवध, रतन
कहे तज मानवी रात्रि भोजन अन्ध ॥ ३॥
रात री भोजन दोप अति देखो वेद पुराण,
एक वरसका त्याग में छव मासी पच्चख्खाण।
छवमासी पच्चख्खाण आण नर मनमें समता,
पामे अमर विमान मिले सुख मनमें गमता।
रतनचंद धन मानवी सुण सुण दे छिटकाय,
अल्प दिनांके मांय ने अमरा पदमें जाय ॥४॥
कराता भोजन रात रो न्यात जात परिवार,
कहरी ज्युं मुखमें लियो मूसो तणो आहार।
मूसे तणो आहार छार पड़ो शिर ऊपर, सुगन्ध
सरस आहार कीड़ां छायो खायो नर चटको
देतां चमकीयो, मुख दियो मुकलाय रतन

कहे छव मासीकी बुद्ध भिष्ट होय जाय ॥ ५ ॥
हुवे घघूने वागल्यां पग ऊंचा शिर हेठ, चम-
चेड़ जुं लटकता, रातूं भर भर पेट रातूं
भर भर पेट मेट नर मनकी ममता । मंस
आहारी जीव कह्या नर चरता, रात्रि भोजन
त्याग दै धन तिके नर नार । रतन कहे राते
भखे, ते कह्या पशु गंवार ॥ ६ ॥ अन्न मांस
सम दाखीयो लोही जुं जलधार, सूर्य अस्त
हूआ पछे जो पीवे नर नार । जो पीवे नर नार
धार शिव मतनी वाणी, मारकंड नामे पुराण
ताही में या विधी आणी । मरे मुदायत मानवी
तो घर सूतक होय जाय, रतन कहे सूर्यों
मतिये अस्त हुवा किम खाय ॥ ७ ॥ मुसल-
मान राते भखे, हिन्दु दिवस प्रमाण । टिकीयो
खावण रातने, तो व्रत रोजा जिम जाण । व्रत
रोजा ज़िम जाण, खाण यहे अखज बरोबर ।
कर कर जीवांना आहार, जाय उपजे जमके

घर। भो भर विष्टा मुख ठवे, वल वलतां अंगार। रतन कहे तिण कारणे, त्याग करो नर नार ॥ ८ ॥

॥ इति रात्री भोजन कुडलिया समाप्तम् ॥

सरल को शठ कहें वक्ता को ढीठ कहें,
विनय करे तासों कहें धन के आधीन है।
क्षमी को निर्वल कहें दमी को अदत्ती कहें,
मधुर वचन वोले जो तासु कहें दीन हैं।
धर्मीको दम्भ निस्पृही को गुमानी कहे,
तृष्णा घटावे जाकुं कहे भाग हीन है।
जहां साधु गुण देखे तिन्होको लगावे दोष,
ऐसो कुछ दुर्जन को हिरदा ही मलीन है।

— ❀ —

अथ उपदेशी स्तवन लिख्यते

(राग खंभायची)

मानवको भव पायके मत जाय रे
जीव निराशा ॥ आ टेर ॥

आतम ग्यान अनोपम सागर सतगुरु दीधा दिलासा ॥ म० ॥ १ ॥ तन धन जोवन जगमें पलटे ज्युं पांणी बीच पतासो ॥ म० ॥२॥ हाथी सम घोड़ा चक डोला तजिया महल निवासा ॥ म० ॥ ३ ॥ खीर समुद्रमें पैसने प्यासो रहता होवे हासा ॥ म० ४ ॥ सुखसागर की लहर तजने किम करे जम घर वासा ॥ म० ॥ ५ ॥ रतनचन्द कहे धर्म आराधो ज्युं सफल फले मन आसा ॥ म० ॥ ६ ॥ मानवको भव पायके मत जाय रे जीव निरासा ॥

॥ इति उपदेशी स्तवन :समाप्तम् ॥

दयाका स्तवन लिख्यते

दया विन करणी दुख दानी, दुख दानी भला धूल धानी ॥टेर॥ जल विन कमल, कमल विन भंवरो । कूप न सोवे, विन पाणी ॥ दया० ॥ १ ॥ तिल विन तैल, चेतन विन काया, स्याम विना कैसी पटराणी ॥ दया० ॥ २ ॥ गुण विन रूप, चँद विन रजनी । निरधन नर जैसे अभीमानी ॥ दया० ॥ ३ ॥ हरखचन्दजी केहवे जन्म अव्यर्था । क्युं नहीं समझे, जिनवांणी ॥ दया विन करणी दुख दानी ॥ ४ ॥

रागकाफी

स्तवन करमकी गतिको ।

कर्म तणी गति न्यारी रे, कोई पार न पावे ॥ टेर ॥ पुंडरीक तिरियो तीन दिवसमें, कुंडरीक
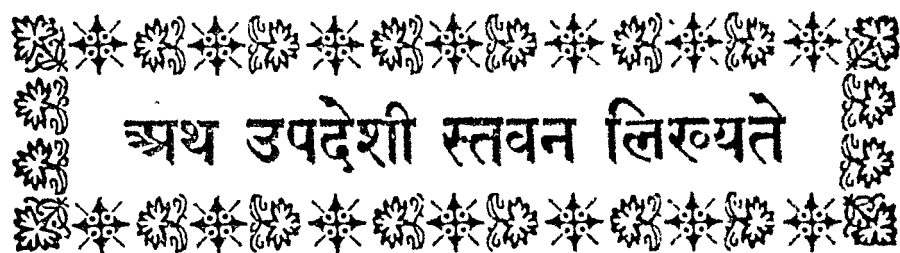
अथ उपदेशी स्तवन लिख्यते

(राग खंभायची)

मानवको भव पायके मत जाय रे
जीव निराशा ॥ आ टेर ॥

आतम ग्यान अनोपम सागर सतगुरु दीधा दिलासा ॥ म० ॥ १ ॥ तन धन जोवन जगमें पलटे ज्युं पांणी बीच पतासो ॥ म० ॥२॥ हाथी सम घोड़ा चक डोला तजिया महल निवासा ॥ म० ॥ ३ ॥ खीर समुद्रमें पैसने प्यासो रहता होवे हासा ॥ म० ४ ॥ सुखसागर की लहर तजने किम करे जम घर वासा ॥ म० ॥ ५ ॥ रतनचन्द कहे धर्म आराधो ज्युं सफल फले मन आसा ॥ म० ॥ ६ ॥ मानवको भव पायके मत जाय रे जीव निरासा ॥

॥ इति उपदेशी स्तवन समाप्तम् ॥

पानमले अर्पणकीत्री, ये पुस्तक सुखदाय।
सुद्ध मन से पुस्तक पढो, प्रभु चरणे चितलाय ।३।
जतनो पुस्तक राखोये, पढिए चित्त लगाय।
सुख सम्पत सबही मिले, विघन कोटि मिटजाय ।४।
जैन धर्म प्रसादसे, पूर्ण भयो यह ग्रन्थ।
ज्ञान दयाको मूल है, धर्म तणो यह पन्थ ॥५॥
अल्प बुद्धि मैं बालहु, विद्वानसे अरदास।
देख्यां वाच्यां सो लिख्यां, मत कीजो कोई हास ।६।
सूत्र अर्थ जाणु नहीं, जिन आज्ञा अनुसार।
भूलचूक दृष्टि पड़े, लीजो सज्जन सुधार ॥ ७ ॥
सूत्रने लागे टबक, ऐसो अर्थ मतमान।
प्रसिद्ध करता इम वीनवे, तह मेव सत्य जान ।८।
माघ शुक्ल पंचमी तिथी, वार अदीत बखान।
उन्नीसे गुणियासीये, विक्रम सम्वत जान ॥ ९ ॥

शुभ भवतु

— ❀ —

नर्क सिधावे रे ॥ को० ॥ १ ॥ गुरु वेमुख थयो गोसालो, अंते समकित आवे रे ॥ को० ॥ २ ॥ संजती राय आहेड़े तजतां, जन्म मरण मिटावेरे ॥ को० ॥ ३ ॥ च्यार हत्याकर चोर प्रहारी, देव विमाणे जावेरे ॥ को० ॥ ४ ॥ रतनचंद कर्मन की वारता, अनंता अनंत कहावेरे ॥ को० ॥ ५ ॥

॥ इति पदं ॥
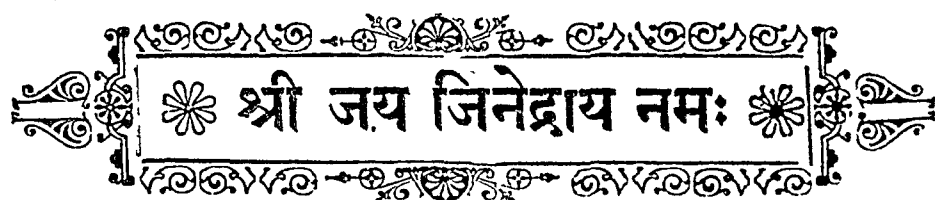
दोहा

श्री गुरुदेव प्रसादसे, संग्रह कीनो सार ।
याको जो निसदिन पढे, उतरे भवजल पार ।१।
श्री जैन धर्मको सार, संग्रह सुश्रावक कियो ।
विक्रमपुर मझार, ज्ञान तणो आनंद लियो ॥२॥

पानमले अर्पणकीवी, ये पुस्तक सुखदाय ।
सुद्ध मन से पुस्तक पढो, प्रभु चरणे चितलाय ।३।
जतनो पुस्तक राखोये, पढिए चित्त लगाय ।
सुख सम्पत सर्वही मिले, विघन कोटि मिटजाय ।४।
जैन धर्म प्रसादसे, पूर्ण भयो यह ग्रन्थ ।
ज्ञान दयाको मूल है, धर्म तणो यह पन्थ ॥५॥
अल्प वुद्धि मैं वालहु, विद्वानसे अरदास ।
देख्यां वाच्यां सो लिख्यां, मत कीजो कोई हास ।६।
सूत्र अर्थ जाणु नहीं, जिन आज्ञा अनुसार ।
भूलचूक दृष्टि पड़े, लीजो सज्जन सुधार ॥ ७ ॥
सूत्रने लागे ठवक, ऐसो अर्थ मतमान ।
प्रसिद्ध करता इम वीनवे, तह मेव सत्य जान ।८।
माघ शुक्ल पंचमी तिथी, वार अदीत वखान ।
उन्नीसे गुणियासीये, विक्रम सम्वत जान ॥ ९ ॥

शुभ भवतु

— ❀ —

॥ अन्तिम मङ्गल श्लोक ॥

शिवमस्तु सर्व जगतः
परिहिता निरता भवंतु भुतगणाः
दोष प्रयायान्तु नाशं सर्वत्र
सुखी भवतु लोकः ॥

॥ इति श्रावक स्तवन सज्जाय संग्रह ग्रन्थ समाप्तम् ॥

॥ दोहा ॥

पिंगलगण जाणु नहीं, अल्पमती अनुसार;
रची अर्पण करूं जेष्टने, पंडित लीजो सुधार।

॥ श्रीरस्तु ॥

卐 ॐ 卐
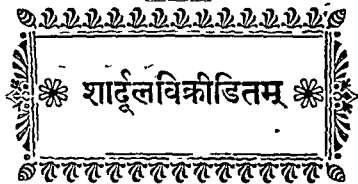
शार्दूलविक्रीडितम्

श्रीमानोसकुलोद्भवः सुगुणवान्
ग्रन्थालय स्थापको,
न्यायोपार्जित सद्धनेन च सुधी-
विद्यालय स्थापकः ।
वास्तव्यो मरुदेश विक्रमपुरे
श्रीजैनधर्मेच्छुकः
सुश्रेष्ठी क्षितिमण्डलें विजयति
श्री भैरुदाना ह्वयः ॥१॥

भवदीयवाल—पानमल सेठिया

मोहल्ला मरोटीयांका
बीकानेर—राजपूताना।

Augarchand Bhairodan Sethia.

JAIN LIBRARY.

Moholla Marotian,

Bikaner, Rajputana.

पुस्तक मिलने का पता—

पानमल उदैकर्ण सेठिया ।

नं० १०८ पुराना चिनाबजार ष्ट्रीट,

चिट्ठीका पता—

पोस्ट बकस नं० २५५ कलकत्ता ।

तारका पता—

"सेठिया" कलकत्ता ।

SRAWAK STAWAN SANGRAH

To be had at—

Panmull Oodeycurn Sethia.

Coral & Pearl Merchants

Office—108, Old China Bazar Street,

CALCUTTA

Letter Address—Post Box 255 CALCUTTA

Telegraphic Address—"SETHIA"

CALCUTTA

पुस्तक मिलने का पता—

अगरचन्दजी भैरोदान सेठिया।

का

"श्री जैन विद्यालय"

मोहल्ला मरोटियांरी गवाड़,

बीकानेर-राजपुताना।

SRAWAK STAWAN SANGRAH.

To be had at—

Augarchand Bhairodan

Jain National Seminary.

MOHOLLA MAROTIAN.

Bikaner, Rajputana.

पुस्तक मिलनेका पता—

अगरचन्दजी भैरोदान सेठिया।

श्री जैन ज्ञान प्रचारक

“कन्या पाठशाला”

ठंठारा की गवाड़—मरोटियां के मोहल्ला पास,

बीकानेर—राजपूताना।

SRAWAK STAWAN SANGRAH

To be had at—

Augarchand Bhairodan,

JAIN NATIONAL

GIRLS INSTITUTE,

THANTHARA KI GOWAD,

Near Mohalla Marotian,

BIKANER, Rajputana.

चित्रगुप्त प्रेस,— १६७ काटन ष्ट्रीट कलकत्ता।

॥ ओ ॥

॥ लाल कृत स्तवनावली ॥

भंडारी सुवालाल के बणाये हुये पद है जिसको लुणिया कानमल ने अपने यंत्रालयमें छपवाये हैं

समत् १९५१ का मिती भावद्र शुक्ला १३ बुधवार ताः १२ सितंबर सन् १८९४ ई.

पहली वार पुस्तक ८०० मूल्य फी पुस्तक =) आने

॥ श्री अजमेर मध्ये ॥

दी प्रींटिंग वर्क्स अजमेर म छपा ।

। सूचना ।

॥ विध्वजनों से प्रार्थना है कि यह पुस्तक (लाल कृत स्तनावली) छापी है इसके छापने में किसी जगह गलती हो सो कृपा कर के सुद्ध कर लेवें मरी गलती माफकर ॥

लूणायां कानमल.

॥ श्रीजीनायनमः ॥

॥ श्रीगुरुदेवायनमः ॥

। दोहा ।

बुद्धि विवेक तव चरण रती । दीज्यो आदि जिणंद ॥
विघ्न हरण मंगल करण । नमो नाभि नृपनंद ॥ १

श्री अरिहंत पद नितनमुं । नमुं सिद्ध महाराज ॥
आचारज उवझाय नमुं । साधु सहित समाज ॥ २

त्रिशला नंदन तुम धणी । वर्द्ध मान जिन देव ॥
कर करुणा मोय दीजिये । प्रभु चरणनकी सेव ॥ ३

स्तवना श्री जिन राजरी । करूं चरण चितल्याय ॥
मात सरस्वती कर मया । कंठ विराजो आय ॥ ४

जय जिणंद असरणसरण । जय भवतारण जिहाज ॥
हाथ तिहार नाथ जी । दास लालकी लाज ॥ ५

॥ अथ संभव नाथजी का ॥

(१) चाल दुहा की ॥ पुजन करसां हो म्हाराजा संभव नाथरी (आंकडी) रिखभ अजित संभव अभिनंदन है सासता सिरताज । सुमति पदम सुपारस चंदा प्रभु ए मोटा म्हाराज (पु सं०) १ ॥ सुविधि सीतल श्रेयांस विराजै वासुपुज्य अरिहंत बिमल अनंत धर्म जिन वंदु अवर सोलमा संत (पु सं०) २॥ कुन्थु अरजिन मल्लिनाथजी मुनिसुव्रत महाधीर । नमी नेम ने पारस प्रभु नितपुजां जिन महावीर (पु सं०) ३ ॥ मस्तक मुकट कानां दोय कुंडल बाहे बाजुबंध छाजै । सिखर ऊपरै धजा फरुकै सदा नोबतां बाजै (पु सं) ४॥ केसर चन्दन अवर अरगचा आंगी आंण रचासां अष्ट द्रव्य पुजन

में ल्यासां मनवांछित फल पासां (पु सं०) ५॥ कर पुजन परिकम्मा देसां जिनजी म्हारा नाथ। भव २ म्हांनै भक्ती दीज्यो सुकल ध्यानरै साथ (पु सं०) ६ ॥ उगणीसै तैतीसै साल में आछा उछव रचाया। सिवजीरांम म्हाराज अज्ञासै लाल जिणंद गुणगाया (पु सं०) ७॥ इति ॥ ॥ॐ॥

॥ अथ पारस नाथजी का ॥

(२) चाल दुहाकी ॥ गुण गावोरे भविजीवा पारस नाथरा (आंकडी) झीणो मारग जैन धर्म नो जाणतहै सब लोग। सुभ भाव समरण करोस थारे आंण वण्यो संजोग (गु०) १ ॥ काची काया कारमीस नें सुप्न रूप संसार । जिन वाणी पर रखो आसता होजावे भवपार (गु०) २॥ राग द्वेष विष वेलडी सर्नें सील सदाजयकार। मांन नरकनो मुलछैस कांइ दया धर्म नो सार (गु०)

३ ॥ भूल्यां रसतो सुद्ध वतायो मोहन मुनी महा राज । लाल जिणंद पद गांवतांस थांरी निश्चय रहसी लाज (गु०) ४ ॥ इति ॥ ❁ ❁

॥ अथ समेत सिखरजी का ॥

—— :o: ——

(३) चाल दुहाकी ॥ मनडो ऊमाह्यो जासा जातरा समेत सिखरजी (आंकडी) एतीरथ है मोट कोस नै भाख्यो सुत्रमझार । बीस जिणंद मुक्ते गयास कांइ सिवरमणी भरतार हो (स०) १ ॥ टूक २ पर चरण बिराजै मन्दिर बणे अति भारी । देस २ ना आवै जातरी गुणगावै नरनारी (स०) २ ॥ सीता नालो अमृतखालो माधो बन गुलक्यारी । एखेत्र हैं अतिही उत्तम माहिमा अधिक अपारी हो (स०) ३ ॥ लख चोरासी वार अनंत भुगत लिवी है सारी । लाल कहै वा भुमी फरसां उण दिनरी बलिहारी हो (स०) ४ ॥ इति ॥

॥ अथ विठोरा पारसनाथजी का ॥

—— ० ——

(१) चाल दुहाकी ॥ प्रगट्याहे गोडीपासजी विठोरा मांहि (आंकडी) प्रथम सुपन हुवो लोढानें नहि मानी कोइ वात। दुनियाहाजर देखता सकांई प्रगट्या गोडी नाथजी (वि०)१॥ उगणीसै गुणचाली वरसैं दुतियक श्रावण मास। इग्यारस सुद्धरात नै सकांई दरस दिया प्रभु ामजी (वि०)२॥ करुकुंची नै श्रौर अंगलूहणां केसर पुष्पकटोरी। सीसनाग नौछत्र विराजै इण विध प्रगट्या गोडीजी (वि०) ३॥ प्रगट्यानी प्रससा सुणनै आयो सघअपार। अष्ठपोहर उछव हुवैस इण वावारे दरवारजी (वि०)४॥ जैनधर्मनी ज्योती प्रगटी सकल संघसुखदाई। इण पंचम आरा माहनैस प्रभु समव सरण दरसाईजी (वि०)५॥ दिन इकीस दरसणरै वादे महरकरी महाराज निदक मुपमला थया सनै रही चंनणकी लाजजी (वि०) ६॥ लालकहें जिनवरकी महिमा

मुखसु कहियन जाय सफल भईहै जातरा सर्मं दरसण कीना आयजी (वि०) ७॥इांत ॥

॥ अथ चिंतामण महाराजका ॥

—o—

(५) चाल दुहाकी ॥ सदागुण गावोरे मोटा चिंता मण महाराज सदा गुण गावोरे (आंकडी)॥ भव जल तारण दुख निवारण करण सांकडे सहाय। असरण सरण जगत हितकारी सुर नर लागे पाय (स०) १॥ सीस नागरो छत्र विराजे गल मोति यन का हार। काना कुंडल झगमगैस प्रभु मुक्ति रा दातार (स०) २॥ वामा जुके लाल नाथ जी अश्वसने कुल भाण। जनम लियो बाणासि नगरी सिषर गिरो निरबाण (स०) ३॥ दरसण कियां दलाद्र जावे पूज्या पात कुदर।लाल कहै प्रभु कृपा काजा हाजर रहूं हजूर (स०) ४॥

॥साधारण जिन स्तवन॥

(६) चाल दुहाकी ॥ भजो सव जग नायक जिन चंद नाम सै कटै कर्मदा फंद ॥ (आंकडो) सरसत वोही सारदा मानों वाणी वडी जिणंद। आज्ञा मांही धर्म प्ररूप्यो सव जीवन सुख कंद (भ०) १॥ सासन जैन अनादी जग में वीत राग दापंथ। जिन प्रतिमां जिन सारखी स आ भाखी छ भगवत (भ०) २॥ विमला चल आदिश्वर भेटो सोरट नम जिणद,सिखर गिरीकी करो यातरा टले नर्कदा वंद (भ०) ३॥ जिन पूजा में दोस वतावे सो जांणों मतिमंद। लाल कहै सुभ भावै सेव्या निसदिन वढे आनंद (भ०) ४॥इति॥

॥ अथ पारसनाथजी का॥

(७) चालदुहाकी। झांकी भलीरे पारसनाथरी तालाव गुरांक झां०(आंकडो)॥ सवासे जोधाणे सती

छवि मंदिर की छाजै सिखर ऊपरें ध्वजा फरूकै अटल नोबतां बाजैजी (ता०) १॥ निजमंदिर में बिंब बिराजै है मुक्ती दातार। मस्तक मुकट सुहामणो स कांई तुरै तार हजार (ता०)२॥ काना कुंडल झगमगे स कांई गज मोतियन की माल। असरण सरण जगत हितकारी भव जीवन प्रतिपाल (ता०) ३॥ सुभ दिन दशमी शुक्ल मास में श्रावक मिल तहां जावै भाव भलै गुण गावतांस थारा आंगी खूब रचावैजी (ता०) ४॥ नाथ निरंजन भवदुःख भंजन तारण तरण कहावै सामळ होय समुदाय कैस कांइ लाल जिणंद गुण गावै (ता०) ५॥ इति॥

॥ अथ रिखवदेवजी का ॥

---

(८) चालरंजाकी॥ जिनराज जगपती चरणपेंवारूं हो रे मांणक मोती (आंकडो) नाभि नंद आनंद कंद जिन चंद छवी मनकुं मोहती में वारूं हिरा मांणकमोती (जि०) १॥ जनम समय तिहुं लोक

उजेरा। सहु जीवन आनंद होती (मै०) २ ॥ इंद्रा दिक सहु मिल मेरुपै। चरण कमल जिनवें ढोती (मै०) ३ ॥ अष्टा पदानिर वांण नाथ को। मिली ज्योति अंतर ज्योति (मै०) ४ ॥ पाहाडाके वीच के सरदा कांच। मेवाड मुलक झांकी होती (मै०) ५ ॥ जिन देख रूप निरमल सरूप। मस्तकपै मुगट मणी सोहती (मै०) ६ ॥ इम भणे लाल कर जोड ध्यांन सै। सुध समकित निरमल होती (मै०) ७ ॥ इति

॥ अथ पंच तीरथा जी का ॥
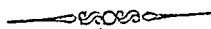
(९) चाल राजाकी ॥ वारिया वारिया वारिया हो जिन भक्तिवनै नो सेवारिया [आंकडी] ॥ सिद्ध अनंत मुक्ति गढ पोहचे वे कर्मन फंद निवारीया हो (जि०) १ ॥ सिद्धागिरी समेत सिखरजी वे भेटो भल गिरनारिया हो (जि०) २ ॥ आवु चोमुख शिव विराजे वे दरसण की वलिहारिया हो (जि०) ३ ॥

लाल जिणन्द चरणा दो चाकर वे भव२ सरण ति हारिया (जि०) ४ ॥ इति ॥

॥ अथ महावीरजी का ॥

(१०) चाल दुहाकी ॥ हमआये नाथके दरसणकुं बीर चरण जिन फरसणाकुं ॥ [आंकडी] नाम तिहारा ऐसा प्यारा जैसे खेती करसणाकुं (हम०) १ अन्य देव का संगनहीं चाहता । जैसे जवासा वरसणाकुं (हम०) २ ॥ जिन भक्ति सम अवरनहीं है देखो समकित फरसणाकुं (हम०) ३ ॥ लाल कहैतु मनाथ निरंजन।मेटो भवांकी त्रासणाकुं (हम०) ४ ॥

॥ अथ पारसनाथजी का ॥

(११) चाल दुंहां की ॥ किरपा किंकरपै प्रभुजी कीजीये।मुक्ती का दाता कि० [आंकडी]॥ लखचोरासी माहि नाथ में दुःख बहु तेरो पाये। पुरब पुन्य

ताप करीने सरण तिहारी आयोजी (मु०) १ ॥ तार क तुमछोनाथजी प्रभु लीज्यो विरुद विचार । सम कित दीज्यो सांवरास मैं भमुनांहि संसार जी (मु०) २ ॥ तारयो नाग नाथजी थाने जल तो काष्ट विडार। गरभ कमठरो गालीयोसनै दियो मंत्रनव कारजी (मु०) ३॥ पास आस मारी पूरज्यो प्रभु तुमछो वडे दयाल। चित चरणा मै राखजो थांसु अरज करे छै लालजी (मु०) ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकार का ॥

(१२) चाल दुहाकी ॥ भजो सहु सार मंत्र नवकार । ध्यांन सें उतरो गे भव पार (आंकडी) मयणा सुदंरी श्रीपाल क नव पद को आधार। मन राहुवा मनोरथ पूरण मिटगयो कुष्ट विकार (भजो०) १ ॥ जल तो नाग आग से काढ़ी दियो पास नवकार। धर णेंद्र की पदवी पाया भुवनपती सिरदार (भजो०)

२ ॥ सेटसुदरसण सूली ऊपर जप्यो जाप नवकार सूली हन्दा हुवा सिंघासण महिमा सांल (भजो०) ३ ॥ एह प्रतापी महामंत्र है चवदै सार । लाल कहै सुभभावै भजिया वरतै जय २ (भजो०)४ ॥ इति ॥

॥ अथ महावीरजी का ॥

---

(१३) चाल गाल्यांकी ॥ माने प्यारो है लागे म्हा वीरनो ओतो भवि जीवां हितकार हे म्हा घणो है सुहावे सामण वीरनो [आंकडी] यातो न प्रतिमा है जिन सरखी यातो भाख्य छै सूत्रमे रहे (म्हा०) १ ॥ यातो पूजा है द्रव्य श्रावकां भावमुनी अधिकार है (म्हा०) २ ॥ यातो पूजी प्रतिमा द्रोपदी अतो विधि सुंहै सतर प्रकार (म्हा०) ३ ॥ जिन प्रथम सिद्धागिरी परि अतो पूरब निनांणुवार (हेमहा०) ४ ॥ अते

जिणंद मुगते गया एतो सिखर गिरीछै सार हे (माह) ५ ॥ एतो वरधमांन पावापुरी एतो। नेम सिद्धा गिनारहे (महा) ६ ॥ यातो चंपा पुरी हे तीरथ कही। एतो अवर उजीणीश्वार हे (महा) ७ ॥ एतो आबू हे विव सुहामणा । याने पूजोहे वारंवार हे (महा०) ८ एतो रांणपुरो हे रलीया मणो। भेटो संखेस्वर पास कुमारहे (हम्हा) ९॥ एतो मुनिवर तेही वंदि ये चाल जिन आग्या अनुसारहे (महा०) १० ॥ ऐतो लाल कहै प्रभु गुण घणा। महां सुं भणतांन आवे पारहे (महा०) ११ ॥ इति ॥

॥ अथ पारस नाथ जी का ॥

(१४)चाल गालीकी ॥ पूजो जगनायक जिन राज पारस सांवरी यो [आंकडी] येतो अश्वसेन जीरा लाडला। यातो रांणी वांमा देवी माय (पार) १ ॥ एतो वरम्म तीस राजस कीवा। आतो नगरवां

णारसी मांहि (पार) २ ॥ एतो काउसग में उप सर्ग सह्यो। एतो चितसुं चालियानांहि (पार) ३ ॥ एतो लाल जिणंद स्तवना करी। याती पालीतांणा रैमांहि (पार)४ ॥ इति ॥

॥ अथ गिरनार जी ॥

---

(१५) चाल गालीरी ॥ गढ़ उचो घणोरे गिर नारि को। मंदिर आछो सोहेरे बृह्मचारी को [आं.] जिनवर समुद्र विजयजी का नंदाजी। मुख सोहे पुन म चंदा। फिरथे अनंतवली सुखकंदा। जिनवर पुरचो जी संख मुरारी को (ग) १ ॥ जिनवर जादवकुल अवतारी जी। पसूवनकी सुणी पुकारी। फिरथे त्यागी राजुलनारी। जिनवर झूंठो जांण्यो जी सुख संसारी को (ग) २ ॥ जनम्या सोरीपुर सुखकारी। सहसा वन मै संजमधारी। केवल मोक्ष हुवा गिरनारी। जिनवर नायक हुवाजी जगसारी को (ग) ३।

नवर ज्योति स्वरूप विराजै मस्तक मुकट अनोपम छाजे । भेट्या भगवंत आप निवाजै गुण कहां लग गाऊं उपकारी को (ग) ४ ॥ जिनवर तारण तर ण कहावै महिमा मुखसुं कहियन जावे। प्रभुने ध्या वै सोफल पावै जिनवर दरसण कव पाऊं सिव सु ख कारीको (ग) ५॥ जिनवर आपही दीनदयाल। प्रभुजी सव जीवन प्रतिपाला। लागै नाम तिहारा वाला जिनवर पारन आवे महिमा थारीको (ग)६ लाल के नाथ निरंजन सांई प्रभु को ध्यान सदा सुखदाई। भवियण राखो हिरदा मांही जिनवर सर ण दीज्यो जी चरण तिहारी को (ग) ७ ॥ इति

॥ अथ रिषभ देव जि का ॥

(१६) चाल गालीकी ॥ हांक जिनवर रिषभ पियारो। रिषभ पियारो सांवरो धुलेवा वरो रे (जि) [आंकडी] नाभि राय जुके लाडलो। मरुदेवी को

प्यारोरे (जि) १ ॥ विनता नगरी जनमिया। दिक्षा व्रत धारोरे (जि) २॥ केवल पुरिमताल में तिहुंलोक उजारोरे (जि) ३ ॥ समवसरण रचना रची। सुर पति मिल सारोरे (जि) ४॥ सुध प्ररूपी देसना। भवि जीव उधारोरे (जि) ५॥ गिर अष्टापद उपरै। निरवांण तिहारोरे (जि) ६॥ लाल चरण को दास है। करीये निस्तारोरे (जि) ७॥ इति ॥ ❀

॥ अथ चोइस जिन का ॥

(१७) ओतो नाम जिणंद जयकार वे हारे यानें भजियां सुं भवपार वे नाम [आंकडी] हांरे अेतो रिषभ अजित संभव धणी। हांरे थांने अभिनंदन देसी तार वे (ना) १॥ हांरे अैतो सुमति पदम सु पास जी। हांरे तुंतो चंदा प्रभु चित धार वे (ना) २ हांरे अेतो सुवधी सीतल श्रेयांस जी। हांरे पूजरे व सु पूज्य वारंवार वे (ना) ३॥ हांरे अेतो

अनंत धरम धर्णी । हांरे अेतो सांती नाथ जग सार वे (ना) ४ ॥ हांरे अेतो कुंथु अरमली नाथ जी। हांरे अेतो मुनी सुव्रत मनुहार वे (ना) ५ ॥ हांरे अेतो नमीनेम प्रभु पास जी। करसीवर्द्ध मान षेवा पार वे (ना) ६ ॥ हांरे अेतो जिन चोवीसें इम कह्या । हांरे अेतो षोता छेमुगति मझारवे (ना) ७ ॥ हांरे अेतो जिन पूजा भगती करो । थारा मिटजासी विषय बिकार वे (ना) ८ ॥ हांरे अेतो लाल जि-णद अरजी करे । हांरे म्हारी आवागमण निवार वे (ना) ९ ॥ इति ॥

॥ अथ रिषभ देव जी का ॥

(१८) चाल फागणरी ॥ हांरे होमरुदेवा रा-लाल । थांसू सारो मन लागो । हांरेहो गुणवंता नाथ। चरणा उपर चित लागो [आंकडी] जगनायक जिन वांदिये जी । आदि जिणंद माहाराज। वीत राग

करुणानिधी जी । तारण तरण जिहाज (गु) १ ॥ विनिता नगरी जनमिया जी । दिक्षा महोछवनांण । केवलपुरि मतालमेजी । अष्टापद निरवांण (गु) २॥ मुलक भलो मेवाड़ नोजी । धूले वे जिन राज । अनड पाहाडा बीचमैजी । रही छै नोवतांवाज (गु) ३ ॥ श्याम सरूप सुहांमणोजी । हीरा हिवडे वीच । मन्दिर मनोहर अति भलोजी । केसर हंदा कीच (गु) ४ ॥ काना कुंडल जगमगे जी । गल मोतियन दा हार । मुकुट मनोहर उपरैजी तुररे तार हजार (गु) ५ ॥ रतन जडित आंगी भलीजी । भुजबंध भलकै दार । दरसण थी दिल ना हटैजी । भेट्यां भवद धीपार (गु) ६ ॥ जिन प्रतिमांजिन सारषीजी भाषी सुत्र मझार । लाल कहै प्रभुपूजतां जी होसी जय जयकार (गु) ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रेयांसजी का ॥

(१९) चाल फागण की ॥ तारो तारो जी

ारी सिवरमणीरा होनाथ। जिणंद मोय तारो [आं
डो] मोहराज मोय घेरियो जी। प्रभु माया हांजी।
भु माया नांपीजाल। मांन चिहुंगति लेइ फिरचो
ी। प्रभु वीतो हांजी प्रभु वीतो केतो ही काल
जि) १ ॥ रागद्वेप दिलमै वसैजी। प्रभु समता
ांजी प्रभु ममतारो नही पार। सुमती संग आवै
हांजी। प्रभु कुमती हांजी प्रभु कुमती पडरही लार
जि) २ ॥ समता रस पायो नहीं जी। प्रभुलोभ
ांजी प्रभु लोभ उलंघीकार। काम कुचाल सिपाय
योजी। प्रभु किण विधि हांजी प्रभु किणविधि उतरूं
ापार (जि) ३ ॥ तारक जिन श्रेयांसजी। हो प्रभु
ाीज्यो हांजी। प्रभु लीज्यो विरुद्द विचार। लाल
रणरादास की जी प्रभु आवा हांजी प्रभु आवा-
ामण निवार (जि) इति ॥

॥ अथ बरकाणै पारसनाथ का ॥

(२०) चाल बपतु जी ॥ जिनवरजी रे नाम

तिहारो भवियण प्यारो रे । हांरे २ भवियण प्यारो रे सों शिव सुखनो दातारो रे जिनवरजी बालाजो [आ०]जिनवरजी रे बावन जिनालय मंदिर छाजै रे हांरे २ मंदिर छाजै रै या घन ज्युं नोवत गाजै रे (जि०बा०) १ ॥ जिनवरजी रे पारस वरकाणे नाथ विराजेरे । हांरे २ नाथ बिराजे रे । थांने भेट्या भव दुष भाजैरे (जि०बा०) २ ॥ जिन वरजी रे मुकट मनोहर कुंडल सोहे रे हांरे २ कुडल सोहरे थारी मूरती मन डोमो है रे (जि०बा०) ३॥ जिन वरजी रे नागल सांवरीया साहिब तारयो रे हांरे २ साहिब तारयोरे गरभ कमठ रोसाल्योरे (जि०बा) ४ ॥ जिनवरजी रे सुमती सांवारया मांने दीजो रे हांरे २ मांने दीजो रे आ कुमती दूर करीज्यो रे (जि०बा०) ५ जिन वरजी रे गुणतो सांवरिया निसदिन गाऊंरे हांरे २ निसदिन गाउरे चरणा रीसेवा चाउरे (जि०बा०) ६ ॥ जिन वरजीरे लाव

किंकरनै हांरे २ काहुविध तारोरे। मारी आवागमन निवारोरे (जि०) इति ॥

॥अथ जिनराज का ॥
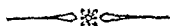
(२१) राग कालंगडो ॥ जिनराज लाल मोरी रखरे । नाम तिहारो बहुत रसीलो बीत राग निरपख रे (नि) १ ॥ मेरी प्रीति लगी चरणन से । दूर भया सब सकरे (जि) २ ॥ कर पूजन परलोक सुधारा । निंदक रहें वे मुख रे (जि) ३॥ लाल अरज करता जिन आगल । अब गुणमा राढ करे (जि) ४ ॥ इति ॥

अथ नेमनाथ जी का ॥

(२२) ॥ राग कालंगडो ॥ थांरी छवि प्यारी थांरी तो छवि प्यारी जी । नेम कुमार थांरी तो छवि

[आंकडी] समुद्रावि जैसेवा देवी रानंदा । जादवकुल अवतारी जी था १ ॥ तोरण से रथ पीछोफेरयो । जनम जती बृह्मचारी जीथा २ ॥ सहसा वन जाय संजम लीनों तारी राजुल नारी जी था ३॥ श्याम स्वरूप अनूप लिहारो । लाल चरण पै वारी जी था २ ॥ इति ॥

॥ अथ सांतीनाथ जी का ॥

(२३) पुन दरस मोय दीज्यो जी दरस मोय दीज्यो जी । शांति जिणंद दरस मोय दीज्योजी [आंकडी] अंतरजामी सोलमां स्वामी । चरण शरण रखलीज्यो जी (द) १ ॥ भवसागर मझधार पडाहूं वेगी वाहार करीज्यो जी (द) २ मुक्ति महल में आप बिराजो । अब कुण तारे म्हानु वीजो जी (द) ३॥ जन्म मरणरी त्रास बुरी है । बालसो दुख हरीजो जी (द) ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चंदा प्रभु जी का ॥

२४ चंदाप्रभुजी सुगति के दाता [आकडी] मा हासेन कुल जन्म लीयो है । रांणी लक्षमणा माता (चं०) १ ॥ तारण तरण विरुद्ध हैं वाको । जिन अष्टम कहलाता (चं०) २ ॥ पद निरवाण शिषर गिरि ऊपर तीनलोक के नाथा (चं०) ३ ॥ लाल रैल में प्रात समेंही । समर समर गुण गाता (चं०) ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम नाथ जी का ॥

२५ कालगडो॥नेमी प्यारो हमारो सांई । सांई हमारो सहाई (नेम०) [आंकडी] समुद्र विजय कुल भांण कहावत राणी सिवादेवी माइ (ने०) १ ॥ तोरण सेंरथ फेरचले प्रभू । पसुवन करुणा लाई (ने०) २ ॥ राजुलऊभी झूरै झूरणा । ता

कूखड़ी छिटकाई (ने०) ३ ॥ गढ गिरनारी जोग लीयो है । केवल वाहांही पाई (ने०) ४ ॥ तीन कल्याणकहै गिरनारी । जोतमें जोत समाई (ने०) ५ ॥ श्याम स्वरूप अनूप विराजै । पूज्यापातिक जाई (ने०) ६ ॥ लाल अरज करता कर जोडी । लाज रखो जदुराई ७ ॥इति ॥

॥ अथ श्री जी सतवन ॥

---

(२६) ॥ राग कालंगडो ॥ देखो अजब बणी छै आंगी [आंकडी] रतनजडित आभूषण सोहै रेषभवारा षांगी (दे०) १ ॥ केसर चंदण अबर अरगचा वरकबादलालागी (दे) २ ॥ जो भवीयण अंग रचना कीनी । सो करमन कट भागी (दे०) ३ ॥ लाल कहै जिन भावै पूज्यां मुक्ति मिलै विन मांगी (दे०) ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंत जिनंद स्तवन ॥

(२७) ॥ राग कालंगडो ॥ अनंत जिनंद अव धारो अरजी रे अणंत जिणंद० [आंकडी] मैं अनाथ तुम नाथ कहलावत। तार सको छो तोरी होय मरजी रे (अ०) १॥ या कुमती मारै गैल पडीछै। वाको राखोजी प्रभु तुम वरजी रे (अ०) २॥ मोय चेरो चरणादो जाणो। मत जाणोजी प्रभु तुम फरजी रे (अ०) ३॥ जन्म मरणरी त्रास तुर्रहै। मेटो लालनो प्रभु डर जीरे (अ०) ४ इति

॥ अथ समोसरण रचना सत्वन ॥

(२८) ॥ राग कालंगडो ॥ छबी नीकी लगे परमेश्वर की। छबीनी० ॥ [आंकडी] रोम रोम आनंद भयो मेरे। देख छटा मानु जिन घरकी (छ०) १॥ समवसरन रचना जो निरखी। अखीयां प्रेम हुलस हरखी (छ०) २॥ रतन जडित

आभुपण सोहै। मूरति मोहन सिववर की (छ०) ४॥ मात दान चित जोग ठान कै। उच्छव करै हरखी हरखी (छ०) ५॥ फागण उगनीसै पैता लीस। द्वातियक छट निसाकरकी (छ०) ६ ॥ लाल कहै प्रभु प्रतिमा ऊपर। कोट छवि वारूं दिन कर की (छ०) ७॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धागिरीजी को स्तवन ॥

(२९) चाल पणिहारीकी॥ सिद्धागिरी सिरसेहरो आदिस्वरजी। थाने भेट्यां भवोदधिपार । जिनवर जी [आंकडी]॥ पालीताणा बजार में। आ० थांरो अलबेलो दरबार (जि० सि०) १॥ ललित सरोवर पेखियो। आ० कांई अवर सतानी वाव (जि० सि०) २॥ चोवीस जिणंदरा चरण छै। आ० कांई चढतां ऊंची पाज (जि० सि०) ३॥ रिखभ अजित सांति चरण। आ० कांई गोयम छै गणधार (जि० सि०) ४

भरत चरण पहली टूंक छे। आ० आगे नेम चरण छे सार (जि० सि०) ५॥ लीली परव विश्राम छे आ० कांई कुंमार पाल कुड जांण (जि० सि०) ६॥ हिंगलाजरो थान छे। आ० कांई कलिकुंड पारस नाथ (जि० सि०) ७॥ रिखभा चंद्रानन छे। आ० कांई वारिखेण वर्द्धमान (जि० सि०) ८॥ चाली कुंड चाढिया थकां। आ० कांई द्रावड वारि खिल्ल (जि० सि०) ९॥ रांम भरत थावच्चा। आ० कांई सुत सिलंग महाराज (जि० सि०) १० ॥ चौकी हनुमतवीरकी । आ० कांई जालीमयाली उचयाल (जि०सि०) ११॥ रांमपोलमें आविया। आ० कांई निरख्या नवहीकोट (जि० सि०)१२॥ विमल वसी छे मोटकी। आ० ज्यांनें देख्यां पाप पुलाय (जि० सि०)१३॥ चक्रेश्वरी देवी तिहां। आ० कांई आगल धर्म दुवार (जि० सि०) १४॥ सूर्यकुंड अति सोभतो आ० कांई निज मंदिरकी पोल (जि० सि०) १५॥

प्रथम आदेस्वर सनमुखे। आ० कांई पुंडरीक गण धार (जि० सि०) १६॥ रायणतलै पगल्यानमी। आ० कांई सांति नाथ सुखकार (जिं० सि०) १७॥ मोती वसी मांहे भेटिया। आ० कांई रिसभ जिणंद महा राज (जि० सि०) १८॥ मंदिर मनोहर अति भला आ० मासुं महिमा वरणी नजाय (जि० सि०) १९ बालावसी जिन भेटिया। आ० कांई आगे अदभुत नाथ (जि० सि) २०॥ पेमावसी हेमावसी। आ० भेट्या आदि अजित महाराज (जि० सि०) २१॥ उजम वसीमाहे अति भलो। आ० कांई भाव नंदीश्वर दीप (जि० सि०) २२॥ साकरवसी मांहे सोभता। आ० कांई चिंतामण महाराज (जि० सि०) २३॥ छीपा वसी जिन भेटिया। आ० कांई नाभि नंदन महाराज (जि० सि०) २४॥ खरतरवसी मांहे खात सुं। आ० काई भेट्या चौमुखनाथ (जि० सि०) २५॥ पांच पांडवनी मूरतां। आ० कांई चवदैराजनो भाव (जि०

सि० २६ ॥ मरुदेवी गजपै चढी । आ० कांई अवर अंगारा स्याह (जि० सि०) २७ ॥ सत्रुंजे नदी सुहावणी। आ० कांई दूरथकी देखाय (जि० सि०) २८ ॥ भमती छे छव कोसमें । आ० तामे देवकी खट छे कुमार (जि० सि०) २९॥ उलकाझोल सूं उतरिया आ० आया चेलणा तलाइरी पाज (जि० सि०) ३० ॥ सिद्ध सिलापर सिद्धछे। आ० कांई डुंगरभांडवो जांण (जि० सि०) ३१ ॥ आदीपुर पाजे उतरिया आ० कांई सिद्ध वडलो विसराम (जि० सि०) ३२ इणगिर रिसभ समोसरया। आ० कांई पुर्व निनाणु वार (जि० सि०) ३३ ॥ एतीरथ छै सास्वतो। आ० कांई भाख्योछै सुत्रमझार (जि० सि०) ३४ ॥ इण गिरकी माहिमा घणी। आ० जिहां सीधासाधु अनंत (जि० सि०) ३५ ॥ अजयगढसुं संघ आवियो। आ० कांई कल्याणनै सोभाग (जि० सि०) ३६ ॥ गोरमल नथमाल छे। आ० कांई मिलापचंद धनराज (जि०

सि०) ३७॥ अगर अरज इमवीन वें। आ० कांई मदनछै संघ मझार (जि० सि०) ३८ ॥ उगणीसै चालीसमें । आ० कांई कार्त्तिक शुक्ला मास (जि० सि०) ३९॥ द्वादसी दिन रवि मोटको। आ० थारा चरण भेटिया लाल (जि० सि०) ४० ॥ इण गिर कीनी जातरा । आ० म्हारो सफल हुवो अवतार (जि० सि०) ४१॥ इति

॥ अथ श्री आदजिणद स्तवन ॥

(३०) ॥ चाल दुहाकी ॥ दरस फिर दीज्योजी मांनै आदजिणद महाराज द० [आंकडी] अष्ट करम की चौकी मारै छायरयोपरमाद। चितचरणामें लागियो सने छुटै नहीं सवाद द० १ ॥ पांच कीवी छै यातरा मारै फेर रही दिल मांय। हाथ जोड अरजी करूं सनें आप भूलियो नाय द० २ ॥ अब गिरनारी जावसां सनें भेटां नेम कुमार । तोरणसुं रथ फेरियो सने तारी राजुल

नार द० ३॥ मिगसर कृष्णा पंचमी सने चालीसा री साल। गढ सतरुंजा ऊपरै थांरा गुण गाया छै लाल द० ४॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमीसर स्तवन ॥

(३१) ॥ राग ढोलकंवरकी चालमें ॥ प्यारो लागेजी गिरनार। नेमीसर थारो प्या० [आंकडी] अवल अहमदावादमें जी भेव्या जिन चौवीस जैनपुरी जग सोभतीजी मानों विसवा वीस। ने० १॥ विमल गिरीनी यातराजी कीनी साहित समाज सिखर ऊपरे भेटियाजी आदजिणंद महाराज। ने० २॥ भावनगर भगवंतनाजी विंब जुहारया आय। दरसणथी दिल नाहटैजी रोम२ हुलसाय ने० ३॥ सोरठ देस सुहावणोजी गढां वडो गिरनार जुनागढ जिनवीर छैजी चौमुख प्रतिमा चार ने० ४ ऊंचो मंदिर आपरो जी दूरथकी दिखाय। संहसां

बन संजमतणा जी चरण भेटे सहु जाय ने० ५॥ केवल चौथी टुंक छैजी पगल्यांथकी परमाण । टुंक पांचवीं चरण छैजी प्रभुजी पधारया निरवाण ने० ६॥ मिगसर बद चवदस भलीजी उगनीसैचालीस पुरण पुन्ये भेटियाजी जगनायक जगदीस ने० ७॥ पालनपुर प्रभु भेटियाजी सांतिनाथ सुखकार । देवल दुजै बंदियाजी तेईसवां पास कुमार ने० ८॥ आबुगढ चाढिया थकाजी देलवाडो देखाय । मंदिर मनोहर अति भलाजी महिमा वरणी नजाय ने० ९॥ मूलनायक प्रथम धणीजी सनमुख विमला साह । वस्तु पालने देहरेजी नेम जुहारया जाय ने० १०॥ अचलगढ जिन भेटियाजी कंचन बिंब विसाल । मिगसर सुद दसमी रविजी गुणगाया थारा लाल ने० ११॥ इति॥

॥ अथ श्री अजित जिनराज स्तवन ॥

(३२) चाल कांटारी ॥ भेटो २ रे अजित जिन

राज भवियण भेटोरे । [आंकडी] काची काया कारमी । ओतो सुपन रुप संसार । भ० १ ॥ धन तो योवन जाणो पाहुणो । यानै विणसत लागेन वार भ० २ ॥ आतो राग द्वेसविस वेलडी । यातो समता रस छैसार । भ० ३ ॥ आतो दया धर्मनो मूलछै आतो पाप मूळ अहंकार । भ० ४ ॥ आतो दान सीयल तप भावना । यातो जिन पूजा जयकार भ० ५॥ ओतो निजमंत्र नवकार छै। याने भजिया मुंभवपार । भ० ६ ॥ आतो जिनवाणी सुणिये सदा । यातो मुनिमुख अम्रतधार । भ० ७॥ ओतो झीणो मारग जिनराजनो । यामें कूंड नहींछे लिगार भ० ८॥ ओतो लाल कहे जिन मत तणो । ओतो सुर नर पायोहन पार । भ० ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जिनंद स्तवन ॥

(३३) ॥ चाल घुमरकी ॥ (हुतो आंउने फिर

फिर जाउरे) हांरे२ फिर२ जाउरे । जिणद मारा किण बिध आंउरे । (आंकडी) मारी सुमती सुतीने कुमती जागे रे । भगती में चित नहीं लागे रे हां० जि० कि० १ ॥ योतो नर भव उतम पायोरे । श्रावकनो नाम धरायो रे हां० जि० कि० २॥ याने बालपणै हुलरायोरे । अण समझे खेल गमायोरे । हां० जि० कि० ३॥ यानै तरुण हुयां सूख आयोरे । तिरियासु नेह लगायोरे हां० जि० कि० ४॥ यानै बृद्ध भया समझायोरे तृष्णा बस होय भुलायोरे । हां० जि० कि० ५॥ याकै अष्टकरम छै बादीरे । ईंद्रयांछै सरब सवादीरे । हां० जि० कि० ६॥ याकै रागद्वेस नहीं छानेंरे सत गुरूकी सीखन मानैरे । हां० जि० कि० ७॥ यानै मोहराज बिलमावैरे । माया नहीं छांडी जावैरे हां० जि० कि० ८॥ याकों लोभ कुचाल सिखावै रे । ओ मान नरक लेजावैरे । हां० जि० कि० ९॥

योतो कुंड कपटरो सवादीरे। सुभ विरियाछें परमा दीरे हां० जि० कि० १०॥ ओतो मनडो मारग नही हालैरे। चेतनने गोता घालैरे। हां० जि० कि० ११॥ याका अवगुण नाथ विसारोरे। लालनै प्रभु जी तारोरे। हां० जि० कि० १२॥ इति॥

॥ अथ श्री वीरजणेसर स्तवन ॥

(३४)॥ चाल होरीकी ॥ मोयरखलै नाथ सरण तेरी [आंकडी] वीर जिणेसर तुंही परमेसर। जनम मरण टालो फेरी। मो० १॥ भव सागर विच झुलरयो हूं। पारकरो होती देरी। मो० २॥ तारण तरण सुण्यो तोय स्वामी। किण विध ढील रही मेरी। मो० ३॥ लाल कहै प्रभु किरपा कीज्यो। भवस्थिति आण भिरे नेरी। मो० ४॥

॥ अथ श्री मोहनविजै महाराज स्तवन ॥

(३५)॥ मुनि मोहणविजै महाराज किया

चउमासै । धन२ सहर अजमेर सुथानक वासै [आंकडी] मुनिसंजमके बडधीर पाले हुलासै जिन । आज्ञाके अनुसार ज्ञानके खासै । जिन जीती इंद्रयांपंच मुक्तिकी आसै । फिर रागद्वेस दियेमार खडग षिम्पासै । मु० १ ॥ मुनिखट काया प्रतिपाल दोस नहीं मासै । प्रभुवाणी अमृतधार अरथ खुल्लासै मुनि पालै सुमति पंच कुमति दलनासै । मुनिसु लटाते भविजीव रखो बिश्वासै । मु० २ ॥ मुनी जीते मद खट दोय धरम सदभासै । गुरु गुणातणा गंभीर सुत्रकी राहासै । फिर लिया परीसा जीत करम कीया नासै । इम मिटादिया मिथ्यात्व कीया प्रकासै मु० ३ ॥ मुनि निरदूसण लेआहार सुध सुरतासै प्रभु सीतल मुद्रा आप पक्ष नहीं पासै । इम उग णीसहसैंतीस भाद्रवा मासै । गुणगाया श्रावक लाल तुमारा दासै । मु० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ लावणी श्री नेमनाथजी महाराजकी ॥

(२६) ॥ तुम महर करो महाराज मेरे सुख
ाई। मैं पूरव पुन्य प्रताप भक्ति तेरी पाई ॥
आंकडी] तुम जन्म लियो नेमिनाथ यादव कुल
ांहीं । मेरूपें महोच्छव इंद्रादिक कीयो आई
जव हुवाज मंगलाचार वटी वधाई । फिर सुर
समदृष्टि आय हेम वरसाई । तु० १ ॥ तुम तीन
लोकके नाथ सेवा देवी माई । तुम राजुलसी
राणीकुं खडी छिटकाई । फिर कर किरपा किरपाल
मुक्ति पोंचाई । तुम एसे दीनदयाल भक्त के सहाइ
तु० २ ॥ तुमले संजम महाराज केवल उपजाई
तुम समव सरणके बीच जिनंद रिध पाई । तुम
तार दिये भविजीव वांणी फुरमाई । फिर कल्याण
कनिरवाण सिद्ध पद मांही । तु० ३ ॥ तुम असरण
सरण अखंड सुजस रह्यो छाई । तुम नाम तणो

आधार लाल दिल मांही । तुम रखो लाज महा राज भूलियो नाहीं । तुम जगनायक जगनाथ बडे हो सांई । तु० ४॥ इति ॥

॥ अथ श्री उपदेश लावणी ॥

(३७) ॥ ध्यान जिनराज तणां धरणारे । ध्यान जिनराज तणां धरणा । एसंसार असार समझ नर आखिर है मरणा । [आंकडी] लख चौरासी वार अनंते पडा तोय फिरणा । अवसर पाय करै नहीं कारज फिर कबहै करणा । ध्या० १॥ पूरब पुन्य मिल्यो मांनवभव फिर उज्जल वरणा । जैन धर्म उपदेस पाय अब किम नीचे गिरणा । ध्या० २॥ ना तेरे मात पिता सुत बंधव ना पतनी परणा । ना तेरा माल खजाना मूरख नाहक दिल धरणा । ध्या० ३॥ रागद्वेस अरु विसय विकारा याकुपारि हरणा । लाल कहै भज नाथ निरंजन है

सच्चा सरणा । ध्या० ४॥

॥ अथ लावणी श्री जिनंद महाराज की ॥

(३८) ॥ जिनंद म्हारी अरजी सुण लीज्यो मैं अनाथ तुम नाथ सरण तोय चरणनकी दीज्यो [आंकडी] मोहराज मोय घेर लिया मैं माया संग धीज्यो । चोकीदार कसाय च्यार है नाथ पार कीज्यो जि० १॥ विपय विकार वसे दिल अंदर कुमति संग रीझ्यो । मान मस्त चिहुंगती मोय फेर नाथ सुमति दीज्यो जि० २॥ लोभ कहे मैं वडा कमाउ मोय मत तज दीज्यो । काम कुचाल सिखाय रह्यो जिनराज साहाय कीज्यो जि० ३॥ रागद्वेस दोउ चोर लुटेरा ताहि जुदा कीज्यो । लाल कहे तुम नाथ निरंजन सुद्ध समकित दीज्यो जि० ४॥ इति ॥

॥ अथ पद ॥

(३९) ॥ जैनी होय जिन प्रतिमा निंदै बहु संसार वधावत हैं रे [आंकडी] सुत्र विरुद्ध जो पंथ चलावत वोही मिथ्यात कहलावतहें रे जैनी० ॥ १ ॥ स्याद वाद को समझत नाहीं खोटा अर्थ लगावत हें रे जैनी० २॥ भक्ष अभक्ष का भिन्न नहीं जाकुं मखन सहत सव खावत हें रे जैनी० ३॥ लाल कहै औसे नर जगमें डूबत हेंऽरु डूवावत हें रे जैनी० ४॥ इति ॥

॥ अथ सतवन ॥

(४०) ॥ जैनी होय जिन प्रतिमा पूजै मन वंछित फल पावत हेंरे । [आंकडी] रावण राजा नाटिक फलसे गोत्र तीर्थकर कहलावत हें रे॥ जैनी १ ॥ सती द्रोपदा प्रतिमा पूजी ग्याता साख भरा वत हें रे जैनी० २ ॥ चारण मुनिवर प्रतिमावंदण

कुं रुचक नंदीस्वर जावत हे रे जैनी० ३॥ लाल कहै जिन भावै पूज्यां जन्म मरण मिट जावत हें रे जैनी० ४॥ इति॥

॥ अथ श्री रिषभदेव स्तवन॥

(४१)॥ दीन दयाल म्हारा दीन दयाल सेवा प्यारी लागै म्हारा दीन दयाल [आंकडी] झीणो मारग थांरोरे। भवी जीवा आधारो रे म्हा० १॥ वाणी अनुसारै रे। केई जीव तारै रे म्हा० २॥ धुलेवारी वाटे रे। फरस्या पातक नाठे रे म्हा० ३॥ लाल लीयो साहारो रे। करो निस्तारो रे म्हा० ४॥ इति॥

॥ अथ स्तवन॥

(४२)॥ तारो तो सही म्हारा प्रभुजी तारो तो सही। हेजी म्हारो जनम मरण भय मेट

जिणंद मोय तारो तो सही [आंकडी] ॥ वार अनंता गत च्यारुंमें रुलीयो तो सही । हेजी काहु विध पार उतारो नाथ थांरी सरण तो गही ता० १ ॥ तुम हो दीनानाथ दया निधि निश्चै तो भई हेजी प्रभु विन सहाय करण मोय स्वामी अवर तो नहीं ता० २ ॥ मैं अपराधी वहु परमादी कव हुन भक्ति थई । हेजी पुरव पून्य चरण तोय भेट्या धूलेवा मांहीं ता० ३ ॥ मुक्ति महल में आप विराजो सुणियो तो सही । हेजी लाल चरण को दास आस जिन पूरो तो दई ता० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुविधी जीन स्तवन ॥

(४३) ॥ राग मांड ॥ सुविधी जिनंद हेजी सुविधी जिनंद म्हानै प्यारा लागो छो जी सु० [आंकडी] सुग्रीव कुल जायो रामा राणी नंद । म्हा० १ ॥ जनम काकंदी जोग ज्ञान सुख कंद ।

लंछन मगर जानो मुख जैसे चंद म्हा० २॥ पूरव लक्ष दोय आयुनो संबंध । सिखर समेत निरवाण जिन चंद म्हा० ३॥ चरण सरण चाहे सुर नर इंद । लालकुं दासजाणी मेटो भव फंद म्हा० ४॥

॥ अथ माहावीर स्तवन ॥

(४४) ॥ चाल हंजाकी ॥ थांपर वारीहो जिन जी । माता त्रिसला देवी कूखे अवतरया होराज [आंकडी] असाढ सुकल छठने चव्या महाराज थांपर वारीहो जि० प्राणत नाम प्रसिद्ध स्वर्ग दसमें थकी होराज थां० १॥ सिद्धारथ राजा कुलमहाराज थां० जन म्या श्री वर्द्धमान जिणंद चोवीसमां हो राज थां० २॥ चैत्र शुक्ल तेरस तिथी महाराज । थां०। क्षत्रीय कुंड मझार जनम जिनराजनो हो राज थां० ३॥ सुर पाति स्नात्रोत्स्व करै महाराज। थां०। मेरु गिरपै

जाय इंद्र चउसठ मिली हो राज थां० ४॥ लंछन केसरी दीप तो महाराज।थां०।आयुनो संवंध बहोतर बरसनो हो राज थां० ५ ॥ देहमानस सहाथनो महाराज ।थां०।पदवी राज कुमार वरण कंचन भलो हो राज थां० ६ ॥ मिगसर वदी एकादसी महाराज । थां० । दिक्षा ग्रही महाराज साली वृक्षनै तले हो राज थां० ७ ॥ ज्ञान तिथी दसमी सुदी महाराज ।थां० । ऋजुवालुका नदी तट मास बैसाख में होराज थां० ८॥ कार्तिक कृष्ण अमावस्या माहाराज।थां०।पावा पुरी निर्वाण कल्याणक भूमीका होराज थां०९ ॥दास लाल इमवीनवे महा राज।थां०।सकल संघ सुखकार जिणंद गुण गावता हो राज थां० १०॥ संम्पूर्ण ॥

॥ अथ चोविस जीन स्तवन ॥

(४५) ॥चाल झमाकड़ा की॥भवियण जिनवर

भेटो भावसू रे। तारण तरण जिहाज [आंकडी] भवियण रिषभ अजित संभव धणीरे। अभिनंदन म्हाराज । भ० १ ॥ भावियण सुमति पदम सुपासजीरे। चंदा प्रभु म्हाराज भ० २॥ भवियण सुवाधि सीतल श्रेयांस जीरे। वास पूज्य महाराज भ० ३॥ भावियण विमल अनंत धरम धणीरे। सांतिनाथ महाराज भ० ४॥ भावियण कुंथु अर मल्लिनाथ जीरे। मुनि सुव्रत महाराज भ० ५॥ भवियण नमि नेम प्रभु पास जी रे। वरध मान महाराज भ० ६॥ भावियण जिन चोवीसे इमकह्या रे। वीत राग महाराज भ० ७॥ भवियण जिन पूजा भक्ति करो रे। सरसी थांरा काज भ० ८॥ भावियण लाल कहै जिन सेवतां रे। निश्चै रहसी लाज भ० ९॥ इति ॥

॥ अथ श्री जिनंद स्तवन ॥

(४६) ॥ ठुमरी राग पीलुकी ॥ लागैरे जिनंद

मोय प्यारो । प्यारो प्यारो प्यारो [आंकडी] ना काहूसे प्रीत नाथके । नाकाहू से खारो ला० १ ॥ नाकाहू के सामिल सांवरो । ना भावियण से न्यारो ला० २ ॥ वीत राग करूणा के सागर । भव भय भंजण हारो ला० ३ ॥ लाल कहै एसे गुण जामें सोही नाथ हमारो ला० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पारसनाथ स्तवन ॥

(४७) ॥ चाल नागजी की ॥ पासजी तु मुक्ति दातार रे । जिन सासण स्वामी सोभतो रे जी [आंकडी] पासजी भूलो तिहारो नामरे । हूं चिहूं गति में रुलतो फिरयो रे जी पा० १ ॥ पासजी असुभ करम दीवी मार रे । मनै अलगो राख्यो आप सुं रेजी पा० २ ॥ पासजी मैं अपराधी जीव रे । म्हारा अवगुण नाथ विसार जो रेजी पा० ३ ॥ पासजी किम उतरु भव पार रे । मारो मन मूरख

समझै नहीं रेजी पा० ४ ॥ पासजी तारया केता जीवरे । थे नाग प्रमुष नें नाथजी रेजी पा० ५ ॥ पासजी कर किरपा किरपाल रे । मनें सम कित दीज्यो सांवरा रेजी पा० ६ ॥ पासजी लाल चरण रो दास रे । मारी आस जिनेस्वर पूरज्यो रेजी पा० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमनाथजी की स्तवन ॥

(४८) ॥ चाल ठुंमरी ॥ नेम जिणंद नें जोग लीयो । गिरनारी हमारो सांवरीयो [आंकड़ा] जगनायक जिनचद सांवरो । जादव कुल अवतार लीयो ने० १ ॥ तल चड़ी राजल कुं छांडी तोरण से रथ फेर दीयो ने० २ ॥ भव जल तारण दुख निवारण । सहसांवन प्रभु जोग लीयो ने० ३ ॥ लाल कहै केवल लेवांही । प्रभुजी को निरवाण थयो ने० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अभिनंदन स्तवन ॥

(४१) ॥ चाल जिला की ॥ प्रभुजी अभिनं-
दन जगवंदन जिन गुण गाउ हो । सुषकारी जिन
राज अभि० [आंकड़ी] प्रभुजी चउथ सुदी
वैसाख चवण तिथी थारी हो सु० १ ॥ प्रभुजी
जयंत विमान अनुतर माहिथी चविया सु० २॥
प्रभुजी जन्म कल्याणक स्थान अयोध्या नगरी हो
सु० ३॥ प्रभुजी माघ मास सुद बीज जन्म तिथी
पाइ हो सु० ४॥ प्रभुजी संबर कुल भये भानु
सिद्धार्था माता हो सु० ५॥ प्रभुजी सुवरण वरण
अनोपम लंछन कपीको हो सु० ६ ॥ प्रभुजी धनुस
तीनसो पचास देह परिमाणे हो सु० ७॥ प्रभुजी
पूर्व लक्ष पचास आयुनो मानो हो सु० ८ ॥ प्रभु
जी माघ शुक्ल द्वादसी दिन दिक्षा धारी हो सु०
९ ॥ प्रभुजी दिक्षा नगरी तेहिज वृक्ष प्रियंगु हो

सु० १०॥ प्रभुजी पोस वदी चवदस दिन केवल पायो हो सु० ११॥ प्रभुजी ज्ञान कल्याणक नयरी अयोध्या भूमी हो सु० १२॥ प्रभूजी कल्याणक निरवाण समेत सिखर गिर हो सु० १३॥ प्रभुजी मोक्ष तिथी वैसाख अष्टमी शुक्ला हो सु० १४॥ प्रभुजी किंकर लालनी आवागमण निवारो हो सु० १५॥ इति ॥

॥ अथ श्री वास पूज्य स्तवन ॥

(५०) ॥ राग सोरठ ॥ वंदो वासु पूज्य जिन राया । प्रभु अजर अमर पद पाया रे वंदोवास० [आंकडी] ॥ नयरी चंपा पंच कल्याणक । वसु पूज्य तात कहायारे वंदो० १॥ रक्तवर्ण लंछन महिसेका मात जया सुत जाया । आयु बहोतर लाख बरसनो धनुष सितर सम काया रे वंदो० २॥ कल्याणक कल्याणक सुरपति महोछव करे

हरषाया । संघ चतुर्विध समोसरण में वाणी सुण सुख पायारे वंदो० ३ ॥ पद निरवाण असाढ शुक्ल में चतुरदसी दिन पाया । अठदस दूषण रहितनाथ का लाल जिणंद गुण गाया रे वंदो० ४॥ इति ॥

॥ अथ स्तुति श्री आत्मारामजी की ॥

(५१) ॥ चाल लावणीकी ॥ मुनि आणंद बिजय महा राज वडे उपगारी । भवि वंदो सहित समाज सयल नर नारी [आंकडी] मुनि तज्या जो कुंगुरुसंग आतम हितकारी । भये जिन अज्ञा अनु-सार माहावृतधारी । मुनि स्वगुण पायो रत्न कुमति कर न्यारी। प्रभु पाले जोग अखंड बाल ब्रह्मचारी मु० १॥ मुनिषट काया प्रतिपाल उग्र बिहारी मुनि जीती इंद्री पांच सुमति उरधारी । मुनि राग द्वेस दीए मार क्षमासी कटारी । प्रभु लीए परिसह जीत आतमातारी मु० २॥ मुनि प्रतिबोधी पंजाव

आरज कर डारी । फिर खेत्र किते सुलटाये जाउ वलिहारी । प्रभु वाणी अमृतधार देसना प्यारी मुनि मिटा दियो मिथ्यात्व ग्रंथ रचेभारी मु० ३॥ मुनि सासन रहे दिपाय सुरी पद धारी। एसे अति सयवंत अणगार रहो जयकारी । इम पोस पंचमी कृश्न उगणीपट चाली । गुण गाया श्रावक लाल जात भंडारी मु० ४॥ इति

॥ अथ श्री गोडीचा पारसनाथजी का स्तवन ॥

(५२) ॥ चाल हींडाकी ॥ मंदिर हालो रे भाविभावे जिनजीरी पूजन करसांजी । मंदिर हालो रे [आंकडी] ॥ मंदिर में जिनराज विराजै सव देवन के देवारे । अष्ट द्रव्य ले विधी सु प्रभुजी की करसां सेवा रे मं० १॥ मूल नायक गोडी पास जिनेसर अश्वसेनजी के नंदा रे। सूरति मनोहर वारू कोटी चंदा रे मं० २॥ अजयनगर

उगणीसै बारे शुभ दिन मुहूरत दीठारे। माघ सुदी तेरसने प्रभुजी की हुइ प्रतिष्ठा रे मं० ३॥ मस्तक मुकट बिराजे प्रभुकै कानां कुंडल छाजै रे लाल कहै शुभ भावे भेट्या पातिक भाजैरे। मंदिर हालो रे० ४॥ इति संपूर्णम ॥

॥ पद उपदेशीः ॥

(५३) ॥ राग मांढ ॥ गोता मति मारो चेतन कोहै थांरो देस। कोहै थांरो देस लोभी कोहै थांरो देस। चेत क्युंनी चालो प्राणीको० [आंकडी] लखतो चोरासी भूला फिरो छो हमेस नरक तो सातिमें दुख पायो तें विसेस गो० १॥ गति तिर्यंच माहीं सुख नहीं लेस। सुखतो स्वर्ग मान्यो सोही ना हमेस गो० २॥ मिल्यो छै मानव भव आरज देस। करले उपाय अब मिटै ज्युं कलेस गो० ३॥ गुरू निग्रंथ जाको मानो उपदेस

लालके ज्ञान हिरदे करले प्रवेस गो० ४ इति ॥

॥ अथ उपदेसी लावणी ॥

(५३) ॥ अथ लावणी ॥ जगतमें मतलव की यारी । मात पिता वंधव सुत भगनी क्या प्रीतम प्यारी रेजग० [आंकडी] मतलव विना चाछ नहीं घालै क्या खट्टी खारी । मतलव होय जिमावे झुक२ नवी२ त्यारी जग० १॥ खांड गलै जव आंगण सोहें ज्यों आफू क्यारी । गांड गलै जव कहे नजीकी भुगतो थे थांरी जग० २॥ पाप करम कर कुटंव पालीयो सोभा लीवी भारी । परभव पाप भोगती विरिया देही तक न्यारी जग० ३॥ लाल कहै सव खेल खलकदा टांडा विणजारी खेवा पार होय उनहीका जिन आज्ञा धारी जग० ४॥ इति ॥

॥ दुहा ॥

गुणगाया भगवंतना मैं तुछ बुद्धि लाल
जोडकला जाणुं नहीं उपगारी नथमाल ॥ १
सुवालाल स्तवना किवी जिन चरणारो दास
भंडारी जसकरण सुत अजयनगर सुखवास ॥ २
उगणीसैह इकावनें भाद्रव शुक्ल विचार
सन अठारह चोणवें तिथी तेरस बुधवार ॥ ३
ओश बंश नख लूणिया । अजयनगर शुभ थान ।
छपवाई निज प्रेस में । जेठमाल सुत कान ॥
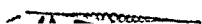
बालक भजन संग्रह

दूसरा भाग ।

कीमत -)॥ आना

कर्ता भूरामलजी मुशरफ
जयपुर

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

* बालक भजन संग्रह *

द्वितीय भाग ।

जिसको

मास्टर भूरामलजी मुशरफ़ ने बनाया ।

और

मन्त्री "सर्व हितैषी मंडल," जयपुर

ने

जैन प्रेस जयपुर में मुद्रित कराके
प्रकाशित किया ।

प्रथम बार २०००] Copy right [न्योछावर -)॥ आना

निवेदन ।

विज्ञ पाठक !

आज यह हिन्दी में दूसरा परिश्रम आपके सम्मुख उपस्थित है। यह कैसा है इसके कहने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जिन्होंने इस पुस्तक का पहिला भाग (यद्यपि यह जैनीलाल प्रिंटिंग प्रेस देवबंध में छपने के कारण छपाई के दोषों से नहीं बचाथा) देखा है वे इसके विषय को भली भांति जानते होंगे ; रही दूसरे भाग की बात सो " हाथ कंगन को आरसी क्या ? " आपके ही मौजूद है । किन्तु अपने पाठकों से यह सानुनय निवेदन करना ग़ैर मुमकिन न होगा कि यह ' अल्पज्ञ लेखक, ' दर असिल में ' अल्पज्ञ ' है, फिर भी इसने जो साहस किया है वह पहिले भाग पर दिखाई हुई आप ही की कृपा का फल है— और यदि भविष्य में यह कृपा इसी प्रकार वृद्धि पाती रही तो सम्भव है कि फिर कुछ भेट तैयार करके आपके सन्मुख उपस्थित होने का साहस हो ।

शेष निवेदन में मैं " सर्व हितैषी मंडल " के मन्त्री महोदय को सहस्रशः धन्यवाद समर्पित करता हूं कि (एक मात्र) जिनकी कृपा से यह पुस्तक प्रकाशित होके आपके करकमलों तक पहुँची ।

जयपुर
१५ फ़रवरी, १९१२ ई०।

निवेदक—
भूरामल सुशरफ़ (बालक)

* श्रीवीतरागायनम *

* बालक भजन संग्रह *

दूसरा भाग

मङ्गला चरण स्तुति ।

थियेटर चाल (झुकाओ सब सरको झुकाओ श्रीमहाराजा)

नमाओ सब मस्तक नमाओ, नमाओ सब मस्तक, नमाओ, श्रीदेवों के देव जिनेश्वर देव को, भक्ति से भविजन कीजे प्रणाम । टेर ॥

बजाओ बाजे बजाओ, बजाओ बाजे बजाओ। जिनवर का जस गावैं, मुकती को पावैं, " बालक " के सारे सिद्ध हों काम ॥ १ ॥

न० (२) श्रीजिनेन्द्र शरणागत स्तव ॥

थियेटर चाल (मेरे काज़ी साहेब आज सबक़)

तेरा शरणा लिया, तेरा शरणा लिया । आज विघन सब दूर हुआ ॥ टेर ॥

तारण तरण जिनेश्वर स्वामी , सब जीवन हितकार।
वीतराग, सर्वज्ञ, हितङ्कर, तुम हो पतित उधार।
तेरा शरणा लिया ॥ १ ॥
इस संसार महा बन भीतर, भ्रमते भ्रमते हारे।
तुम बिन कौन हमारा स्वामी ? जगसे हमको तारे।
तेरा शरणा लिया ॥ २ ॥
कर्म्म शत्रु दुख देते भारी, इनका होवे नाश।
निज गुण आतम जागृत होवे, केवल ज्ञान प्रकाश।
तेरा शरणा लिया ॥ ३ ॥
हमसे पतित अनेक उबारे, हमरा कौन ख़याल।
बालक छोड़ पिता अपने को, किससे करे सवाल।
तेरा शरणा लिया ॥ ४ ॥
धन्य घड़ी धन दिवस आजका, आये तुमरे द्वार।
सेवक " बालक " भजन तुम्हारे, गावै बारम्बार।
तेरा शरणा लिया ॥ ५ ॥

नं० (३) जागृति ।

मेरे भाइयोरे ! दिग्विजय धर्म्म की करना , चहुँ
दिश भाइयोरे । टेर ।

फैल रहा पाखंड जगत में , ताका खंडन करना।
ले तलवार ज्ञानकी जड़ता , जड़ा मूल से हरना।
जैनी भाइयोरे दिग्विजय० ॥ १ ॥
झूठे ग्रंथ वनाकर भोले, जीवों को वहकाये।
तिनकी पोल खोलदो वीरो ! भ्रम सारा मिटजाये।
मेरे भाइयोरे दिग्विजय ॥ २ ॥
कर्ता हर्ता वता ईश को , जाल रचा अतिभारी।
रक्षक वनाफिर भक्षक होता,अजवन्याय"वलिहारी"।
मेरे भाइयोरे दिग्विजय ॥ ३ ॥
"जिनमतसच्चाराष्ट्रधर्म्महै," शिवदायकसुखकार।
ज्ञान युक्ति अरु न्याय नीतिसे, परखो ! रतन जँवार।
मेरे भाइयोरे दिग्विजय ॥ ४ ॥
सोने का अव समय नहीं है, उठो ! वांह फटकार !! ।
तन, मन, धन न्योछावर कर अव, करो धर्म्म परचार।
मेरे भाइयोरे दिग्विजय ॥ ५ ॥
सत् मारग निकलङ्क देव का, करो सभी स्वीकार।
कर अनुकरण गुरुका,"वालक"हरो तिमिर दुखकार।
मेरे भाइयोरे दिग्विजय ॥ ६ ॥

नं० ४ शिक्षा प्रणाली का फ़ोटू ।

राग भैरवी—

करूँ मैं किस विधि अपनी बड़ाई, आ ! हा !! देखो !!! ।
मेरी पढ़ाई ॥ टेर ॥
शिक्षालय का शिक्षक बनके, देऊँ शिक्षा भाई ।
देश जाति की दशा न देखूँ, यही मेरी चतुराई ।
॥ करूँ ॥ १
जा विधि तोता रटा रटा कर राम नाम बुलवाई ।
सार न जाने राम नाम का "पंड़ित नाम धराई,, ।
॥ करूँ ॥ २
रटा रटा कर मग्ज़ बिगाड़ूँ, "गधा टेक मन भाई" ।
"बालक" मूढ़ मतिन के कारण, भारत ग़ारत भाई ।
॥ करूँ ॥ ३

नं० ५ बालक की प्रसन्नता ।

ग़ज़ल क़व्वाली ।

धरम जिनराज का हमको मुबारिक हो मुबारिकहो ।
॥ टेर ॥
जनम जबसे लिया हमने, न छूआ मांस मदिरा को।
शहदके भेद को जाना, मुबारिक हो मुबारिक हो।

धर्म्म जिन० ॥ १ ॥

अनौचित वस्तु खानेसे , बुराई वहुत होती हैं ।
अभक्ष उनकोकही "जिन" ने मुवारिकहो मुवारिकहो ।

धर्म्म जिन० ॥ २ ॥

सुमंगति प्राप्त होनेसे, सहज में काज वनते हैं ।
मिला यह जोग सव हमको,मुवारिक हो मुवारिक हो ।

धर्म्म जिन० ॥ ३ ॥

जीव, पुद्गल, यही दो द्रव्य, सृष्टी के प्रणेता हैं ।
नहीं कोइ आदि इनकी है, मुवारिक हो मुवारिक हो ।

धर्म्म जिन० ॥ ४ ॥

"जीव" में चेतना गुण है, "नहीं पुद्गलमें यह गुण है" ।
स्पर्श रस गन्ध रूपी है, मुवारिक हो मुवारिक हो ।

धर्म्म जिन० ॥ ५ ॥

मोक्ष मारग में यह हैं तत्व, जो सातों वताये हैं ।
इन्हीं तत्वोंमें सव ततहै, मुवारिक हो मुवारिक हो ।

धर्म्म जिन० ॥ ६ ॥

पुण्य अरु पाप सातों में, मिलाये नो पदारथहों ।
समझना ही पदारथ है, मुवारिकहो मुवारिक हो ।

धर्म्म जिन० ॥ ७ ॥

जीवके रूपको पुद्गल, ढके बैठा है मुद्दत से ।
बुरा इस कर्म्म का होवे, मुबारिक हो मुबारिक हो।
धर्म्म जिन० ॥ ८ ॥
भेद इन आठ कर्म्मों का, बताया कर्म्म रहितों ने।
हो निजकल्याण समझे से, मुबारिक हो मुबारिक हो।
धर्म्म जिन० ॥ ९ ॥
देव अरिहन्त गुरु निर्ग्रंथ, दया मइ धर्म्म जग तारक ।
इन्हीं का शरण "बालक" को मुबारिक हो मुबारिक हो।
धर्म्म जिन० ॥ १० ॥

नं० ६ जाति की दुर्दशा और उसका सुधार ।

चाल (मज़ा देते हैं क्या यार ! तेरे बाल)—

करिए शिक्षा का परचार जात्युन्नति के (जात की—
उन्नति) करने वाले ॥ टेर ॥
जग में छायरहा अज्ञान, उठगया धरम करम का ज्ञान।
होगइ अब तो पूरी हान, जागो! जागो!! सोनेवाले ।
॥ करिए ॥ १
विद्या, धन, बल, दिया गँवाय, घरका माल पराये खायँ।
भिक्षा पर घर माँगन जायँ, कायर नाम डुबानेवाले ।

॥ करिए० ॥ २

करके वालक वृद्धविवाह, कर दिया सारा देश तबाह ।
लाखों विधवा भरतीं आह, चेतो चिता वनाने वाले ।

॥ करिए० ॥ ३

जग में प्यारी है सन्तान, लोभी लेवें उसके प्रान ।
फेरें छुरी गले पर जान, कन्या- विक्री करने वाले ।

॥ करिए० ॥ ४

करतेनुकतेसवदिलखोल,फिरतोनिकलजायसबपोल।
वेचें छोरा छोरी मोल, सत्यनाश मिलाने वाले ।
(दो दिन लड्डू गुड़ाने वाले)॥ करिए ॥ ५

'पापी पाप करें दिनरात, पैसा जोड़ जिमावें जात ।
घरके रोवें सारी रात, धन की धूल उड़ाने वाले ।

॥ करिए० ॥ ६

गातीं भंड वचन कुलनार, जाती वेश्या जिनसे हार ।
सुनते तेल कान में डार, जोरू हुकम चलाने वाले ।

॥ करिए० ॥ ७

लड़ते घर घरमें नर नारी, करते रांड भडीका भारी ।
डूबी इस ही में है सारी, देखो अनपढ़ रहने वाले ।

॥ करिए० ॥ ८

बिद्या पढ़ो पढ़ाओ यार, करके सुरीति का परचार।
तबही होगा बेड़ा पार, नैया पार लगाने वाले।
॥ करिए० ॥ ९

बताओअबतोबिद्याज्ञान,बढ़ाओधनबलअरुसन्मान।
'बालक'ब नों धीर बलवान,क़ौमीख़िदमतकरनेवाले।
॥ करिए० ॥ १०

नं० ७ (जिनेन्द्र गुण गायन)
चाल (काँटो लाग्योरे)

जिन गुण गाओरे सुज्ञानी ! जासों सब संकट टरजाय। जिन गुण गाओरे सुज्ञानी०! ॥ टेर ॥
तीन जगत पति "जिन हितकारी" तारण तरण विरद के धारी। शिव मग दरसायो सुखकारी, "वस्तु स्वरूप बताय" ॥ जिन गुण ॥ १
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, महिमा गणधर बरनीजैसी,। कर्ता, हर्ता, रागी, न द्वेषी, निज- आनंद लखाय।
जिन० ॥ २
जिन दर्शन तें दुख सब जावै, निज आतम अनुभव- में आवै, मन वाँछित फल भवि जन पावै, जो जिन-

गुण नित गाय ॥ जिन० ॥ ३
भक्ति भाव से पूजनकीजे, द्रव्य आठ ले कर्म्म हरीजे।
रत्नत्रय गुण धारण कीजे, "वालक" शिवपुर जाय।
जिन० ॥ ४ ॥

नं० ८ (जिनवर की शान्ति छवि)
चाल—(लचकाती आवे पतली कमरिया–)

छवि प्यारी लागे शान्ति जिनन्दा तोरी सोहनी ॥ टेर
दर्शन तें पातक जावे, मन वांछित फल भवि पावे।
मूरत समकित समकित, ऑ हाँ, मूरत समकित
समकित गुण दायनी ॥ छविप्यारी ० ॥ १ ॥
निज पर भेद बतावे, आतम अनुभव दरसावे।
"बालक" परसत परसत, ऑ हाँ, मूरत परसत
परसत सुख कारनी ॥ छवि प्यारी० ॥ २ ॥

नं० ९ (स्त्री शिक्षा की अपील)

खूब पढ़ाओ नारीजन को, होय देश का ज्यों उद्धार। उठो वीरो ! अबतो उठो !! उठो झट बाहू फटकार !!! ॥ १ ॥ "स्त्री शिक्षा" की उन्नति कारण, करिए अब शिक्षा परचार। होय देश की

उन्नति जासे , सुख पावें सब ही नरनार ॥ २ ॥ जग रूपी रथ के दो पहिये , एक पुरुष अरु इक नारी । दोनों के सम हुये विना , नहिं चल सकती अच्छी गारी ॥ ३ ॥ देश दशा इस पर निर्भर है जात्युन्नति है इसके माँहि । लड़का छोटा जबतक रहता , रहता वह माता के पाँहि ॥ ४ ॥ माता अगर पण्ड़िता होवे , लड़का अति पंड़ित होता । माता अगर मूर्खनी होवे लड़का महा मूढ़ होता ॥ ५ ॥ दूषण नये नये जो इस पर , नित प्रति लगते हैं भाई । आदिनाथ क्यों शिक्षा देते ? निज कन्याओं के तांई ॥ ६ ॥ आंख उठाकर बाहर देखो ! खूब नारियां पढ़तीं हैं । यहां की भांति नहीं रे भाई ! मूरख दिन भर लड़तीं हैं ॥ ७ ॥ पूर्व समय की सब महिलाएँ पती-परापण होती थीं । पढ़ लिखि कर आपस में वो सब बीज कीर्तिका बोतीथीं ॥ ८ ॥ बिना पढ़े नारिन के प्यारो , नहीं देश का होय सुधार । इससे अब झटपट सब भाई , करिए शिक्षा का परचार ॥ ९ ॥ शिक्षा पाकर माता से ही "बालक"

बनता है विद्वान। यातें पण्डित बनो बनाओ, करो शीघ्र अपना कल्याण ॥ १० ॥

नं० १० (याद रखने की बात)
चाल—(भरने दे जल नीर ना छेड़ो-)

जपले तू जिनवीर ! ना भूलो ज्ञानी प्राणीरे , भजले तू जिनवीर ॥ टेर ॥
तू लख चौरासी भ्रमना , दुख जनम मरण नित भरता। क्यों ग़ाफ़िल हो अब सोतारे ? भजले तू जिन वीर ॥ ना भूलो० ॥ १ ॥
गति चार महा दुख दाई, कर जनम मरण उन मांही। तैंने यों ही आयु गँवाईरे ! जपले तू जिन वीर ॥ ना भूलो० ॥ २ ॥
यह नरभव दुर्लभ पाया , कुछ कारज बन नहिं आया। क्यों विषयों में बिलमायारे ! भजले तू जिनवीर ॥ ना भूलो० ॥ ३ ॥
निज ज्ञान जमा सब खोई, जिनजी से प्रीत न जोई। तेरे साथ सगा ना कोई रे ! जपले तू जिनवीर ॥ ना भूलो० ॥ ४ ॥

धन, जोवन, थिर नहिं रहता, जल मेघ सदा नहिं वहता। शुभ कारज क्यों नाहिं करताहै,! भजले तू जिनवीर ॥ ना भूलो० ॥ ५ ॥

यह देहसफल अब करिए, जग विषय वासना हरिए।
" बालक ? " जिन गुण मन धरिए, भजले तू जिन वीर ॥ ना भूलो० ॥ ६ ॥

नं० ११ (प्रभूजी से अर्ज़ी)

धुन—ग़ज़ल क़व्वाली।

सुना जस जग में बहु तेरा, जो तारोगे तो क्या होगा?।
अथा संसार सागर से, उबारोगे तो क्या होगा ॥ टेर ॥
पाप के भार से नैया, पड़ी भव बीच वहती है।
दया कर मोक्ष मारग पर, लगा दोगे तो क्या होगा। १ ॥
कर्म्म शत्रु करे ख़्वारी, नचावे नांच अति भारी।
जन्म अरु मरण की बारी निवारोगे तो क्या होगा। २ ॥
भटकते काल नादी से, न कोई अपना हम पाये।
तुम्हीं अपनेको हेस्वामी! जोअपनालो तो क्या होगा। ३ ॥
पिता रक्षक ही "बालक" का, जगत में होता आयाहै।
करें क्या प्रभु हम तुमसे, बताओगे तो क्या होगा। ४ ॥

नं० १२—(जिन गुण गान)

चाल—(हमने नाहीं देखा ऐसा राजा-)

जग में नाहीं, देखा "जिन" सा दूजा दाता ।
ज्ञानी, ध्यानी । सारा जग जिन का जस गाता ॥ टेर॥
"जिन" के जो दर्शन आता, आप से वो आप पाता ।
सम्पग वह रत्न लाता ॥ जग में ॥ १
हितकारी अरिहन्त जैसे, ना कोई पूज्य ऐसे बोलो !
बोलो जी बोलो, बोलो हाँ बोलो ! क्यों इनसा
गुणागर कोई हो बताओ ॥ जग में० ॥ २ ॥

नं० १३—कुरीति निषेध ।

(ग़ज़ल)

नचा रंडी भड़वे क्यों धन खो रहेहो ? ।
वृथा बीज पापों का क्यों बो रहे हो ? ॥ १ ॥
बुज़र्गों से पाई है इज्ज़त जो तुमने ।
उसे ख़ाक में अब मिला क्यों रहेहो ॥ २ ॥
यह नागन है काली, डसेगी लिपट कर ।
मिला दूध क्यों ज़हर बरसा रहेहो ? ॥ ३ ॥
ज़माने की झूटन है झूँठों को प्यारी ।

ज़ियाफ़त में आफ़त लगा क्यों रहेहो ? ॥ ४ ॥
हज़ारों रुपया जो लुटाते हो साहिब ।
ख़बर भी है घर की, कि क्या हो रहेहो ? ॥ ५ ॥
तरसती है गहने को जोरू बिचारी ।
उसे भी तो देखो ? कि क्या दे रहेहो ?? ॥ ६ ॥
इनामों में बच्चों से रुपिया दिलाकर ।
क़द्र उनकी दिल में बिठाते रहेहो ॥ ७ ॥
बिठा आगे बच्चों को देते नसीहत ।
"पसन्द किसको दोनों में तुम कर रहेहो" ॥ ८ ॥
सुशीला जो घरकी है लज्जवन्ती नारी ।
बराबर गवा तुम बुरा कर रहेहो ॥ ९ ॥
ज़माने की रफ्तार बदली है ऐसी ।
दुरा चारणी को सभी चाह रहेहो ॥ १० ॥
क्या माता बहिन ऐसी ही हैं तुम्हारी ? ।
रंडी के मुख से जो तुम सुन रहेहो ॥ ११ ॥
रखो कुछ तो इज्ज़त बड़ों की भी प्यारे ।
अरे बे हया ! क्यों हया खो रहेहो ? ॥ १२ ॥
" दया धर्म्म का मूल कहते हैं हिन्दू " ।
मगर गोश्त ख़ोरों को धन दे रहेहो ॥ १३ ॥

ज़रा आक़िलों की अक़ल देख लेना ।
" कि गाली के वदले रुपया दे रहेहो " ॥ १४ ॥
दिया जाये क्यों दोष ना ख्वांदों हीं को ।
कि विद्वान बदनाम क्यों हो रहेहो ? ॥ १५ ॥
पढ़े और अनपढ़ सभी हैं वरावर ।
लगा तेल कानों में सव सुन रहेहो ॥ १६ ॥
करो दूर घरसे बुरी रस्म को तुम ।
हुआ ज्ञान " वालक " क्यों फिर सो रहेहो ॥ १७ ॥

नं० १४ (जिनेन्द्र स्तुति.)

चाल—(मङ्गल नायक भक्त सहायक-)

भव दुख हारी, शिव सुख कारी, वीतराग पद धारी।
इन्द्रादिक तव गुण गावें , सो भी नहिं पार लहावें ।
हम मति हीना, शरणा लीना, लखि तुझे उपकारी। टेर
सव दोष रहित जिनेशो कगुण सुमरकर नित प्रतिनमों।
सर्वज्ञ और हितोपदेशी वीतरागी जिन नमों ॥
इन आदि गुण भूषित, सकल जगमान्य जिनवर पदनमों।
भव व्याधि हर जोकन्त निजरूप देवता को मैं नमों ॥
जिन लखि निज आतम भासे , अरु केवल ज्ञान-

प्रकाशे , जिन पद ध्यावें , शिव सुख पावें , निश्चय उर यह धारी ॥ भव दुख हारी ॥ १ ॥

नर्क गति के मांहि हमको घोर दुख सहना हुआ ।
ताड़न हुआ, तापन हुआ , छेदन हुआ , भेदन हुआ ॥
इक नारकी को देख दूजा नारकी लड़ने लगा ।
पूर्व भवका याद करिके बैर वह भिड़ने लगा ॥
जब लड़ लड़ के थक जावें, तब असुर कुमार भिड़ावें।
बैर चितावें, युद्ध रचावें, हर्षित हों अति भारी ॥ २ ॥
तिर्यञ्च गतिके दुःख लखिके , कांपता सबका जिया।
कोई मारे , कोई बांधे , छेदते पशु का हिया ॥
यज्ञ में पशुवन को डारें , पुण्य फल तामें कहें ।
देवियों की भोग सामग्री , पशूबध को कहें ॥
यह योनी महा दुख दानी, अब कर्मों की है निशानी ।
कपट पुष्टनी, भ्रमण दुष्टनी, पशुगति है दुखकारी॥३॥
शुभ कर्म्म योग प्रभावते , स्वर्गों में इन्द्राशन लहा ।
देख सम्पत्ति और की यह जीव मनमें कुढ़ रहा ॥
षट माँस पहिले ख़बर इसको कालने वहाँ पेदिई ।
गल माल मुरझी देखके फिर दुर्दशा इसकी हुई ॥
मनमें नहिं ज्ञान बिचारा,निज आतम हितनहिंधारा ।

वहाँसे आया नर तन पाया, मानुष देही धारी ॥ ४ ॥
नर जन्म सम नहिं देह दूजी याहि से मुकती लहै ।
यह मनुष्य ही तिर्थङ्करादिक चक्रवर्ती पद लहै ॥
ऐसे अमोलक जन्म को भी ज्ञान बिन खोते हैं हम ।
विषयोंमें फसकर दुःख पाते तो नहीं पछताते हम ॥
नहिं सम्यग्दर्शन धारा, नहिं सम्यक् ज्ञान विचारा ।
हिंसा चोरी झूँठ परिग्रह परवनिता रति धारी ॥ ५ ॥
विरद तारण तरण सुनके शरण तेरी में गही ।
संसार सागर से उवारो, अर्ज़ मेरी है यही ॥
भव बीच केई भव को धारे, कौन तारे ? आप बिन ।
यातें चरण की शरण लीनी, वेग तारो आप जिन ॥
मेरा जामन मरण निवारो, भव सागर पार उतारो ।
विरद निहारो, मोहि उवारो "बालक" शरण तिहारी ।६॥

नं० १५ कैसे बयान करें ।

चाल थियेटर—(ऐसे बहादुर जवान-)

कैसे करें हम बयान, तेरी शान । कैसे करें हम बयान
स्वामी जिनेश्वर भगवान, तेरी शान । कैसे करें
हम बयान ॥ टेर ॥

राग रु द्वेष ना लेश तुम्हारे, सबको दिया ज्ञान दान।
दान तेरी शान ॥ कैसे करें हम बयान ॥ १ ॥
आप तिरे औरों को भी तारे। तारक हो तीनों जहान।
जहान तेरी शान ॥ कैसे करें हम बयान ॥ २ ॥
सुर नर इन्द्र और धरणेन्द्र। गाते हैं जिन गुण का गान।
गान तेरी शान ॥ कैसे करें हम बयान ॥ ३ ॥
तीन जगत पति हे जिन स्वामी। "बालक" शरण
की है आन। आन तेरी शान ॥ कैसे करें हम बयान ॥ ४ ॥

नं० १६ (ग़ज़ल कव्वाली-)

लिया हम शरण जिन तेरा, जो तारोगे तो क्या
होगा ॥ टेर ॥
तरण तारण अहो स्वामी। पतित पावन हो जगनामी।
मुक्ति कारण हो शिवधामी, जो तारोगे तो क्या होगा ॥१॥
जगत नायक, सरब लायक, करम क्षायक, सकल ज्ञायक।
भक्त सहायक मुक्ति दायक, जो तारोगे तो क्या होगा ॥२॥
विघन हारी व सुख कारी, ज्ञान धारी जगत तारी।
हमारी आज है बारी, जो तारोगे तो क्या होगा ॥३॥
दया सागर उजागर हो, मुक्ति सागर गुणागर हो।
शरण "बालक" सुखागर हो, जो तारोगे तो क्या होगा ॥४॥

नं० १७ चाल—(नारगढ़ लेचाल ननाजी—)

मन्दिरजी में चलो मित्र जन, पूजन भजन रचावेंगे।
पूजन भजन रचावेंगे, जिनजी के गुण सब गावेंगे॥टेर॥
जिन दर्शन तें पाप जावे, अनुभव आवै आतम को।
भेद विज्ञान उदय हो घट में, चेतनपावै शिवपुर को॥१॥
शान्ति छवि के दर्शन से हो, शान्ति अपने भावों में।
दुखिया का दुख दूर होवे, सुख पावे वो निज मन में॥२॥
कर्म्म जीतना जो जन चाहें, सोध्यावें जिन मुद्रा को।
कायोत्सर्ग लगाके निश्चल, सुमरें पंच परम पद को॥३॥
जिनदर्शनसे "बालक" परसन, पावे शिवतिय राणी को।
"ज्ञाना वरणी" दूर होवे, जब गावें जिन वाणीको॥४॥

नं० १८ (तोरे नैना सितमगर जादूभेर)

तोरी शान्ति छवी मन प्यारी लगे।
तोरी शान्ति छवी सुख कारी लगे॥टेर॥
वीतराग छवि जिन तोरी लखिके।
भेद विज्ञान हृदय में जगे॥तोरी०॥१॥
शरण चरण प्रभू "जिन" तोरी धारी। "बालक"
शिव मग मॉहिं लगे॥तोरी॥२॥

नं॰ १९ (जागृती)

साहिबो ! सोते हो क्यों अबतो सवेरा होगया ।
सोते सोते लाख चौरासी का फेरा होगया ॥ टेर ॥
ख़ूब सोए उम्र भर , अब भी नहीं बिलकुल ख़बर ।
जान जाओ दिलके दिलमें, क्या तुम्हारा होगया ॥१॥
हाल अपने पर नज़र कर , ग़ौर तो फ़र्माइये ।
यह चमन गुल्ज़ार भारत, क्यों विराना होगया ॥२॥
ज्ञान गुण रोशन तुम्हारे , थे बड़े सबसे चढ़े ।
सारे गुण कहाँ जा छुपे , कैसे अँधेरा होगया ॥३॥
थे तुम्हारे पीछे जो इल्मों हुनर व्यापार में ।
इस क़द्र आगे बढ़े, पीछा भी मुश्किल होगया ॥४॥
ख़्वाब ग़फ़्लत छोड़कर , बेदार जल्दी हूजिए ।
ज्ञान का परचार करना , अब ज़रूरी होगया ॥५॥
तन, मन, लगाकर और धनसे, ज्ञानकी उन्नति करो ।
ऐकता के करने में अब , क्या बखेरा होगया ॥६॥
देश विद्या दस्तकारी आदि सब सिखलाइये ।
"बालकों"का बल बढ़ाना , बहुत मेरा होगया ॥७॥
आपका कर्तव्य पालन ही परम कर्तव्य है ।
दान कुछ विद्या में दीजे, कहना मेरा होगया ॥८॥

नं० २० चाल (जय जिन राजा, जय महाराजा)

जय जग तारक, जय हित कारक ।
धारक धर्म्म प्रणेता हो ॥ टेर ॥
सर्व गुणों कर पूजित हो तुम ।
तीन लोक कर सेवित हो ॥
तुम दया-धर्म्म परचारक हो ।
पातक हारी हो, करुणा धारी हो ।
सर्वज्ञ हितैषी भारी हो ।
वैराग्य रूप सुख कारी हो ॥ १ ॥

न० २१ चाल (कितने को बेचोगी वाला जोबन-)

प्रभू अवतो निवारो जामन मरण ।
जामन मरण हाँ आवा गमन, अवतो ॥ टेर ॥
भ्रमत भ्रमत भव वन में हारे ।
आन लिया अव तेरा शरण ॥ अवतो० ॥ १ ॥
आन देव बहुतेरे सेये, ।
तो भी मिटा नहिं जगका भ्रमण ॥ अवतो० ॥ २ ॥
"बालक" की भव बाधा मेटो, ।
तुम हो प्रभूजी तारण तरण ॥ अवतो० ॥ ३ ॥

द्वितीय भाग समाप्त

ग्रामोफ़ोन।

ग्रामोफ़ोन एक निहायत आला दर्जे के गाने की सुरीली कलहै जिसका होना हर घर में ज़रूरीहै मगर असली होना चाहिए जिस पर कुत्ते का निशान होताहै नक़ली ख़रीदना रुपये को कूए में डाल देनाहै असली सिर्फ़ हमारी दुकान मुत्तासिल हवा महल पर मिलताहै दूसरी जगह नहीं मिलसकता कलकत्ता, बम्बई, दहली, वग़ैरा की क़ीमत पर जयपुर में दिया जाताहै क्योंकि हम ग्रामोफ़ोन कम्पनी के बाज़ाबता एज़न्ट हैं २५) से १५०) तक ग्रामोफ़ोन हर वक्त दुकान पर मौजूद रहते है हर महीने नये रैकार्ड आते रहते है क़ीमत सात इञ्ची १) दस इञ्ची २) दस इञ्ची डबल ३) ज़ोनुफ़ोन दस इञ्ची डबल रैकार्ड २) डिबिया सुई ग्रामोफ़ोन जिसमें दोसै सुई होतीहैं ॥) ज़ोनूफ़ोन ।) आने सिवाय ग्रामोफ़ोन और ज़ोनूफ़ोन के न कोई बाजा या रैकार्ड अच्छा होताहै न सूई नक़ली सूई से रैकार्ड ख़राब होजातेहै ।

अलावे इसके हर क़िस्म का सामान बहुत किफ़ायत से मिलता है हारमोनियम बहुत मज़बूत और सुरीले सिङ्गिल २२॥) व २५) डबल ३५) व ४०) पफ़ की सिलाई की मेशीन जो इस वक्त तक तमाम सिलाई की मेशीनों में सबसे आला दर्जे की साबित हुई है हाथ की ५०) पैर की ७५) ।

रासकोप असली घड़ी जिसकी मज़बूती तमाम ज़माना जानता है १२॥) रासकोप सिस्टम घड़ी २।) वा २॥) वो ३) कलाई की घड़ी मये तसमा ३॥।) चांदी की घड़ी ४॥) आठ रोज़ा घड़ी ७) चांदी की १०) घन्टे गोल दीवार के आठ रोज़ा आठ इञ्ची ६॥) दस इञ्ची ७) इङ्गलिश घन्टे दो हफ्ते की चाबी के निहायत मज़बूत और ख़ूबसूरत राजाओं रईसो के क़ाबिल १६) से ४०) तक ।

नोट—ग्रामोफ़ोन व रैकार्ड और पफ़ की सिलाई की मेशीन जयपुर से बाहर भी हर रेल के स्टेशन पर इसी क़ीमत में दिये जावेंगे पैकिङ्ग और रेल ख़र्च भी हमारे ज़िम्मे होगा फ़रमायश के हमराह पांच रुपये आने चाहियें ।

अलमुश्तहिर मैनेजर राजपूताना ट्रेडिंग
कम्पनी मुत्तासिल हवा महल, जयपुर.

श्रीः ।

अचम्भे का बच्चा ।

अनोखा-उपन्यास ।

जिसको

बाबू काशीप्रसाद भार्गव

मालिक

भार्गव पुस्तकालय ने

निज भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित

तथा प्रकाशित किया ।

म २

॥ श्रीः ॥

❋ अचम्भे का बच्चा ❋

❋ अजीब उपन्यास ❋

प्रातःकाल के समय राजाने उठते ही घोड़े पर सवार हो प्रतिदिन के नियमानुसार शहर का रास्ता पकड़ा, वह मन्द मन्द वायु अनेक प्रकार के पुष्पों की सुगन्धि भांति भांति के पक्षियों की चुहचुहाअट चित्तको विचलित कर रही थी राजा प्रसन्नचित्त धीरे धीरे जारहा था, ज्योंही शहरके भीतर पहुंचा अचानक दृष्टि ऊपरको जा पड़ी ॥

सत्यवती रातभर की आलस्य से भरी दोनों नेत्रों को मींजती हुई कोठे पर खड़ी जमुहाई ले रही थी ज्योंही हाथों को नेत्रों से हटाया उसके चन्द्रमुख की चमक राजाके चकोर नेत्रोंपर पड़ते ही भौचक सा रह गया ॥ अहा !

यह क्या है इसवक्त चन्द्रमा कैसा है ? घोड़े की लगाम छोड़कर नीचे उतर पड़ा इच्छा हुई कि इस मोहनीमूर्ति को भलीभांति देख कर ही आगे को चलने का विचार करूंगा। वह नवयौवना राजा को देखते ही संकुचितसी होकर भीतर को चली गई ॥

राजा ऊपरको देखकर व्याकुलसा हो मन में कहने लगा कि वास्तव में यह स्त्री क्या है इस तरफ़ निकलनेवालों को घायल करनेवाली है इसके दोनों नेत्र कामकी कटारी के समान मेरे हृदयके पार हो गये हैं नहीं मालूम घायल कर किधर खो गई ऐसा ही विचार करते करते बहुत देर हो गई परन्तु फिर वह स्त्री नजर न आई ॥

राजा निराश हो गया आगे बढ़ने को दिलने गवाही न दी, इधर रास्ते में खड़ा रहना ठीक न समझकर सीधा अपने महल का रास्ता लिया महल

में आकर पड़ा रहा दरबार का समय समीप आगया मंत्रीने आकर द्वारपाल से पूछा कि आज क्या सबब है कि सरकार अभीतक बाहर नहीआये। यह कह कर एक बांदीको अन्दर भेजा बांदीने आकर जवाब दिया कि सरकार की तबियत इस समय ठीक नहीं है यह सुन मंत्री सरकारी काम करने पर तत्पर हुआ ॥

जैसे तैसे दिन बीत गया सायंकाल के समय राजा ने फिर उसी मोहनीमूर्ति के देखने का विचार कर अकेला ही चल दिया दिन छिप ही रहा था, सूर्य अस्त होते देखकर सत्यवती जल का लोटा हाथ में लिये कोठे पर आकर खड़ी हो गई आज रविवार सूर्य का व्रत है प्रायः बहुतसी स्त्रियां व्रत धारण किये हैं वैसेही सत्यवती भी व्रत धारण किये दो समय का जलदान तो दे चुकी है अब सायङ्काल का जलदान देने आई है ॥

राजा स्त्री को कोठेपर देखकर बड़ाही प्रसन्न हुआ और टकटकी लगाकर देखने लगा बाल बिखरे हुये रेशमी साड़ी पहिरे हाथ में जल का लोटा लिये जलदान देरही है स्त्री राजा को देखते ही साड़ी से मुख को छिपाकर तिरछी हो चली गई राजा फिर निराश हो मकान को चला आया थोड़ीदेर के बाद मंत्रीने आकर द्वारपाल से पूछा सरकार आज बाहर नहीं निकले सो दरियाफ्त करो इस समय कैसी तबियत है द्वारपाल ने बांदी को बुलाकर पुछवाया कि महाराज दीवान साहब आये हैं और आपकी तबियत का हाल पूछते हैं बांदी ने आकर के राजा से कहा राजा ने दीवान को अन्दर आने का हुक्म दिया बांदी ने आकर दीवान से कहा उसकी बात सुन दीवान राजा के पास गया और तबीयत का हाल पूछा राजा ने सब उस स्त्री का हाल सुनकर कहा अगर वह मुझे न मिली तो मैं

किसी काम का न रहूंगा जब से उस मोहनीमूर्ति को देखा है तब से दिल काबू में नहीं रहा है राजा की बात को सुनकर मंत्री ने हाथ जोड़कर कहा महाराज आपके मुख से यह बात शोभा नहीं पाती क्योंकि नीति में यह कहा है कि राजा को उचित है कि प्रजा को कभी बुरी निगाह से न देखें उसके राज्य में जितनी प्रजा है सबको अपने सन्तान की समान समझै कभी बुरी निगाह से न देखें सो महाराज आप यह क्या कहते हो पराई स्त्रीसे प्रीति करना महापाप है सुनिये कहा है कि–

दोहा ।

परनारी पैनी छुरी, तातें दूरहि भाज ।
रावण से राजा मरे, परनारी के काज ॥

सो हे महाराज ! आप ऐसे ज्ञानी होकर भी ऐसा विचारते हो थोड़ीसी जिन्दगी के लिये मनुष्य अनेक पापकर परलोक का भी सत्यानाश करता है

और पाप और पुण्य साथ जाता है बाकी सब ज्यों का त्यों यहीं पड़ा रहजाता है॥

कवित्त।

जमुना दधीच मानधाता दिलीप बलि, सागर औ सीबी औ युधिष्ठरादि जो भये। धर्म की ध्वजा को धौल व्योम लों बढ़ाय सबै, मन में न आवै कौन कब के कहां गये॥ द्रोणहू दुशासन दुर्योधन प्रतापी वीर, करण कृपादि कहूं धारता न यों लये। रावण लों रामलों धुरीण धीर देखलेहु, आये जिन जैसी तिन तैसे ही चले गये॥

महाराज आप ऐसे विचार छोड़कर राजकाज में लगिये यद्यपि मैं आपके समझाने योग्य नहीं हूं परन्तु इतना ठीक जानता हूं यह कि काम बुरा है॥

राजा मन्त्री की बात सुनकर बोला, तुम्हारा कहना सब ठीक है मगर सुनो——

दोहा।

तनक कंकरी परत ही, नैन होत बेचैन।
वे नैना कैसे रहैं, गड़त नैन में नैन॥
मन बहलावत दिनगयो, महाकठिन है रैन।
काह करौं कैसी करौं, बिन देखे नहिं चैन॥
मैंने जबसे उसे देखा है तब से दिलको करारी नहीं है खाना पीना सब भूल गया हूं जिस तरह वह मिल सके लाना चाहिये लगी हुई बुरी होती है॥

दोहा।

धन देके जिय राखिये, जिय दै रखियेलाज।
धनदै जियदै लाजदै, एकप्रीति के काज॥
धीरधस्यो नहि जात उर, पीर बढ़तही जात।
नैनलालची दरशबिन, छिनही छिन अकुलात॥
मन्त्रीनें कहा यदि ऐसा है ता आप चलकर मुझे उसका मकान बता दीजिये मे उसकें बुलाने की

फिक्र करूंगा राजाने कहा ऐसा ठीक नहीं पहिले यह देखना चाहिये कि वह भी मुझे चाहती है या सिर्फ मैंही उसे चाहता हूं सों जानने के लिये उसे एक पत्र भेजना चाहिये देखें वह क्या जवाब देती है ॥

राजाने एक पत्र लिखा प्राणप्यारी जिस दिन से तुझे देखा है दिल घबड़ा रहा है खान पान सब भूला है जब तक तू न मिलेगी दिलको किसी तरह चैन नहीं मिलेगा ॥

यह पत्र लिखकर एक दूती को पता बता कर दे दिया दूती उसी जगह आकर मकान में घुसगई अन्दर जाकर देखा तो वही स्त्री जिसकी सब पहिचान राजाने दूती को बता दी थी वह बैठी हुई पुस्तक पढ़रही है दूती भी जाकर उसके पास बैठ गई वह अकेली, इस वक्त दूसरा कोई नहीं है उसने राजा की दूतीसे पूछा तुम कौन हो मैंने आजतक कभी नहीं देखा दूती ने जवाब दिया मैं यहीं रहतहूं

एक चिट्ठी पढ़ाने की इच्छा से तेरे पास आई हूँ सत्यवती ने उसके हाथ से पत्र लेलिया और लिफ़ाफ़ा खोलकर देखा तो चिट्ठीपर राजा की तसवीर बनी है नीचे का हालपढ़ कर सत्यवती के दोनो नेत्रोंमें ललाई आगई क्रोधित होकर बोली कि तू यह चिट्ठी कहां से लाई क्याइसका जवाब ले गी दूतीने कहा हां॥

सत्यवतीने उस पत्र का जवाब लिखा श्रीमान् मै नहीं जानती कि सरकार ने मुझे इस लायक कैसे समझा मेरी और आपकी बात चीत कैसे में ब्राह्मण आप क्षत्री, मैं गरीब भीखमांगने वाली और आप राजा, यह बात आपके मुखसे शोभा नहीं पाती अतएव आशा है कि आप क्षमा करेंगे मैं किसी योग्य नहीं जो आपकी सेवा करसकूं॥

यह पत्र लिखकर दूती को देदिया उसने आकर राजाको दिया वह पत्र पढ़कर निराश होगया और

दूती से पूछा कि कुछ जबानी भी कहा ! उसने जवाब दिया कि सरकार पत्र देखते ही उसके नेत्रों में ललाई छागई और क्रोधित सी होकर पत्र लिख ने लगी, यह सुनके राजाने मंत्री से कहा कि पता लगावो उस को और कौन है वह क्या काम करते हैं इतना सुन मंत्री वहांसे चलदिया और वहीं आ-कर दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि उसका पति और वह ऐसे दो हैं उसका पति पंडिताई करताहै मंत्री राजाके पास आया और यह निश्चय किया कि किसी बहाने से उस ब्राह्मण को कहीं बाहर भे-जदेना चाहिये । एक चपरासी को बुलाकर पंडित के बुलाने को भेजा वह थोडी देर के बाद ब्राह्मणको साथ लेकर आया ब्राह्मण ने आशीर्वाद देकर कहा सरकार क्या हुक्म मंत्री ने कुछ देरतक शोचकर कहा हमने सुना है कि तुम पंडिताई बहुत अच्छी जानते हो हमें यह पूछना है कि हमारे सरकार का

एक अचम्भे का बच्चा भागगया है सो वह किधर को गया? यहां से कितनी दूर पर है।

इतना सुनतेही ब्राह्मण कांपगया शरीर सुन्न पड़ गया बड़ी देरके बाद धीरे से कहा सरकार में अपना पत्र घरमें भूल आया हूं अगर हुक्म हो तो जाकर ले आऊं दीवानने कहा अच्छा जाइये और पत्रा लेकर जल्द आइये॥

ब्राह्मण अपने मकान में आकर उदास चित्त पड़रहा सत्यवती ने पतिको उदास देख घरका सब काम छोड़दिया और वह चिन्ता युक्त होकर स्वामी के पास जाकर बैठगई और पूछने लगी कि हे प्राणनाथ! आज आपका चित्त ऐसा उदास क्यों होरहा है? वह बोला तू जाकर अपना कामकर स्त्रीने कहा कि आप को उदास देखतेहुये मुझ से काम कैसे होगा जबतक आप अपने उदास होनेका कारण मुझसे

न कहोगे तबतक मेरे चित्तको धैर्य्य कदापि न होगा उसने कहा कि राजा ने आज मुझे बुलाकर पूछा कि हमारा अचम्भे का बच्चा कई दिनों से भाग गया है सो बिचार कर बताओ किधरगया मैंने कहा सरकार मैं इस वक़्त पत्रा नहीं लाया अगर हुक्म हो तो मकानसे पत्रा लेआऊं सो स बहाने से चला आया अब क्या करूं मैंने तो कभी अचम्भे के बच्चे का नाम तक नहीं सुना कैसे बिचार में आवेगा और अगर न बताऊंगा तो न जाने राजा क्या करै इससे मेरे ख्याल में आता है कि मरजाना सबसे अच्छाहै ।

पति की बात सुन सत्यवती दिलमें समझ गई कि राजा का यह सब बहाना है जबसे मुझे देखा है तबसे कई बार आचुका है और इसी बहाने से मेरे पति को बुलाया था यह बिचारकर पति से कहने लगी स्वामिन्! आप किसी बातकी चिन्ता न करैं और अपने दुःख दूर करने का बिचार करै।

यदि ईश्वर सहायक है तो राजा क्या कर सक्ता है॥
आप इसी वक्त फिर राजा के पास जाइये और जैसा में आपको बतलाती हू वैसाही आप राजा से कहें। स्त्री की बात सुनकर ब्राह्मण कहने लगा कि क्यों मेरी जान की गाहक होती है वैसे तो घरमें पड़ रहने से एक दो दिन प्राण बचेगे भी और अगर तेरे कहने से राजा के पास जाके कोई बहाना किया भी तो चलने का नहीं मेरे प्राण नाहक में जायगे इससे यही बेहतर है कि खाकर सो रहना और अब राजाके पास न जाना॥

पति की बात सुन सत्यवती के आखों में आसू आ गये और हिचक हिचककर रोने लगी कि हे स्वामिन्। आप यह क्या कहते हो मेरे प्राण आप के मलिन मुख को देखतेही इस शरीर से अलग होने का विचार कर चुके हैं यदि आपकी यही मरजी है तो पहिले मुझे ही संसार से पृथक्

कर दीजिये बादको आप चाहे जो कीजिये ॥

ाह्मण ने कहा तो फिर और क्या करूंगा स्त्री हाथ जोड़कर बोली कि आप राजाके पास जाइये और कहिये महाराज मैंने बिचारा तो मेरे बिचार में यह आता हैं कि आपका अचम्भे का बच्चा यहांसे बहुत दूरपर है और उसका मिलना बड़ा कठिन है किसी की हिम्मत नहीं जो उसके पास जाकर पकड़े मैं अगर बड़ी कोशिश और तरकीबे करूंगा और किसी देवता का पूजन करूंगा तो उसकी सहायता से आशा है कि वह आपका अचम्भे का बच्चा हाथ लग जावेगा ॥

इतनी बात सुनकर ब्राह्मण चल दिया और स्त्री से कहने लगा कि यदि तू नहीं मानती है तो मैं राजा के पास जाता हूं अगर राजा समझगया कि यह बहाना करता है तो मैं अब लौटकर न आऊंगा कहीं जाकर शरीर को त्याग दूंगा स्त्री नें कहा

आप ईश्वर का स्मरण कर निस्सन्देह चले जाइये किसी तरह से घबड़ाइये नहीं ॥

स्त्री के बहुत आग्रह करने और समझाने से ब्राह्मण राजा के पास गया द्वारपाल से कहा कि महाराज को खबर करो कि ब्राह्मण आया है जिससे हुजूर ने अचम्भे का बच्चा दरियाफ्त कराया था द्वारपाल ने दरबार में जाकर खबर की कि सरकार एक ब्राह्मण आया है राजाने ब्राह्मण को दरबार में आने की आज्ञा दी द्वारपाल ने ब्राह्मण को दरबारमें भेजदिया दरबारमें पहुंचकर आशीर्वाद देकर ब्राह्मण बैठगया राजा ने पूछा महाराज क्या विचार में आया ब्राह्मण कहनेलगा सरकार मेरे विचार में तो यह आया है कि अचम्भे का बच्चा यहां से बहुत दूर पर है और बड़ीभारी मुसीबत और तरकीबों से मिलेगा राजाने कहा कि जिस तरह से मिलसके जाकर उसको लाइये और जो कुछ आपको चाहिये

सो आप लेजाइये देर न कीजिये जल्द ढूंढ़कर ला इये क्योंकि यह काम सिवाय आपके और कोई नहीं करसक्ता आप पर हमारा भरोसा है कि आप हमारे काम को जरूर पूरा करेंगे ॥

राजा की बात सुनकर ब्राह्मण ने कहा सरकार मैं जाता हूँ यह विचार करूंगा कि क्या क्या सामान उसके लाने में लेजाना पड़ेगा सोभी मैं विचारकर आप को बतलाऊंगा॰ यह बात कहकर ब्रह्मण फिर अपने घरको वापिस आया और निराश हो पड़रहा स्त्री उसका चेहरा देखतेही पहिचानगई कि फिर राजा न जाने क्या करेगा मालूम होता है कि आज फिर झगड़ा मेरे स्वामी के साथ लगादिया है ॥

मैं जानती हूं कि यह सब बातें राजा मेरे धर्म को नष्टकरने के लिये कर रहा है, यदि मेरे धर्म का द्वारपाल (रक्षाकरनेवाला) घट घट बासी जगदीश्वर रक्षक है तो फिर मेरे इस पतिव्रतधर्म रत्न

कौन छीन सकता है, हे परमात्मन् ! हे अन्याइयों के मुखभञ्जन करनेवाले जगदीश्वर! तुम्ही रक्षाकरोगे ॥

सत्यवती मन में यही कहते २ पति के पास आकर पूछने लगी हे प्राणानथ ! आप फिरभी उदासीही से घरमें आये हो सो यह क्या कारण है ? क्या राजा ने कुछ और बात पूछा है ?

ब्राह्मण ! हां भला राजा कब पीछा छोड़नेवाला है न जाने मुझसे क्यों नाराज है कि ऐसी बात जो कि मेरे बाप दादों ने भी न सुनी होगी पूछी है ? तेरे कहनेपर में गया था सो राजाने कहा कि बहुत जल्द आप अचम्भे का बच्चा ढूंढ़कर लावें ॥ और जो कुछ सामान आप को चाहिये सो आप यहां से लेजावें और किसी बात का अन्देशा न करें !

यह बात राजाकी सुन मैंने कहा सरकार मैं घर जाता हूँ और विचारूंगा कि क्या २ चीज अचम्भे

के बच्चे को पकड़ने में काम आवैगी सो ही आप से मांगूंगा, यह बहाना करके चला आया हूं अब मैं राजा से जाकर क्या कहूंगा सो मेरे ध्यान में वह बात नहीं आती है सिर्फ एक यही बात तो सहल मालूम पड़ती है कि किसी तरह से प्राण खोदेना चाहिये । यह सुन सत्यवती के नेत्रों से अश्रुधारा बहचली और पति से कहा कि आप क्यों घबड़ाते हैं अगर चार भुजावाला सहायक है तो फिर दो भुजावाला क्या करसकता है फिर भी मैं आपसे कहती हूं कि आप ईश्वर का स्मरण करें और जैसा मैं बताऊं वैसेही आप करते जाइये ॥

ब्राह्मण झुंझलाकर बोला कि तूतो मेरे प्राणोंकी ग्राहकहुई है बारबार राजाके पास भेजती है अगर किसी वक्त उसको क्रोध आगया कि यह बहाना करता है तो जानसे मरवाडालेगा स्त्रीने कहा मेरे कहने से आप एक बार राजाके पास फिर जायँ और कहें

कि सरकार मैंने विचारा तो मालूम हुआ कि बहुत रुपया खर्च करने और तकलीफें उठाने से अचम्भे का बच्चा मिलेगा जब राजा आपसे पूछे कि क्या चाहिये तब आप कहना कि सरकार पांच हजार रुपया खर्च के लिये दिलादीजिये ब्राह्मणने राजासे जाकर यही कहा ॥

राजाने खजाञ्चीको हुक्म दिया कि इस ब्राह्मण को इसी वक्तपांचहजार रुपया दियाजाय खजाञ्ची ने ब्राह्मण को बुलाकर कहा आप इस वक्त तो जाइये क्योंकि इतना रुपया मौजूद नहीं है फिर कभी लेजाना ब्राह्मण बोला कि मुझे अचम्भेका बच्चा तलाश करनेको जानाहै इससे आप मुझे रुपया देदीजिये, ब्राह्मणके बहुत कहने पर भी खजाञ्ची ने रुपया नहीं दिया लाचार होकर ब्राह्मणने राजासे जाकर कहा राजा ने खजाञ्चीको बुलाकर हुक्मदिया कि १००००)रुपया ब्राह्मणकेघर अभी भेजदो खजाञ्ची

दशहजार का नाम सुनतेही घबरागया कि अभी तो पांच हजार को कहाथा ब्राह्मण के शिकायत करनेपर दशहजार का हुक्मदिया इससे यही बेहतर है कि पांच हजार रुपया देदियाजाय, ब्राह्मण को बुलाकर खजाञ्ची ने पांच हजार रुपया देदिया ब्राह्मणने फिर आकर राजा से कहा सरकार दसहजार रुपया खजाने में शायद है नहीं राजाने खजाञ्चीको बुला क्रोध में भरकर कहा कि जिस कदर इस ब्राह्मण को रुपया चाहिये लेजानेदो खजाञ्ची राजाकी बात सुन सुन्न होगया कि न जाने क्या कारण है, इस ब्राह्मणसे राजा इतना प्रसन्न है इससे बेहतर है कि इसको दशहजार रुपया देदिया जाय यह खयाल-कर ब्राह्मण को बुलाकर कहा आप अपने घरको जाइये हम रुपया आप के घरमें ही भेजदेंगे॥

यह सुन ब्राह्मण घरको चलाआया और खजाञ्ची ने रुपया ब्राह्मण के घर भेजदिया रुपया पाकर

ब्राह्मण बड़ाही प्रसन्न हुआ और फिर कुछ देर बाद अफसोस करनेलगा कि अब तो राजाने रुपयाभी इतना दिलादिया है अब मै क्या बहाना करूगा और अचम्भे का बच्चा कहां से लाऊ गा स्त्री ने कहा आप घबड़ाइये नहीं सब भगवान् पार करैंगे रुपया तो घर में रखिये और आगेकी बात सोचिये और आनन्द से इस रुपयाको खर्च कीजिये ॥

ब्राह्मण ने कहा अब क्या कहती है स्त्री बोली कि आप राजा के पास फिर जाइये और कहिये कि सरकार अबमै जाना चाहता हूं सो आप एकपिजड़ा बहुत बड़ा तैयार करा दीजिये जिसमें बन्द करके मैं अचम्भे के बच्चे को लाऊ गा और वह पिंजड़ा कलतक मुझको मिलजाना चाहिये क्योंकि कल प्रातःकाल को मेरे जाने की साइत है इतनी बात स्त्री की सुनकर ब्राह्मण ने कहा कि अच्छा भलाजो राजा ने पिंजड़ा भी बनवा दिया तो फिर क्या कहूंगा

सत्यवती ने जवाब दिया कि पिंजड़ा तो बनवा लीजिये फिर आगे की बात ईश्वर के आधीन है जिसने यह सब बात बनाई है यही आगे का रास्ता बतावेगा ॥

इतनी बात स्त्री की सुनकर ब्राह्मण राजाके पास जाने को तैयार हुआ और अपनी खोपड़ी ठोककर स्त्री से कहने लगा कि तू नहीं मानती है तो ले मैं जाता हूं यह कहकर चलदिया और राजा के पास गया "राजा सोचरहा था कि आज ब्राह्मण चला गया होगा तो मैं उसके मकान पर जाकर आजकी रात आनन्दसे बिताऊंगा" राजा ब्राह्मण की सूरत देखतेही भौंचकसा रहगया और पूछा कि महाराज आप अभीतक गये नहीं सो क्या कारण है हमारा तो बड़ा भारी हर्ज होरहा है आप इधर उधर फिरते हो ब्राह्मण ने हाथ जोड़कर कहा सरकार मैं जाने को तैयार था परन्तु चलते समय एक बात मेरे ध्यान

में आगई कि अचम्भे के बच्चे को मैं कैसे लाऊंगा यह विचार मैंने पत्रा देखा तो मालूम हुआ कि अचम्भे का बच्चा बहुत बड़ा है इसलिये एक पिंजड़ा लोहे का बहुत बड़ा बनवा दीजिये और वह आजही रात को तैयार होजाय क्योंकि कल सुबह को जाने की सायत है अगर आज रात में पिंजड़ा तैयार न होगा तो अचम्भेका बच्चा हाथ आना बड़ा मुश्किल है ॥

यह बात ब्राह्मण की सुनकर राजाने मंत्री को बुला कर आज्ञा दी कि एक लोहे का पिंजड़ा बहुत बड़ा आजही रात में तैयार कराना चाहिये मंत्री ने हाथ जोड़कर कहा बहुत अच्छा सरकार ऐसाही किया जायगा और ब्राह्मण से कहा आप जांय आपके मकानपर पिंजड़ा भेजदिया जायगा राजा ने ब्राह्मण से कहा महाराज यह बतलावें कि आपके साथ कितने आदमी और भेजने पड़ेंगे या आप अकेले ही जायगे ब्राह्मण ने हाथ जोड़कर कहा सरकार अभी

में यह नहीं बता सक्ताहूं क्योंकि जितनी बात पत्रे
में विचारता हूं वही विचार में आती है सो अब मैं
यह बात घर जाकर बिचारूंगा आप पिंजड़ा बनवादें
यह कहकर ब्राह्मण घरको वापिस चलाआया घर
आकर स्त्री से कहा कि अब क्या करैगी अबतक तो
बहाना चला अब बहाने ही बहाने मेरे प्राणों से
बीतेगी सो अब तो कोई और उपाय नहीं, मरजाना
ही बेहतर समझताहूं स्त्री बोली आप कहिये तो सही
क्या बात है! ब्राह्मण बोला राजा ने कहा है कि
आप के साथ अचम्भे के बच्चे को लेनेके लिये कै
आदमी भेजे जायं सो मैं बहाना करके चला आया
हूं अगर राजाने किसी आदमी को साथ भेजा तो
कहां जाउंगा और अगर कहीं न गया तो राजा
समझजायगा इसने बहाना किया यह समझकर मुझे
मरवाडालेगा स्त्री ने पूंछा आप क्या कह आये हो
ब्राह्मण बोला मैंने कहा कि सरकार में पत्रा में देख

कर बताऊंगा कि कै आदमी मेरे साथ जाना चाहिये या कि मैं अकेला ही जाऊंगा जो बात पत्र से विचार में आवेगी वही की जायगी ॥

स्त्री बोली आप बहुत ठीक जबाब दे आये हो अब आप राजा से यह कहना कि सरकार विचार में आया है कि अकेला ही जाऊंगा दूसरे आदमी की परछाहीं तक देखने से अचम्भे का बच्चा हाथ नहीं आवेगा इतनी बात आप राजा से और कह आवें और पिंजड़ा लेआवें फिर आपको कभी राजा के पास जाने का काम नहीं पड़ेगा ईश्वर की कृपा होगी तो आपके घरमें ही अचम्भे का बच्चा आजायगा ब्राह्मण बोला कि मेरा तो ईश्वर पर ध्यान जमता ही नहीं क्योंकि जब से अचम्भे के बच्चे का नाम सुना है तबसे अचम्भे में पड़कर मैं ही अचम्भे का बच्चा बनरहा हूं स्त्री ने कहा स्वामी आप धैर्य रखिये महात्मा तुलसीदास जी ने कहा है कि

आपतिकाल परखिये चारी, धीरजधर्म मित्र अरु नारी ॥

विपत्ति के समय धीरज को कदापि न छोड़ना चाहिये धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री की परीक्षा विपत्तिके ही समय होती है विपत्ति में साथ न छोड़ै वही स्त्री जो समय पड़े पर काम आवै वही मित्र जो हमेशा सुख दुःख में कायम रहै वही धर्म और धीरज समझना चाहिये सो आप धीरज को न छोड़ और एकबार फिर भी राजा के पास जायं और यही राजा से कहैं कि सरकार मैं अकेलाही जाऊंगा सो हे प्राणनाथ ? आप घबड़ाते क्यों है घबड़ाने से काम न चलैगा ब्राह्मण बोला कि अच्छा तो अब फिर मैं राजाके पास जाता हूं और जो तू कहती है सोही कहूंगा ब्राह्मण चल दिया और राजा के पास पहुंचा और कहा सरकार मेरे विचार में तो ऐसा आया है कि एकही आदमी जाना चाहिये दूसरे आदमी की परछाहीं भी पड़ैगी तो अचम्भे

का बच्चा हाथ न आवैगा सा मैं अकेलाही जाऊंगा।

राजा ने कहा तो आप अब जाइये और आप अपने घरका कुछ भी अन्देशा न करैं हम सब बन्दोबस्त कर देंगे चार चपरासी आपके घर पर पहरा देने को भेज देंगे और हम खुद भी निगरानी रक्खेंगे मगर आपको चाहिये कि हमारा काम पूरा करके आवें और उम्मेद भी हमे यही है कि बगैर अचम्भे का बच्चा लिये आप वापिस न आवैंगे॥

राजा की यह बात सुनकर ब्राह्मण अपने घर को चलागया और सब हाल स्त्री से कहदिया स्त्री समझती ही थी ब्राह्मण ने कहा अब क्याकरूं राजा ने आजही जाने को कहाहै सो अब मैं कहांको जाऊ सत्यवती बोली कि आप ऐसा करें कि एक कोठरी के बीच में एक बड़ा भारी गड्ढा खोदकर उसमे शीरा गुड़का भरदें जिसका कि मैं शरबत पीकरही अपने दिन काटूंगी क्योंकि जबतक आपवापिस न

आजायंगे मुझसे रोटी बनाने खाने की सामर्थ्य न रहैगी और आपके बगैर मेरा दिल कैसे लगैगा सो आप एक कोठरी में बहुत उम्दा रुई भरादे उसी को बैठे मै रात दिन काता करूंगी ॥

ब्राह्मणने कहा कि कमबख्त तू अपना दिल लगानेका बन्दोबस्त तो करती है मगर मेरे प्राण अब कैसे बचेंगे सो उपाय नहीं बताती कि मैं कहां जाऊं स्त्री बोली आप इतना बन्दोबस्त रुई और शीरेका करदे फिर आगे मैं बताती हूं जिससे कि अचम्भेका बच्चा घर बैठेही मिल जायगा यह सुन ब्राह्मणने एक कोठरी में बड़ा भारी गड्ढा खोदकर गुड़का शीरा भरादिया और एक कोठरी में बहुत उम्दा रुई भरादी॥

स्त्रीने कहा कि अब आप राजा से जाकर यह कहैं कि सरकार मैं आज अचम्भेका बच्चा लेनेको जाता हूं आपके भरोसे पर मैं अपना घर दुवार सब छोड़े जाताहूं सो आप बन्दोबस्त करादीजियेगा जिस

से कि मेरे घरके लोगोंको किसी बातकी तकलीफ न होने पावै न जानेमें कब आया, वैसेही ब्राह्मण ने जाकर राजा से कहा--

राजा यह सुनकर अपने दिल में बड़ा प्रसन्न हुआ और मनमे कहनेलगा में तो यह बात चाहताही था कि ब्राह्मण किसीतरह से चलाजाय तो में इसके मकानपर जाकर अपनी इच्छा को पूरी करूं ब्राह्मण ने कहा महाराज आप किसी बातकी चिन्ता न करें और बेधड़क जाकर अचम्भे का बच्चा ले आवें ॥

राजाको आशीर्वाद देकर ब्राह्मण अपने घरको चला आया सायंकाल का समय समीप आगया स्त्रीने पति से कहा आप बाहर की कोठरी में आराम करें राजा के यहां से कोई पूछने आवेगा तो में कहदूंगी कि वह सरकार के लिये अचम्भे का बच्चा लेने को बाहर गये हैं ॥

ब्राह्मण स्त्रीकी बातसुनकर बैठकमें जासोया

सत्यवती ने बाहर से ताला डाल दिया और पतिसे कहा रात को जब मैं आपको बुलाऊं तभी आप चले आवैं स्त्री यह कहकर अन्दर चली गई उधर राजाने रात होतेही ब्राह्मण के घर आने का बिचार किया कि अब उस मोहिनीमूर्त्तिके पास चलकर आज की रात आनन्दके साथ बिताना चाहिये । आज बहुत दिन बाद यह अमूल्य समय हाथ आया है कई महीनों से इन्तजार था सो आज यह मौका चूकना न चाहिये ॥

आधीरात का समय था कुछ उजेली चमक रही थी राजा ने विचार किया कि अगर दस पांच आदमियों को साथ लेकर जाता हूँ तो पूरी बदनामी होगी और अगर अकेलाही जाता हूं तो रास्ते में पुलिसवाले रोकेंगे और कहीं कोई बात ब्राह्मण के घरमेंही हो गई तो पकड़ा जाऊंगा इस से चपरासी का भेष बनाकर राजा चल दिया रास्ते में सोचने

लगा कि पहिले तो यह अजमाना चाहिये कि स्त्री का भी कुछ प्रेम मुझपर है या नहीं क्योंकि कोई २ ऐसा भी कहते हैं कि एक हाथ से ताली नहीं बजती सो अगर सत्यवती का प्रेम मुझ पर न हुआ तो फिर वह आनन्द, नहीं मिलेगा जैसा कि मैं चाहता हूं ॥

ऐसी ही बातें सोचते २ राजा ब्राह्मण के घर पहुंचा और दरवाजे पर पुकारा स्त्री ने आवाज सुन कर जवाब दिया कि कौन है राजा ने कहा मैं हू. राजाका चपरासी राजाने ब्राह्मण के घरकी हिफाजत के लिये मुझे भेजा है और यह कहदिया है कि जब तक ब्राह्मण अचंभे का बच्चा लेकर न आजावै तबतक तुम उसी के दरवाजे पर रात दिन रहकर पहरा देतेरहो ॥

इतना सुनकर स्त्री ने सोचा कि यह कुछ भी न हुआ जो राजा न आया अब अचम्भे का बच्चा

कैसे बनेगा, इससे राजाको ही बुलाना चाहिये सत्यवती आंगन में आकर कहनेलगी कि सरकार से कहदेना कि अपनी हिफाजत में खुद करसक्ती हूं और दूसरा वही सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर कर सकेगा राजाने मेरे पति से वायदा किया था कि तुम्हारे चलेजाने पर तुम्हारे घर की रखवारी में खुद किया करूंगा किसी बात की चिन्ता न करो सो राजा को ऐसा नहीं चाहिये बात कहकर पूरी करना ही सज्जनों का काम है चपरासी के भेष में राजा था ही कहने लगा कि बेशक राजा ने यह बुरा झगड़ा ब्राह्मण के पीछे लगा दिया है भला तुम नो जानती होगी बताओ ब्राह्मण अचंभे का बच्चा लेकर कब तक लौट आवेगा॥

स्त्री बोली कि कल शामको ब्राह्मण अचंभे का बच्चा लेकर वापिस आजायगा कल घर आनेकी सायत है अगर कल न आया तो छः महीने बाद

आवैगा यह सुनकर राजा घबड़ागया कि यह तो कुछ न बना कि कलही ब्राह्मण वापिस आजायगा तो मेरे दिलकी दिलहीमें रहजायगी इससे जो कुछ करना है सो आजही करडालूं कल का क्या भरोसा क्योंकि प्राचीन कवियों ने कहा है–

दोहा।

कल्ह करंता आज कर, आज करंता अब।
पल में परलय होत है, फेर करोगे कब॥

अगर कल ब्राह्मण आयाही तो फिर कोई झगड़ा लगाकर कहीं बाहर भेजदूंगा॥

(चपरासी) राजा कहने लगा कि मै अभी जाकर राजाको भेजता हूं वह आकर खुद तेरे मकान का बन्दोबस्त करैगा स्त्रीने कहा अच्छा आप जाइये और राजा को भेजिये यह सुन राजा दिल मे बड़ा खुशी हुआ कि यह भी मुझे दिलसे चाहती है अगर यह न चाहती होती तो मेर बुलाने को हर्गिज न

कहती यह सुनकर राजा वहां से चलाआया और एक घण्टे बाद फिर ब्राह्मण के मकान पर पहुँचकर पुकारा सत्यवती जागही रही थी किवाड़ों के पास आकर बोली कौन है राजा ने जवाब दिया मैं हूँ राजा. तेरी हिफाजत को आया हूँ स्त्रीने फौरन किवाड़ खोलकर राजा को अन्दर बुलालिया और कहा कि आप कोठरी में बैठे मैं किवाड़ लगाकर आती हूँ राजा मकान के भीतर चलागया सत्यवती ने पति की कोठरी का ताला खोलकर पति को जगाया और कहा कि आप आध घण्टे के बाद मुझे पुकारें क्योंकि मैं इस वक्त अचम्भे का बच्चा बनारही हूँ सो अभी तैयार नहीं हुआ है आध घण्टे के बाद बनजायगा तब आप मेरे पास आजाइये और आप किसी बात की फिक्र अपने दिल में न करें ईश्वर सब पार करेगा ॥

यह कह कर सत्यवती राजा के पास आई राजा उसको देखकर कहने लगा कि मुँह को खोलकर

बैठा स्त्रीने इशारे से मुँह को खोलने से इनकार किया राजा बोला कि यह मैं जानता हूँ कि तू बड़ी लज्जावाली स्त्री है मगर मैं बहुत दिनो से तुझे देखने का अभिलाषी था इससे अबतो तू लाज को छोड़दे ॥

सत्यवती ने धीमे स्वर से कहा सरकार यह बता इये कि आप मेरी हिफ़ाजत करने को आये है या मेरे धर्म्मरत्न की चोरी करने को, आप राजा हैं और मैं गरीब भीख मांगनेवाली ब्राह्मणीहू मेरी आप की बराबरी नहीं आप जो चाहें सो करसक्ते हैं हमेशा सब प्रजा आपकी तावेदार है ॥

अब आप अचंभेका बच्चा चाहते हैं या मेरे धर्म को जबदस्ती छीनना चाहते हैं मे हरतरह तैयार हूं आपका जैसी इच्छा हो कीजिये परंतु पहिले आप यह बतजाइये कि मेरे पति के साथ आपने यह झगड़ा किसवास्ते लगाया है अगर अचम्भे-का बच्चा आपके पास था तो बतलाइये वह कैसा होता

है वैसाही मैं आपको अभी बनाकर दिखाती हूँ ॥
राजा बोला कि प्राणप्यारी मैंने तुझसे मिलने के लियेही यह सब झगड़ा किया है और इसी लिये इसवक्त आयाहूं सो तू मुखको खोल मेरे पास आकर निगाहे चार कर, स्त्री ने झुंझलाकर कहा सरकार यह वह लज्जा (शर्म) है कि जिसकी रक्षा (हिफाजत) मैंने होश सभारनेही से आज तक की है, यह वह मुखहै कि जिसको सिवाय अपने पति के दूसरे को स्वप्न मेंभी नहीं दिखाया है यह वह नेत्र हैं कि जिन्होंने आजतक पति को छोड़कर किसी देवता केतक दर्शन नहीं किये हैं यह वह (दिल है कि आज तक पतिके सिवाय किसी दूसरेकी तरफ) नहीं गया, आप एकबारगी ऐसा चाहते हैं सो कैसे होसकता है अगर मैं दिलको किसी तरह से समझा कर आपकी तरफ लाऊंगी तो लज्जा को काबू में लाना हंसी खेल नहीं हैं। इससे आप बैठें मैं जैसा

आपसे कहूं वैसा आप करें। राजा ने कहा कि कहो क्या कहती हो सत्यवती बोली सरकार मेरा कहना यह है कि राजा को चाहिये कि उसके राज्यमें जितनी प्रजा हैं सबको अपने सन्तान की समान समझे। सो आप मेरी बात को सत्य मानिये राजा ने कहा कि जो तू कहती है वह सब ठीक है परन्तु यह दिल किसी के काबू में नहीं है स्त्रीने फिर समझाया गरज इसी तरह सत्यवती राजाको बातों में छलती रही तबतक आध घण्टे के बाद ब्राह्मण आगया और दर्वाजेपर आवाज लगाई अपने पतिकी आवाज सुनकर सत्यवती ने कहा सरकार मेरा पति अचम्भे का बच्चा लेकर आगया सो आप बैठें मैं किवाँड़े खोल आऊं राजाने कहा अरी ने कम्बख्त यह क्या बकती है वह तो कई महीनों में लौटकर आवेगा अगर वह ऐसी जल्दी आजाता तो मैं यह झगड़ाही क्यों लगाता तबतक फिर ब्राह्मण ने आवाजदी सत्यवती ने कहा

सरकार वह पिंजड़ा भूलगये थे सो लेने को आये होंगे राजा यह सुनतेही कांपने लगा और कहा कि मुझ को क्या कहती है में कहां बैठूं ? सत्यवती ने कहा आप सामने वाली कोठरी में चलेजाइये राजा झट कोठरी के किवाँड़ खोलकर ज्योंहीं भीतरको पैर रखने लगा शीरावाले गड्ढे में गिरपड़ा स्त्री ने झट किवांड़ लगादिये और जाकर बाहर की किवांड़ खोलदी ब्राह्मण मकान के अन्दर आगया, राजा ब्राह्मणकी बोलीसुन-तेही अधमरा होगया और सोचने लगा कि आज जानकी खैर नहीं है एकतो यहदशा कि शीरेमें डूबरहा हूं दूसरे अगर ब्राह्मणसे स्त्रीने कह दिया तो वह जान से मारेगा। ब्राह्मण ने सत्यवती से कहा प्रिये मुझे भूख लगी है क्या कुछ खाने को है स्त्री बोली इस समय तो खाने को कुछ भी नहीं तैयार है परन्तु आप आध घराटे के लिये मुझे माफी दें तो मैं बहुत जल्द भोजन तैयार करदेती हूं, ब्राह्मण बोला तब

तक शरबतही पिला दे स्त्री ने कहा स्वामी शरबत के लिये बुरा भी नहीं है उसने कहा अगर बुरा नहीं है तो क्या, शीरा तो बहुत है शीरेही का शरबत पीलूंगा, कोठरी में शीरेका नाम सुनतेही राजा कांपने लगा हे परमात्मा । मालूम होता है कि अब जिन्दगी के दिन आज पूरे हो गये क्या सोचकर आया था क्या आनंद विचार रक्खा था सो क्या हो गया, अबकी बार प्राण किसी तरहसे बचजायँ तो अब स्वप्नमें भी ऐसा काम करनेका साहस न करूंगा हे सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर। क्या अब फिरभी गद्दी पर बैठनेका समय होगा या इसी शीरेके गड्ढे में प्राण जांयगे राजा इसी अफसोस में आकर रोने लगा स्त्रीने दीपक हाथमें लेकर दूसरे हाथ में शीरा लाने के लिये लोटा लिया ब्राह्मण बोला मैं लिये आता हूं स्त्रीने कहा अच्छा आप टहरें सत्यवती दीपकरखकर कोठरी के किवांड़ खोल राजा

के पास गई राजा हाथ जोड़कर कहने लगा कि अरी भाग्यवान् ! तेरे पीछे मैं इस दशा को प्राप्त हुआ अब क्या प्राण भी लेगी ? अब मुझे दूसरी जगह क्यों नहीं छिपादेती है ।

सत्यवती ने कहा सरकार मेरा इसमें क्या अपराध है देखिये जो बात महात्मालोग कह गये हैं वह सत्य ही समझनो चाहिये ॥

दोहा ।

बिना बिचार जो कर, सो पाछे पछिताय ।
काम बिगारे आपनो, जगमें होत हंसाय ॥

मनुष्यको चाहिये कि सब कामोंको बहुत बिचार कर करै बिना बिचारे करने से यही दशा होती है जिसका प्रमाण आप खुद मौजूद हैं । राजा बोला कि अब तो जो कुछ हुआ सो हुआ अबतो किसी तरह से मुझे कहीं दूसरी जगह छिपादे ॥

सत्यवती ने रुईवाली कोठरी खोल कर राजा से

कहा आप इस कोठरी में चले जाइये क्योंकि ब्रा-ह्मण शीरा लेनेको आता है सत्यवती की बात सुन राजा शीरा के गड्ढे से निकलकर रुईवाली कोठरी में छुपगया अन्दर जातेही रुईसे लिपट कर अचम्भे का बच्चा बनगया, अहा! अब तो वह कहावत सच्ची होगई "जो जस करे सो तस फल पावे" राजा अपनी ओर देखकर, हाय हाय क्या हुआ अभी तक तो कुछ ठीकथा परन्तु अब मुरदे से भी अधिक होगया इस ब्राह्मणी ने मेरे साथ न जाने किस जन्म का बदला लिया इससे तो शीरे की कोठरी में ही चैन से था हे परमेश्वर! अबतो पूरा आनन्द (मजा) रुई शीरे का मिलगया अब किसी तरह से मौत दे ॥

स्त्री पति के पास जाकर कहने लगी कि शायद आपको शीरेका शरबत कुछ नुक्सान करे इस लिये आप थोड़ीदेर ताम्बुल करें मैं अभी भोजन बनाती

हूं ब्राह्मणने कहा अच्छा सत्यवती ने बातकी बात में भोजन तैयार करके पतिको खिला दिया भोजन कर निश्चिन्त हो ब्राहण बोला कि कल सुबह होतेही राजा का चपरासी आवेगा तो अचम्भे के बच्चेका क्या बहाना करूंगा । सत्यवतो बोली स्वामी आप क्यों घबड़ाते हैं अचम्भे का बच्चा बनकर तैयार होगया है सिर्फ उसमें जान पड़ना बाकी है सो आप आज रातभर विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें प्रातः काल होतेही विष्णुभगवान् आपकी सहायता करेंगे और उसमें जान डालदेंगे मैं भी कई दिन से उन्हीं का व्रतधारण कियेहूं मेरी लाज के रखनेवाले वही विष्णुभगवान् हैं जो हृदयमें उनका ध्यानधर स्मरण करता है उसकी वह अवश्य सहायता करते हैं, कई भक्तों का उन्होंने दुःख निवारण किया है और हमेशा करते रहते हैं वह परमात्मा बड़ा न्याय-कारी दयालु है वह पापी कुकर्मी मनुष्यों को

शीघ्रही दंड देता है। उसकी महिमा अपरम्पार है॥

सत्यवती की भक्तिभरी बातें सुनकर ब्राह्मण विष्णुसहस्रनाम का पाठ करने लगा सुबह होतेही स्त्रीने रूईवाली कोठरी को खोलकर वही पिंजड़ा कोठरी के दरवाजे पर लगा दिया और राजा से कहा सरकार यदि अचम्भे का बच्चा आप लेना चाहे तो प्रसन्न होकर खुशी के साथ इस पिंजड़ा में तशरीफ लावें। मेरा पति अचम्भे के बच्चेले जला बैठा है अगर वह आगया तो डण्डों से मारकर आपको पिंजड़े में बन्द करेगा इससे बेहतर है कि आप मेरेही कहे से पिंजड़े में आजावें यह सुनतेही राजा पिंजड़े में आगया सत्यवती ने झट ताला लगा दिया और पतिको बुलाकर दिखाया कि यह लीजिये ईश्वरकी कृपा से अचम्भे का बच्चा घरमें ही बनगया॥

राजाका तमाम शरीर रूई से ढकाहुआ था सिर्फ दोनों आँखोंकी पुतलीही चमकरही थीं राजा सुकड़ा

हुआ पिंजड़े के एक कोने में बैठा था, ब्राह्मण अचम्भे के बच्चे को देखतेही अत्यन्त आनन्द में मगन होगया स्त्रीसे बोला प्रिये ! क्या यही अचम्भेका बच्चा है ? सत्यवती बोली हां प्राणनाथ यही है अब में इस पिंजड़े में ताला लगाये देतीहूं और ताली मेरे पास रहने दीजिये यह अचम्भेका बच्चा आप राजा के पास लेजाइये सिवाय राजा के किसी दूसरे को यह पिंजड़ा न देना अगर कोई इसकी ताली मांगे तो आप कह देना कि ताली कहीं गिर गई है ब्राह्मण दो मजदूरो के शिरपर पिंजड़ा रखाकर राजा के यहां गया द्वारपाल से कहा सरकारको खबर करो कि ब्राह्मण अचम्भे का बच्चा लेकर आया है किसी को भी यह खबर नहीं थी कि राजा कहां है द्वारपाल ने जवाब दिया कि सरकार की तबीयत अच्छी नहीं है ब्राह्मण ने कहा कि तुम कहला भेजो कि वह अचम्भे का बच्चा मँगालें द्वारपाल ने बांदी

को बुलाकर उसका संदेशा कहला भेजा बांदीने अन्दर जाकर रानियों से कहा रानी अचम्भे के बच्चेका नाम सुनतेही बाहर के दरवाजेपर हंसतीहुई आकर खड़ी होगई और दो बांदियों को भेजा कि पिंजड़ा उठा लावो और ब्राह्मण से कहो कि सरकार ने मँगाया है यह सुनतेही बांदी पिजड़ा को उठालाई और महल के अन्दर लाकर रख दिया, सब रानियां पिजड़े को घेर कर बैठ गईं और अचम्भेके बच्चे (राजा) से खेलने लगीं कोई तो राजा के लकड़ी मारने लगीं कोई कंकड़ फेंक २ कर मारने लगी कोई बांदी चिमटे से अचम्भे के बच्चे का कान उखाड़ने लगीं सबसे छोटी रानी ने एक छड़ी अचम्भे के बच्चे (राजा) के...में मारी ज्यादह लग जाने से राजा व्याकुल हो गया इधर उधर पिंजड़े में कूदने लगा कुछ देर बाद मन्त्री को खबर हुई कि ब्राह्मण अचम्भे का बच्चा लेकर आया है

मन्त्री ने आकर द्वारपाल से पूछा कि सरकार कहां हैं उसने कहा सरकार कल से बाहर नहीं निकले मन्त्री समझ गया कि वही अचम्भे का बच्चा बन गये होंगे अन्दर कहला भेजा कि सरकार दरबार में बैठे अचम्भे का बच्चा मांग रहे हैं रानियों ने पिंजड़ा दिला भेजा मन्त्री राजा की दशा देखतेही घबड़ा गया ब्राह्मण से ताली मागी ब्राह्मण ने कहा ताली गिर गई है मन्त्री ने पिंजड़े का ताला तुड़वा कर राजा को निकाला और नहलाकर कपड़े पहिराये ब्राह्मण से कहा तुमसे हम बहुत खुश हुये जितना रुपया चाहिये लेजाब ब्राह्मण इच्छानुसार धन ले गया कई दिनतक ।शरम के कारण राजा रनवास में नहीं गया इस उपन्यास के लिखने का अभिप्राय यह है कि बुरा काम कोई भी करै उसका फल शीघ्रही उसको मिलता है ॥

॥ इति अचम्भे का बच्चा समाप्त ॥

सज्जनमित्रों ! आशा है कि आपलोग इस छोटी सी पुस्तक को सहर्ष स्वीकार कर मेरे उत्साह को बढ़ावेंगे तो मैं इसी प्रकार की और भी पुस्तकें आप की भेंट करूंगा ॥

॥ इति ॥

सूचीपत्र ।

विधवा-विलाप

वैश्य सुधारक मण्डल, कोटा

का

ट्रेक्ट नं० २

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा

कलकत्ता द्वारा प्रकाशित।

द्वितीय बार २०,०००] सं० १९८० [मूल्य एक पैसा।

॥ श्रीहरिः ॥

बाल-विधवा

का

विलाप और उसके श्राप

हे महापापी अन्यायी बाप! तूने यह विचार नहीं किया था कि मैं अपनी बारह बरस की प्यारी बेटीको एक ४५।५० वर्षके ढींचके साथ व्याह रहा हूं जो कितनी जल्दी उसे छोड़ कर मर जावेगा? धिक्कार है मन्दिरमें आकर तेरे माला जपनेको! धिक्कार है तेरे लम्बे २ तिलक लगाने को! धिक्कार है ठाकुरजीके सामने तीन तीन घण्टा तक तेरे खड़े रहने और नित नेम करनेको! जिस प्रकार लोभी मनुष्य एक गायको कसाईके हाथ वेचकर उसको छुरीके नीचे उसके टुकड़े २ कराता है और उन टुकड़ोंको माँसाहारियोंकी हण्डीमे पकवाता है, उसी प्रकार तूने भी मुझको एक ४५ वर्षके बूड्ढे महाकसाईके हाथ बेंचकर उसके बुढ़ापेकी छुरीके नीचे मेरी चढ़ती जवानीको चूर चूर कराया है और मुझको उस गायसे भी ज्यादा तड़फाया है क्यों कि वह तो एक घड़ी भर ही के लिये तड़फती होगी लेकिन मुझको तड़फते हुए तो आज एक अरसा हो गया है। दिन और रात २४ घण्टे तक जलते हुए

अङ्गारों पर रहने पर भी मेरे प्राण नहीं निकलते। रे दुष्ट! वास्तवमें तू दिन दहाडे लूटनेवाला डाकू है। डाकू ही नहीं लेकिन डाकुओंका सरदार है। क्योंकि डाकू तो दूसरेको लूटते हैं लेकिन तूने तो अपनी सन्तानको लूटा है। डाकू तो चोरी करके अपना मुंह नहीं दिखाते, लेकिन तू बेशरम! कन्या विक्रीके पैसे से साहुकार बनकर दूकान पर अकडे हुए बैठा है। हजार धिक्कार है तेरे साहूकार बनने पर और लाखों धिक्कार हैं पञ्चोंको लड्डू खिलाने पर! अगर तेरे पास पैसा नहीं था तो तूने कुकर्म रचकर मुझको पैदा ही क्यों किया था और पैदा भी किया था तो क्या तू हल्दीका टीका लगाकर ही मुझको एक गरीब सुयोग्य पुरुषके साथ नहीं व्याह सकता था? तुझको शरम नहीं आती है कि तू तो टेढी पगडी बाधकर दुकानपर पाटा शरएकर बैठा है और तेरी एक बेटी विधवा होकर नरकके त्रास भोग रही है।

हे मेरी राक्षसी मा! हे मेरी दुष्टा काकी और भोजाइयो! आओ, तुमभी मेरे खण्डे २ हाथ देख जाओ। तुम तो अपनी जवानी गुजार देनेपर भी सोलह शृङ्गार कर रही हो, दिनमें पचास पचास मरतबा काच देखती हो, आवले नेवरियों और पोलोंकी झनकार मचाती हुई, तीन तीन लडी कनकनीके दस दस कुचियोंके झूमके लटका कर रमझुम २ करती हुई ज्योनारे में जीमने जाती हो, तुम्हारे मेंहदीके हाथोंमे रेशमी रूमाल बहार देते हैं, लेकिन मैं यह पूछना चाहती हूं कि मेरे वैधव्यका चित्र भी कभी तुम्हारी आखोंके सामने झूला है या नहीं! हे मेरी जिन्दगी पर झटका चलाने वाली माँ! मुझको थोडी सी

है कि जिस ज़मानेमें मेरी सगाईके पैगाम आया करते थे तब तू कहा करती थी कि मेरी बेटीकी आखोंका एक एक हीरा

ही एक एक हजार रुपयोंका है, मैं तो एक पाई भी कम न लूंगी विचारे सैकड़ों सुयोग्य वर घरका दरवाजा ढोक ढोक कर चले जाते थे लेकिन तू कभी टससे मस न होती थी। आखिरको हुआ वही जो तूने करना विचारा था क्योंकि तुझको तो मेरी छाती पर मूंङ्ग दलना स्वीकार था।

हे मेरी राक्षसी माँ को चुनड़ी पहनानेवाले और मुझको गोदमें उठाकर फेरा पढ़ानेवाले मामा कंस! इधर आकर देख भानजीकी फूटी हुई चूड़ियां तू भी गिनता जा। ४५ वर्षके खूसटको तू कुंवरसाहब कह कर बोला करता था वह मेरे बाबाकी उमरवाला खसम आज मुझको १६ वर्षकी उमर में अपने पीछे चूड़ियाँ फोड़नेके लिये अकेली छोड़कर इस संसारसे कूच् कर गया है।

हे लाड़ियां गाने वाली, मेरे व्याहके बतासे इकट्ठे करने वाली और मेरे व्याहमें उमङ्गसे उछलती कूदती फिरने वाली ब्राह्मणियो! सुन लो मेरे हृदयकी आह! याद रखना, मेरे व्याहके बतासे और लड्डू तुम्हारे पेटमें से फूट २ कर निकलेंगे यही त्रास तुम्हारे लिये काफी न होगा लेकिन तुमको भी आगामी जन्ममें बूढ़े नालायकके साथ व्याही जाकर मेरी तरहसे रांड़ बनना पड़ेगा।

हे मेरा सुहाग सोस गुथनेवाली नेवगनो! तुमने मेरे क्षणिक सुहागके लिये क्यों मेरे माथेको माँग पट्टी निकाली थी लेकिन तुमको तो अपना नेग लेना था।

हे खूनी मेंहदीसे मेरे हाथ पांव माँडनेवाली पड़ोसनो! तुमने भी तो नेगका एक एक नारियल लिया था। तुम भी मेरे श्रापसे नहीं बच सकती हो, आओ देख जाओ कि जिन हाथों को तुमने मेंहदीसे रचाया था, वे आज आसुओंसे भींगे हुए हैं!

हे पापी नोतारे! एक दिन तो तू मेरे व्याहका कसूमल केसरियां सरोपाव पहन कर उछलता कूदता फिरता था आज मेरे आंसुओंकी दो बुन्द तू भी पीता जा।

हे मेरे जिन्दे माँसकी दलाली लेनेवाले कन्या विक्रीके दलाल बूढे व्यास! मुझे याद हैं कि जब मैं अपनी भोली भाली उम्रमें बापकी गोदमें खेला करती थी तब तू मेरी सगाईके पैगाम लाया करता था, लेकिन मैं उस वक्त तो नहीं समझा करती थी। अब मुझको मालूम होने लगा हैं कि तूने ही मेरे बुढले खसमसे ५००) रिश्वत लेकर मेरे बापको लोंभमें फासा था। *मुझको ऊ टके गलेमें लटकानेमे तू ही तो मुख्य कारण हुआ* है, हे सोनेके कडे और कसूमल केसरिया सरोपाव पहननेवाले और टुकडयाके टुकडयां लड्डू भरकर ले जानेवाले सुगल्या राक्षस! तू तो उन लड्डूओंको खाकर नरकमें पडे हीगा लेकिन तूने उन लोगोंको भी डुबोया है जिन्होंने तुझसे बाजार-भावसे सस्ते भाव पर लड्डू खरीद खरीद कर खाये। तूने दलाली लेकर, मालूम नहीं, मेरे सामने ही कितनी रान्डे बनाई होंगी

हे नाईके बच्चे! तू भी तो बूढे व्यासके साथ बीन परनने का नाटक रचने गया था। तूने भी अवश्य ही उसके साथ दलालीमें भाग बटाकर मेरे लोभी बापको फुसलाया है इसलिये तू भी इस पापसे और मेरे श्रापसे नहीं बच सकता। लेकिन तुझसे तो क्या कहू? तेरी तरफसे तो लाडा मरो या लाडी मरो, तेरे तो तडाके टकोंमें कसर नहीं पडनी चाहिये। परन्तु यह तो अच्छी तरहसे यकीन कर लेना कि तू भी कीडे पड पडकर मरेगा।

हे मालीके लटके। मेरे लिये जो माला तू रोज गुथ २ कर लाया करता थो उसके पुष्प तो अभी मुरझाये भी नहीं है,

लेकिन पञ्चोंने मुझको थोड़ी सी देरके लिये घोड़ी पर चढ़ाकर मेरे सुहाग पुष्पकी कच्ची कलीको तोड़ मरोड़कर फेंक दी है।

हे पांच पांच मुट्ठी चवीनी खानेवाले, केसरिया रङ्गभात चाटनेवाले और मेरे खूनी पानोंसे अपनी जिह्वा रचाने वाले करातियों? जिस वक्त मुझको आप लोग बूढ़े के साथ ग्रहजोड़ा जुड़ाकर जनवासेमें लाये थे, उस वक्त तुम खुसमुस करके आपसमें बातें करते थे, लेकिन बूढ़े सेठजीसे लेन देनके दबावमें आकर आप चूं भी नहीं कर सकते थे। आपको मेरी परवाह ही क्या थी अगर आपको कुछ परवाह ही होती तो दोनें चाटनेको नहीं मिलते। धिक्कार है ऐसे पत्तल परोसे उड़ानेको लानत है तीन तीन रुपयेकी छतरियां ताने हुये बैल गाड़ियोंमें बैठकर बराती बननेको! आप बढ़ियां बढ़ियां पोशाक पहन पहन कर, खूब हजामतें बनवाकर बढियां इत्र और केशरञ्जन तेल लगा लगाकर बरातमें नही गये थे लेकिन मेरे सुहागपर छुरी चलानेके लिये तुम गये थे। आपने रङ्ग भात नही खाया लेकिन मेरी छातीपर पांव रखकर मेरे खूनको चूसा है! अरे नालायको! अब तो अनमेल विवाहोंकी ऐसी बरातोमें जाना छोड़ दो।

हे गांव गुरुजी महाराज! आपकी बगलमें यह पञ्चाङ्ग है या कतरनी? आपसे कहते हुए मुझे शर्म आती है। मुझे झांईसी याद है कि मेरे फेरेके वक्त आपने छः टके पैसेके लिये बड़ा फितूर मचाया था। लेकिन बूढ़ेके साथ हथलेवा मिलते वक्त आपने अपने धर्म शास्त्रोंको कहां रख दिया था? गुण मुण गुणमुण मन्त्र बोलनेमें आप बड़े चतुर हैं। लम्बा लम्बा तिलक लगानेमें धर्मके पक्के ठेकेदार हैं। दिन और रात आप गोमुखीमें अपना हाथ रखते हैं। मेरा लग्न भी तो आप ही ने

लिखा था और उसको पूरा बीस बिसवा मिला देनेपर सवा रुपया कलदार भी तो आप हीके करमें चेढा गया था और गड़-गडाट करते हुए नारियलसे माथा भी तो आपही का फोडा गया था उस वक्त आपका लम्बा लम्बा तिलक, रुद्राक्षको माला और गोमुखी कहा चली गई थी ? ऐसा कहनेसे मैं ज्योतिषको तो झूठा नहीं बतलाती लेकिन यह तो निःसङ्कोच कहूंगी कि आपने थोडेसे लोभमें आकर ज्योतिषके ही नहीं, लेकिन सारे धर्म-शास्त्रोंपर हड़ताल फेरकर मेरे समान सैकडों और हजारों ही नहीं, किन्तु लाखों राडें बना डी हैं, जो आपकी जानको रो रही, हैं और भारत माताकी साड़ीको आसुओंसे भिगो रही हैं। आप हमारे गृहस्थाचार्य हैं, ऋषियोंको सन्तान होनेका दावा रखते हैं, आप श्रेष्ठ वर्णधारी पुरुष हैं। लेकिन आपसे भी यह जानना चाहती हू कि मेरे कच्चे आसुओंकी आपको भी डकारें आती हैं या नही ? या उनको भी हजम कर गये हैं। तुमको मैं श्राप देती हू कि इस जन्ममें तो तुम कीडे पड पडकर मरोगे और आगामी भवमें तुमको भङ्गीके घरका नर-सूरडा बनकर अपनी सजा भुगतनी पड़ेगी।

हे वेश्याके भक्तो ! मेरे विवाहमें तुमलोगोंने बडी उमङ्गसे अपनी जेबोंसे निकाल निकालकर चौअन्निया और अठन्निया खाक कर डाली और तुमलोगोंने रण्डियोंको शराब कवाब खाने पीनेकी मदद देनेमें भी कमी न रक्खी। ऐ कलरत्तो ! जाति की सैकडों विधवाएं नरकका त्रास भोग रही हैं, उनके जीवन निर्वाहके लिये तुमने क्या सोचा है ? रण्डियोंके लिये तो तुम्हारी जेब रुपयोंसे बोझे मरती है और जातिकी असहाय विधवाओंकी सहायताके लिये तुम्हारे पास पैसा नहीं है। धिक्कार है तुम्हारे धनको ! यह बात सही है कि झूठ, चोरी और बेईमानीसे कमाया

हुआ पैसा किसी शुभ कार्यमें नहीं लग सकता। तुम्हारी दुकानोंमें घाटा लग जाता है, सट्टेमें दिवालिया बन जाते हो, मालकी चोरी हो जाती है, ये सजाएं तुम्हारी बदनीयतीकी हैं। चाहे तुम भगवानको खुश करनेके लिये मन्दिरोंमें चौके सङ्ग-मरमर जड़ाया ही करो, चाहे परमेश्वरको अनेक प्रकारकी रिश्वत दिया ही करो लेकिन पापका कमाया हुआ पैसा तो घाटे नुक-सान और वाहियात कामों ही में जावेगा। क्योंकि तुम्हारे परिणाम मिथ्यातत्वसे भरे हुए हैं। ऐ आंखोंके अन्धो! जातिकी विधवाओंकी हालत सुधारो। तुम्हारी बिरादरीकी हम मौजूदा विधवा बहु बेटियां आज व्यभिचारिणियां होकर रण्डियोंके समान गाने बजानेका कार्य करने लग जावें और तुमलोगोंकी साल-गिरहके जलसों और बिनोरियोंमें नाचने गानेके लिये आना शुरू कर दें तो मुमकिन है आप धनवान होनेका परिचय देकर हमारा सत्कार करें। लेकिन क्या जबतक हम सदाचारिणी बनी रहेंगी, आप अपनी आंखें खोलकर हमारी तरफ भी देखेंगे या नहीं?

हे ऊंची जातिके कहानेवाले पशुओ! थू! थू! थू! तुम्हारा तो नाम लेते हुए भी मुझे पाप लगेगा! धिक्कार है तुम्हारी ऊंची जातिके बनने पर! जो बेटीको बेचने वाले और दाम देकर मोल लेनेवालोंको अपनी जातिसे बाहर नहीं कर सकते, बल्कि मूछों पर ताव दे देकर लड्डू खानेके लिये उनके साथ ऐसे हो जाते हो जैसे पुराने शिकारीके पीछे कुत्ते! और गोल २ कतरी हुई हरी २ और खूबसूरत पत्तलोंपर छने हुए पानीका छडकाव लगा-२ कर तुम खानेके लिये ऐसे बैठ जाते हो जैसे सराधों (श्राद्धों) के दिनोंमें कौवोंके झुण्डके झुण्ड! तुम लोग मन्दि-रोंमें बैठकर बड़े २ शास्त्र सुनते हो! तत्वोंकी चर्चा करनेमें

बालकी खाल निकालते हो! तीन २ इञ्च लम्बे तिलक लगाते हो! कीडो तककी हिंसासे बचनेके लिये शक्जी तरकारीका त्याग करते हो! दिनमें तीन २ मरतबा नहाते हो! भक्त बननेके लिये जोर २ से भजन गाते हो! खूब ब्रह्म भोज कराते हो! मन्दिरोंमें दश २ सेरके घण्टा बजाकर मोहल्लेभरको गुञ्जा देते हो! ठाकुरजीके विमान निकालते हो! लेकिन ऐ पत्थरका कलेजा रखनेवाले धर्मके ठेकेदारो! मैं यहा पर कह देना चाहती हूं कि पोथियोंके पतरे उलट पुलटकर कई दस्ते कागज फाड डालना, श्रीमथुरेशजीके महाप्रसादमें सैकडोंमन शक्कर और घी लगा देना, पानी छानते २ रेजीके थानके थान फाड डालना, ठाकुरजीके सैकडों तोला केशर घिस २ कर लगा देना और हजारों मन चावल लौंग बदाम आदि चढा देना आदि सब ढकोसला मात्र है, जबतक कि मनमें शुद्धि और परिणामोंमें सचाई नहीं है। मुझको आपलोगोंका पूरा भरोसा था लेकिन आपने तो कन्या विक्रीके लड्डू खाकर सारे धर्म कर्मको नष्ट कर दिया। लग्न लिखते वक्त मुझको पूरा विश्वास था कि पञ्च लोग वरकी हाल हकीकत भी किसीसे पूछेंगे लेकि दरअसलमें आपको प्रयोजन ही क्या? छापिया और कसीदेदार रूमालोंमें बतासे लटका २ कर घर चले गये और पूर दूधमें डाल २ कर पिये या उनको बेचकर पैसे कमाये। आपने तो लग्न लिखाने वक्त पञ्चोंका इकट्ठा होना बतासोंके कमानेका एक उपाय समझ लिया है। मैं उस वक्त शरमके मारे नहीं बोल सकी थी जिसके वजह ही से आपलोगोंने मुझे जैसी अबोध बालिकाके जीवनपर दुधारा खञ्जर भोंका है।

आप मेरे ब्याहके खाये हुए लड्डुओंको मोतीचूरके लड्डू न समझ लेना लेकिन अच्छी तरहसे यकीन कर लेना कि वे लड्डू

मुझ अबोध बालिकाके जिन्दे मांसकी कीमतके हैं जो लगभग डेढ़ रुपया फी तोलाके हिसाबसे बिका था, जब कि दूसरे जानवरोंका मांस मांसहारी लोग तीन चार आने सेर खरीदते हैं। एक बात और सुन लो। तुमने मुझको रांड़ बनाकर ही तसल्ली न ली। बूढ़ेजीके मरते ही श्मशानमें नुकतेकी चर्चा करने लग गये। कोई नालायक तो मालपुआ पूड़ीकी ठानने लग गया। कोई लाडू जलेबी की और कोई लाडू जलेबीके साथ सेव भुज्जियोंकी भी। कोई कहता था कि बड़ेरी मौत हुई है जितना करे उतना ही थोड़ा। किसी एक आध धर्मके सपूतने इसके विरोधमें कुछ कहा तो अरबी घोड़ोंकी तरह उस विचारपर दुलत्ती झाड़ी जाने लगीं और उसको जाति बाहर कर देनेकी धमकी भी दीं जाने लगी, लेकिन हुआ वही जो आपने सोचा था। झक मारकर हमको रसोई नुकता करनी पड़ी और २०००) खर्च करके तुम लोगोंकी प्रज्वलित अग्निको शांत करना पड़ा। एक हजार नकद तो मेरा बूढ़ला छोड़ गया था। तीन सौका जेवर बेंचना पड़ा और सात सौ रुपया मकान गिरवी रखकर लगाना पड़ा। जेवरके तो आग लगी लेकिन अब पेट भरते हुए करजा चुका कर मकान छुड़ाना मुश्किल हो गया। व्याज दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जा रहा है। हे पेट भर जानेपर भी भजियोंकी ईन्तजारीमें शाम पटक देनेवाले और कढ़ाइयोंमें झोप हो हो कर मरने वाले लोगो! अब भी तो कभी आ कर पूछते कि वह लड्डू खिलानेवाली किस दशामें होगी। मैं साफ दिलसे कह रही हूं कि नुकतेकी रसोई तो मैंनें कर दी थी, लेकिन दिलमें चाहती थी कि कोई जीमने न आवे तो बची हुई रसोईको बेच सकूं और करजेमें सहारा भी लगा सकूं। ऊपले मनसे एक दो जगह बुलावा भी भेजना पड़ा

लेकिन काहेका बुलावा और काहेका अनबुलावा खानेके लिये नहीं २ मेरे बचे हुए प्राणोंको आग लगानेके लिये—गर २ ऐसे आ गये जैसे मेरे जिम्में आपका कोई आवता आ रहा था। बागमें तो बीस पचीस भी नहीं थे। बैठनेके लिये सौ दो सौ भी नहीं थे, लेकिन खानेके लिये ढाई हजारका नम्बर लगा है। २५ आदमियोंके खाने लायक तो नालायक नोतारा और व्यासका बच्चा दुकडया भर २ कर ले गये, पाच सौके खाने लायक तुम अन्नके शत्रु जू ठनमें छोड गये, कोई जीमने नहीं आया तो दो दो तीन तीन आदमियोंके खाने लायक पुरूसे बाध बाधकर ले गये। किसीने लडके लडकीका बहाना बनाकर ही चार २ लड्डू जेबमें भर लिये या रुमालोंमें ल्टका लिये, कई टेनियोंको तो जूठनके लड्डू भी उठाते शर्म नहीं आई किसीके अगर चूलका नोता था तो मोहल्ला भर आ डटा, किसीके पगडी बन्धका नोता था तो दुकानोंके नौकर भी भट्ट पो २ कर आ गये, किसीके अगर सास बाणीका नोता था और घरमें खानेवाला एक ही था तो नोतेका पूरा करनेके लिये कोई बोहरीजीको ला रहा है, कोई माइलीजीको और कोई किसीको। आठ सेर लडडू और दस सेर पुडी बच गई तो दूसरे दिन ऊजलीकी रसोई होनेकी उम्मेद भी बन्धने लग गई। गर्ज यह कि तुम राक्षसोंके पञ्जेमें फस जानेके बाद किसी प्रकारसे निकलनेकी आशा रखना बिल्कुल दुराशा मात्र थी। मेरी तरहने तुमने तुकने खाकर न मालूम कितनी राण्डोंके घर बरबाद कर दिये होंगे, यह परमेश्वर ही जाने या वे बेचारिया ही जानती होंगी जिनको तम्हारे शिकारका निशाना बनना पड़ा है जो तुम्हरे नाती और पोतोंको दिन रात कोंसती हैं। मैं आज तुमको श्राप दे रही हू कि तुमको नरकके त्रास तो भोगने ही पडेंगे लेकिन इस जन्मके त्रास भी भोगनेके

लिये तुम्हें तैयार रहना चाहिये। याद रखना कि आगे जन्ममें तुमको भी कन्या बन कर किसी बूढ़े के हाथ मोल बिकना होगा और हमारी तड़फका बदला चुकाना होगा। इसलिये अब भी तुमको नरकोंका कुछ डर है और नरकोंके त्रासके हलका करना चाहते हो तो भगवानसे अपनी भूलोंके लिये माफी मांग-आयन्दाके लिये बालविवाह, वृद्धविवाह, अनमेल विवाह, कन्या-विक्रय और नुकता आदि वाहियात रसोइयोंमें शामिल होने तकका त्याग कर दो और जहांतक बन सके ये बातें मत होने दो।

हे जातिके सरदारो! कन्याओं पर जो अत्याचार हो रहे है उनको तुम जानते हो, सुनते हो और देख रहे हो बल्कि तुम खुद भी उनपर अत्याचार करनेके लिये आगे रहते हो। हमारे मातापिता अपने जानवरोंकी नसल सुधारनेके लिये तो अच्छा जोड़ा तलास करते हैं लेकिन थोड़े से धनके लोभमें अपने पसीने की सन्तानको अनमेल विवाहों द्वारा कालीधार डुबो रहे हैं। सैकड़ो बहुए तो ऐसी हैं जो अपने भरतारोंसे दो फीट लम्बी हो गई हैं और उनके दुबले पतले भरतार बगलमें बस्ता लेकर अभी मदरसे ही जा रहे है, जो छतपर बैठकर कौवे उड़ाते हैं और जिनको नाक पूछनेका भी शउर नहीं है सैकड़ो बहुए ऐसी है जो बूढ़े ऊंटोंके गलेमे बिल्लीकी तरह लटकी हुइ है वे मन ही मन दुष्ट मातापितओंको और तुम लड्डू खानेवाले नालायकोंको गालियां दे रही है। इन दोनोंमें कई तो ऐसी है जो अपने भाग्यपर अपने भविष्यको छोड़े हुये हैं कई ऐसी हैं जो अनेक प्रकारके कुकर्मों द्वारा इस लोक और परलोकको बिगाड़ रही है। लाखों ऐसी हैं जो मेरे समान रांड़े होकर बुरी बुरी आहोंसे श्राप रही हैं। ये श्राप निरन्तर जारी रहेंगे

जबतक कि तुमलोग अपनी जातिसे बाल विवाह वृद्ध विवाह अनमेल विवाह और कन्या विक्रय आदि कुप्रथाओंका काला मुह न कर दोगे। इन कुप्रथाओंके कारण आज हजारों योग्य नवयुवक कुमारे पडे हुये हैं वूढोंने कुवारोंके साथ हकनलफी करके रुपयोंकी थैलिया खोलकर वेतरह सिर उठा रखा है। कन्या विक्री करनेवालोंने वडा शोर मचा रखा है। कोई शोभाके रुपये धरा कर चाट जाता है' कोई चढावेके नामसे जेवर मागकर डकार नहीं लेता, कोई उधार लेकर पीछा दे देनेका ढोंग रचता है, कोई कोई अपनी वेटीके एवजमें अपने वेटोंके व्याह करानेका ठहराव कराता है, और कोई कोई माईके लाल तो ऐसे हैं जो सरे वाजार अपनी कन्याओंको नोलाम करनेकी दुकान लगाये हुए हैं। कोई कहता मेरी वेटीकी पतली पतली उङ्गलियोंका एक एक परवा ही तीन तीन सो की लागत का है, कोई कहता है कि मैंने गू मूत अनेरा है तो सौत मात थोडी ही फेंक दूंगा, कोई कहता है कि मैं अपनी लडकीको वडी ही इसलिये कर रहा हूं कि वह जितनी वडी होगी उतनेही दाम अधिक आवेंगे। बिल्लीके भागसे कहीं छींका टूटेहीगा या कुवारोंके भागसे कोई पत्नी मरे हीगी और कोई वृद्ढा आवेहीगा। ऐ हत्यारे पटेलो ज्यों ज्यों अनमेल विवाहों द्वारा कन्या विक्री बढती जा रही है या कन्या विक्री द्वारा अनमेल विवाह बढते जा रहे हैं त्यों त्यो अपनी उंची जातियोंमें व्यभिचारकी वृद्धि होती जाती है, विधवा ओंकी संख्या बढती जाती है। गर्भपात और भ्रूणहत्याएं होती जाती हैं और तुम्हारे मस्तकपर कलङ्कका टीका लगता जाता है। तुम जातिके पटेल होनेके नातेसे इन सारे पापोंके जिम्मेवार हो और तुम ही इन पापोंके पापी हो। तुमको भी मैं वही श्राप देती हूं जो पञ्चोंको दे चुकी हू। तुमको एक दण्ड यह

ज्यादा मिलेगा कि तुमको तिल्लीका तलड़िया बनकर तलि-योंकी घाणीमें पिलना होगा और बादको चौमासे की गजाई बनकर सड़कों पर आने जाने वालोंके पावोंकेनीचे कुचलकर मरना होगा। जाओ तुम्हारा सत्यानाश!

हे श्रेष्ठ कुलमें जन्मे हुए हिन्दुओ! आप कौन हो? आपके पूर्वजोंकी कीर्ति कौमुदी सदैव से इस भूमण्डल पर फैली हुई है। अब आप नीच और अधर्म क्यों होते जाते हो? वास्तवमें आप अपना असली धर्म खोकर धर्मके ढोंगी बन गये हों। आप ऊपरी दिखावे की बातोंहीमें अपना धर्म समझे हुये हो। आप लोगोंने अपने लिये मोक्षका दरवाजा बन्द करके नरकका खोल लिया है। आपके धर्मशास्त्रोंमें कन्याओंको दहेज देना इसलिये उचित रखा है कि वह स्त्री धन कहलाया जाकर आपत्तिके सम-यमें काम आवे लेकिन आज कन्याके भले बुरेको न सोचकर जवाईसे उलटा महसूल लिया जाता है। जवाई की देख रेख तीन कौड़ीके पाजी नालायकोंपर छोड़ दी जाती है और उनके कहने पर हो विश्वास करके अपने प्राणोंसे ज्यादा पाली हुई बेटी अयोग्य और अनधिकारी लोगोंके सपुर्द कर दी जाती है। इससे वे नालायक लोग भी अपना काम बना लेते है। कन्याविक्री करनेवाले सबसे बड़ी दलील यह पेश करते हैं कि पास पैसा न हो तो पञ्चोंको क्या खिलावें। क्योंकि हम भी तो लोटा लेकर खाने जाते है। खूब कहो। ऐसे लोगोंसे मेरा यह अरज करना है कि आपके पास पैसा नहीं है तो आप खाने ही क्यों जाते हैं और जब आप खाने जाना नहीं छोड़ते हैं तो यह आपका कसूर है कि पञ्चोंके ऊपर इसका बोझ डालते हो। लेकिन पञ्चोंका कसूर भी बतलाये बिना न रहूंगी जिन्होंने व्याहके लड्डू खिलाना और अनेक वाहियात रसमोंका अदा करना

लाजिमी क्या रखा है। अगर कोई गरीब आदमी लड्डू नहीं खिला सकता है तो जन्म भर उसके ठोचका मारा जाता है। धिक्कार है ऐसे आदमियोंको जिनको अपनी जातिके हानि लाभ से कोई सरोकार नहीं है। सच पूछो तो आप लाग ही कन्या-विक्री प्रथाको कायम रखके जिन्दे मासकी विक्रीके लड्डू खाना चाहते हैं। बाज बाज वक्त तो इन कुप्रथाओंको बन्द करनेके लिये बड़ी बड़ी लम्बी चौडी बातें आप बनाने लगते है। लेकिन नोता आते ही हाथमें लुटिया झुलाकर लड्डुओंको परातपर आप अड्डा जा जमाते हैं। जिसकी बेटी होती है वह तो उसे किसी बूढे खूसट के हाथ बेचकर ही ब्याह कर देता है लेकिन विचारे गरीब लडकोंके लिये तो चारों आश्रम एकसा ही गुजरते है।

हे मेरे सच्चे सुधारक वीर! आ, मैं तेरी आरती उतारू हे मेरे धर्मके भाई! तूने बहुतही प्रयत्न किया था कि केसरकी यह सगाई सम्बन्ध छुट जावे लेकिन तुझको सफलता नहीं हुई। यह मेरेही दुर्भाग्यकी बात है। लेकिन कोई चिन्ता नहीं। असफलता देखकर तू कभी अपने कर्त्तव्य मार्गसे विचलित मत होना विरोधियोंको गालिया सुन सुनकर तू घबरा मत जाना, जाति बाहर कर देनेकी धमकियोंसे तू डरना नहीं। विद्वानोंका कथन है कि अच्छे कार्यमें अनेक प्रकारकी आपत्तियां आती हैं जो उन आपत्तियोंसे विजय प्राप्त कर लेता है उसकी सफलता प्राप्त होना निश्चित है। मेरी श्रीभगवान्से यही प्रार्थना है कि नहाते वक्त भी तेरा बाल न खिसके।

पाठक गण! यह आप जरूर कहेंगे कि यह विधवा कोई कुल्टा है जो पतिके मरनेके पीछे ऐसी बाते कर रही है। आप कुछ भी समझें मैं लोकलाज खोकर अपने हृदयके भाव इस

लिये प्रकट कर रही हूं कि देखें पत्थरका कलेजा रखनेवाले भी अपना हृदय पिघला कर उक्त कुरीतियोंको समाजसे हटाते हैं या नहीं। मेरा यह विलाप अवश्यही मेरे शीलके दोष लगानेवाला है लेकिन यदि इस विलापका कुछ भी असर आपलोगोंके दिलोंपर हुआ तो मेरा यह विलाप ही हजारों कन्याओंको विधवा बननेसे रोक सकता है। आपको अगर अपनी कन्याओंपर रहम है और विधवाओंकी बढ़ती हुई संख्यापर सख्त रञ्ज हैं तो अपनी अपनी जातिसे उक्त कुप्रथाओंके नाश करनेके लिये कमर कस लीजिये जहां ये बातें पाई जावें वहांका अन्न खाना और पानी पीना हराम समझिये। किसी प्रकारकी आपत्तियां आनेपर धर्म-देव आपकी रक्षा करेंगे। जातिके सच्चे सेवक वही हैं जो सबसे पहले अपनी जातिमें बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, अनमेल-विवाह, कन्या-विक्रय आदि कुप्रथाओंके नाश करनेका बीड़ा उठा लेंगे

देखती हूं कि देखें कौन कौन वीर और वीराङ्गनाएं इन कुरीतियोंमें खाने पीनेका त्याग करते हैं। मैं चाहती हूं कि पत्रोंके सम्पादकगण इस विलापको अवश्य ही अपने अपने पत्रोंमें स्थान देनेकी कृपा करें। मेरे इस विलापको पढ़ने वाले प्रत्येक पाठकसे भी यह प्रार्थना करती हूं कि वह इसे स्वयं पढ़कर अन्य दस आदमियों और स्त्रियों को भी पढ़कर सुना देनेकी दया करें।

हा——!

आपकी—केसर

एकबाल बिधवा।

हनुमान प्रेस, ३ माधो सेठ लेन, कलकत्ता।

वैधव्य-वेदना

(ले०—श्रीयुक्त शोभाराम धेनुसेवक)

(१)

अरे हृदय ! यह क्या सुनता हूं, सुखमें हा हाकार यहां ?
सदाचारके शान्ति राज्यमें, क्यों ये अत्याचार यहां ॥
जहां नारियें था प्रकाश, क्यों दिखाता तम विस्तार यहां ।
कन्या विक्रय माल ब्याहका, क्यों जघन्य व्यापार यहां ॥

(२)

अरे विधाता ! किसी समय जो, वरा धर्मकी क्यारी थी ।
सुख सम्पतिमें सुन्दरतामें, तीन लोकसे न्यारी थी ॥
थी अनुपम आदर्श विश्व की, जो प्रभुवरको प्यारी थी ।
हा ! सोचा था किसने उसको, आज पतनकी बारी थी ॥

(३)

राम भूपकी भव्यभूमि में, जहां पापका नाम न था ।
नर नारी थे सभी धार्मिक, धर्म विरोधी काम न था ॥
रहता था अनुकूल समय भी, कभी विधाता वाम न था ।
यही हेतु था ! भारत भू पे, सरिस स्वर्गका धाम न था ॥

(४)

जहां न ५ ई भी विधवा थी, वहां भयङ्कर दृश्य महा ।
त्यों न जाना भगवन् ! भारत, विपति वेगमें चला बहा ॥

(१३)

अशरण शरण तुम्हीं अब, हम अबलाओंका उद्धार करो ।
हे जगतीपति शोक-सिंधुसे, जीवन बेड़ा पार करो ॥
नैराश्यकी निविड़ निशायें हैं, आशा संचार करो ।
मिले न फिर "वैधव्य वेदना" यह विनती स्वीकार करो ॥

(१४)

हो जावेगा भस्म नहीं तो, देश हमारी आहोंसे ।
जल जावेंगे भारतवासी, उससे निकसी दाहोंसे ॥
आवेंगे क्या आर्य आजभी, बाज कलंकित चाहोंसे ।
महिलाओंको मुक्त करेंगे, बालक वृद्ध विवाहोंसे ॥

(१५)

भगवन् दीजे सहन-शक्ति अब, ये दारुण दुख सहनेकी ।
धरनेकी निज धर्म जन्म-भर, ब्रह्मचर्यसे रहनेकी ॥
उठें पतनसे मिलें शक्तियाँ, हमें देश दुख दहनेकी ।
सम्मानित हो विदुषी बनकर, नारी गौरव गहनेकी ॥

(१६)

रे हत भाग्यो ! हिन्द वासियो ! इन महिलोंका ध्यान करो ।
सोती हुई मरी बैठी है, इनको जीवन दान करो ॥
तज दो बालक वृद्ध ब्याहको, भारतपर अहसान करो ।
यही विनय है निज करसे, मत गारत हिन्दुस्थान करो ॥

हनुमान प्रेस, कलकत्ता ।

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

वायुकुमार और अंजनीका वृत्तान्त.

इस भरतक्षेत्रमें विजियार्ध नामा एक पर्वत है, जिसकी दक्षिण श्रेणीमें जो पृथ्वीसे दस योजन ऊंची है, आदित्यपुर नामा एक अति मनोहर नगरी है. उसमें वापिका, कूप, सरोवर, वन, वाटिका आदि शोभायमान है, मानों इंद्रपुरी ही लोगोंके पुण्यसे वहा आ गई है. उसमें सात सात आठ आठ खणके महल है, जिनकी सुवर्णकी भीतें रत्नोंकी मालाओंसे शोभित हो रही हैं. उस नगरमें हग ? जिन मंदिर बने हुए है, जिनमें भव्य जीव उत्सव कर रहे है. नगरके चहु ओर ऊंचे कोट और समुद्रकी खाई परम रमणीक मालूम पडती है. यह नगरी उत्तमोत्तम रत्नोंके समुद्रको लेकर कहीं चली न जाय, इसी विचारसे मानों खाईने उसे घेर रक्खा है. वहांके राजमार्ग मदोन्मत्त हाथियोंके आने जाने और उनके मदजल झरनेसे कीचडयुक्त हो रहे है. वहा राजा सदाकाल निवास

करता था, इस कारण वह पृथ्वीतलपर अद्वितीय राजधानी बन रही थी. और द्रव्यादिकी इच्छा करनेवाले पुरुषोंको चिंतामणिके तुल्य प्रिय जान पडती थी. वहांकी स्त्रियोंके रूपको देखकर देवांगनाओंने भी अपने रूप लावण्यका घमंड छोड़ दिया था.

इस आदित्यपुर नामा नगरमें प्राल्हाद नामका राजा राज्य करता था, जो अपनी प्रजाकी पिताके समान रक्षा करता था. लोकके सेवकके समान बंधु, सेवकोंका मित्र, और शरणागतोंका रक्षक था. उसकी केतुमति नामा राणी थी, जो निर्मल चित्तकी धारण करनेवाली, शीलवती स्त्रियोंमें शिरोमणि, पुण्यवती, लावण्यके सर्व लक्षणोंसे मंडित, और अपने रूपकी संपदासे देवांगनाओंकेभी रूपको तिरस्कार करनेवाली थी. उनके वायुकुमार नाम पुत्र था. जब वह संपूर्ण यौवनको प्राप्त हुवा, तब मातापिताको उसके विवाहकी चिंता उत्पन्न हुई.

इसही भरतक्षेत्रकी दक्षिण पूर्व दिशामें दंतीनामा एक पर्वत है. उसमें स्वर्गपुरी समान महेंद्रपुर नामा एक नगर है, जिसे इंद्र तुल्य राजा महेंद्र विद्याधरने बसाया था. वह निर्मल चित्तका धारक, विवेकी, दुष्टोंका निग्रह करनेवाला, सत्पुरुषोंकी रक्षामें दत्तचित्त सम्यक्त्वसे शोभायमान था. उस राजाकी हृदयवेगा नामकी राणी थी. जो सरल स्वभावकी धारक, पापसे भयभीत, अपने गुणोंसे संसारमें विख्यात, गुणोंकी खानि, पतिके अत्यन्त स्नेहके भारसे मंद गमन करनेवाली, और पति-

व्रता स्त्रियोंके गुणोंको धारण करनेवाली थी. उनके अरिंदमादि महा गुणवान् सो पुत्र और अंजनासुंदरी नामा एक पुत्री थी. इस अंजनासुंदरीने अपनी वेणीसे कृष्ण सर्पकी कृष्णता वा नरमाईको, बोलीसे अमृतको, ललाटसे अष्टमीके चंद्रमाको, मुखसे मृगशशुको, नासिकासे तोतेकी चोंचको, नेत्रोंसे मृगीको, भौंहोंसे कामदेवके धनुषको, कंठसे शंखको, स्वरसे कोकिलाको, स्तनोंसे नारियलको, और भुजासे पुष्पमालाको जीत लिया था; और जिसकी केशरी समान कमर और कदली स्तंभ समान जंघा थी.

एक दिन उस सर्वकला की जाननहारी साक्षात् सरस्वती को नव यौवनमें सखियोंके साथ क्रीडा करती हुई देख, राजा महेंद्रको चिंता उत्पन्न हुई. संसारमें माता पिताको दुःखका कारण कन्या ही है. जो बडे कुलके लोग है उनको यही चिंता लगी रहती है कि कन्याको योग्य पति मिले, चिरकाल तक उनका सौभाग्य रहे और कन्या निर्दूषण रहे. तब राजा महेंद्रने अपने मंत्रियोंको बुलाय कहा—“ हे मंत्रियो ! अब कन्या यौवनारूढ हुई है, सो तुम मुझे कोई इसके योग्य श्रेष्ठ वर बताओ ” अमरसागर मंत्री बोला—“ मेरी समझमें लंकापति रावण कन्याके योग्य है, अथवा उसके पुत्र मेघनाथ या इंद्रजीत भी ठीक है. ” सुमति नामा मंत्री बोला—“ हे देव ! रावण कन्याके योग्य नहीं है. क्योंकि उसकी वय अधिक और कन्या की वय कम है और उसकी अठारह हजार रानिया है, जिनमें मंदोदरी पटराणी है. और यदि मेघनाथ या इंद्रजीत को देवें

तो उन भाइयोंमें विरोध उत्पन्न होनेका भय है." यह सुन ताराधरायण नामा मंत्री बोला–"कनकपुरके राजा हिरण्यप्रभ का एक सौदामिनीप्रभ नामा पुत्र है, जो महा कांतिवान, सर्व कला और विद्याका पारगामी और महा पराक्रमी है. जैसी कन्या तैसा वर, इस लिये यह कुमारी उसे व्याहो. तब संदेहपारग नामा मंत्री बोला–"हे देव! यह सौदामिनीप्रभ कुमार महा भव्य है. उसका निरन्तर यह विचार रहता है कि संसार अनित्य है, सो संसारका स्वरुप जान, वह अठारहवें ही वर्षमें वैराग्य लगा और भोगरूप गृहबंधन छुड़ाय बाह्याभ्यन्तर परिग्रहको परिहर, केवलज्ञानी हो मोक्षको जायगा. यदि कन्या उसे परणावें, तो वह पति विना नहीं शोभेगी. आदित्यपुरके राजा प्राल्हादका पुत्र वायुकुमार, पराक्रमका समुह, रूपवान, शीलवान, गुणनिधान, शुभ शरीर, महावीर और खोटी चेष्टाओंसे रहित हैं. उसके गुण सर्व लोकमें व्याप रहे हैं, इसलिये अंजनासुंदरीका पाणिग्रहण वायुकुमारसे कराओ. राजा महेंद्रको यह संबंध पसंद आया और कुमारी भी यह बात सुन कुमुदीनी समान प्रफुल्लित हुई.

अथानंतर वसंतऋतु आई. नविन कमलों के समुहकी सुगंधसे दशों दिशाएं सुगंधित हो गई. वृक्षोंपर नये पल्लव पुष्पादि प्रकट हो गये. आम्रवृक्षोंपर मौल आये, जिनपर भ्रमर गुंजारने लगे. कोकिलाओं के शब्द मानिनी नायिकाओंके मानका मोचन करने लगे. नर नारियोंमें स्नेह बढ़ने लगा. स्त्री

पुरुप एक क्षणभी वियोग सहन न कर सकने लगे. इस वसंतमें फाल्गुन शुक्र अष्टमीसे लेकर पूर्णमासी तक अष्टान्हिकाके दिन महा मंगल रूप हे. सो इंद्रादिक देव पुजा की सामग्री ले आकाश मार्गसे नंदीश्वर द्वीपको जाने लगे. उन्हे देख राजा महेंद्र भी परिवार सहित भगवानकी वंदनाके लिये कैलाश पर्वतको गये. और पूजा स्तुति कर एक शिलापर बैठे. राजा प्राल्हादभी वंदनाके अर्थ वहा आये थे. सो वे वंदना कर पर्वत पर विहार करते हुए राजा महेंद्रकी दृष्टि पड़े. जब राजा प्राल्हाद समीप आये, तो राजा महेंद्र उठ खडे हो उनसे भेटे; और वे दोनों एक मनोज्ञ शिला पर बैठ, परस्पर शारीरिकादी कुशल पूछने लगे. राजा महेंद्र बोले—"हे मित्र ! मेरी कुशल कहां से? क्योंकि अंजना को व्याहयोग्य देख, उसके लिये योग्य वर-की चिंता से चित्त व्याकुल रहता है. यदि रावण को दें, तो वह उम्रमें अधिक है और उसके पुत्रों में से किसिको दे तो उन भाईयों में विरोध होने का भय है. और हेमपुर के राजा कनकप्रभ का पुत्र सौदामीनीप्रभ अठारहवें ही वर्ष संयम धारेगा. अब हमारा निश्चय आपके पुत्र पवनंजय पर है." राजा प्राल्हाद बोले—"मुझे भी पुत्र के विवाह की चिंता लगी हुई थी, सो आपके वचन सुन बहुत आनंदित हुवा. जो आप कहे सोही प्रमाण है. मेरे पुत्र का बडा भाग्य है, जो आपने कृपा कर वर कन्या का विवाह मान सरोवरके तटपर ठहराया." यह समाचार सुन दोनों सेनाओं में आनंद के शब्द हुए; और ज्योतिषियोंने तीन दिन का लग्न बताया.

वायुकुमार की कामचेष्टा.

वायुकुमार अंजना के रूप की अद्भुतता सुन काम-पीडित हो गया, चिंता व्यापने लगी; कुमारी को देखने की अभिलाषा उत्पन्न हुई; ठंडी श्वास निकलने लगी; कामज्वर हो गया; अंग खेदरूप हो गया; पुष्पादि सुगंधित वस्तुओं से अरुचि हो गई; और भोजन विष समान लगने लगा. वह मन-में कहने लगा कि मेरे शरीरमें कोईभी घाव नहीं है, तौभी वेदना बहुत है. मैं एक जगह बैठा हूं और मन अनेक जगह भ्रमण कर रहा है. उसे विना देखे ये तीन दिन कुशल से न जायंगे, इस लिये उसके देखनेका कोई उपाय करूं; ऐसा विचार वह अपने प्रहस्तनामा मित्रसे कहने लगा—" हे मित्र ! तू मेरा सर्व अभिप्राय जानता है. हे सखे ! तुम विना यह किस को कहूं ? जैसे किसान अपना दुःख राजासे, शिष्य गुरुसे, स्त्री पतिसे, रोगी वैद्यसे और बालक मातासे कहता है, वैसे ही बुद्धिमान अपने मित्रसे कहता है. उस राजा महेंद्र की पुत्री-के गुण और रूप के श्रवण ही से मेरी यह विकल दशा हुई है. उसे विना देखे ये तीन दिन निकलना बहुत कठिन है. इसलिये कोई ऐसा यत्न करो, जिससे उसके दर्शन हों. प्रहस्त बोला—"तुम्हारे और मेरे बीच में कोई भेद नहीं है. जो कुछ करना हो उसमें ढील न करो."

इतने में सूर्य अस्त हुवा और दशों दिशाओंने कृष्ण वस्त्र धारण कर लिये. पवनंजय कहने लगा कि चलो, अपन वहां चलें, जहां मेरे चित्तको चुराने वाली है. ऐसा कहके दोनों एक विमानमें बैठे और आकाश मार्गसे अंजनासुंदरीके सात खणे महलके झरोखेमें उतरे और मोतियोंकी झालरोंके आश्रयसे वहां छुप कर बैठ गये. थोडी देर में अंजनासुंदरी सखियों सहित वहां आई. पवन कुमार उस सर्व शुभ लक्षणों की धारक सर्वांग सुंदरी मनोहर कुमारी को देख मनमें विचारने लगा कि यह लक्ष्मी है या इंद्राणी, पार्वती है या चंद्रकी स्त्री रोहिणी, कामकी वल्लभा रति है या यश की मूर्त्ति है? लोगोंका कहना है कि चंद्रमा सागरसे उत्पन्न हुवा है परन्तु मैं तो केवल इसके कपोलोंपर स्वेद के बिंदु ही चंद्रमा देखता हूं. ऐसा मालुम होता है कि ब्रह्माने चंद्रका सार ग्रहण करके इसका मुख बनाया है. कमलसे इसके हाथ पांव बनाये हैं. हस्ति के कुंभ स्थल ले कर दोनों स्तन बनाये हैं. मृगी के नेत्रोंसे नेत्र बनाये हैं और हंसनी की चाल लेकर इसकी गति बनाई है. अथवा विधाताने किस प्रकार इसकी रचना की है, कुछ समझमें नहीं आता. इसके समान रूपवती सुंदरांगी जगतमें न कोई है और न कभी होगी. उसही का जन्म सफल है, उसही का मनुष्य भव पाना सार्थक है और उसही के पूर्वभवके पुण्यका रस समय उदय है, जिसकी यह मनोहर कुमारी प्राण वल्लभा हो. वह कुमार ऐसा विचार करही रहा था कि वसन्तमाला सखी

अंजनासे कहने लगी०—"हे सुरूप! तु धन्य हे जो वायुकुमार तेरे भर्त्तार होंगे. वे कुमार महाप्रतापी हैं. उनके गुण चंद्रमाकी किरणोंके समान उज्जवल हैं. तुम उस योद्धाके अंगमें ऐसी रहो जैसे समुद्रमें लहर!" सखीकी बात सुन अंजना लज्जा-वश चरणों के नखोंकी ओर निहारने लगी और पवनंजय-भी हर्षसे फुल गये.

वायुकुमार का अंजनापर कोप.
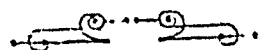
उसही समय मित्रकेशी नामा एक दूसरी सखी होट-चबा चोटी हीला बोली—"यदि सौदामिनीप्रभ पति होता तो हे कुमारी! तेरा जन्म सफल होता. हे वसंतमाला! सौदामी-नीप्रभ और वायुकुमार में समुद्र और गोष्पद समान भेद है. विद्युत्प्रभ की कथा बडे२ पुरुषो से सुनी है. उसके गुणों की मेघ के बिंदुओं समान संख्या नहीं है. महाराज ने उसका अठारहवें वर्ष वैराग्य धारण करना सुन जो उसे यह अंजना नहीं दी सो ठीक नहीं किया. सौदामीनीप्रभ का क्षणिक ही संयोग क्षुद्र पुरुप के दीर्घ काळ संयोग से अच्छा है."

वायुकुमार यह वार्ता सुन क्रोधरूप अग्निसे प्रज्ज्वलित हो गया, और म्यानसे तलवार निकाल प्रहस्त से बोला—"इस अंजना को हमारी निंदा भाती है, क्योंकि यह दासी ऐसे वचन कहती है और वह बिना कुछ भी कहे सुनती है. मैं

अभी इन दोनोंका सिर उड़ा दूंगा. देखें इन्हें विद्युत्प्रभ कैसे सहायता देता है ? ”

प्रहस्त बोला—“ हे मित्र ! तुम्हारी यह तलवार जो बडे२ सामंतों के सिरपर चलती है वह अबलाओं के सिरपर कैसे पड सक्ती है ? स्त्री हत्या, बाल हत्या, पशु हत्या, दुर्बल हत्या आदि शास्त्रवर्जित है.” पवन कुमार बोला—“अच्छा ! चलो, छुपकर ही निकल चलें ” ऐसा कह वे दोनो आकाश मार्गसे अपने डेरे मे आ गये.

पवन कुमार अंजना से फीका पडगया, और विचारने लगा कि-जिसे दूसरे पुरुष का अनुराग है उसे दूर ही से छोड देना चाहिये. खोटे राजा की सेवा, शत्रु के आश्रय, शिथिल मित्र और अनासक्त स्त्री से कहां सुख होसक्ता है ? तब अंजना से विमुख पवनकुमार बोला—“ हे मित्र ! इस मान सरोवरके तट अपने डेरे अंजना के डेरों के समीप है, सो जो हवा वहासे वह कर आती है वह मुझे नहीं सुहाती है, इस लिये अपने नगर को चलें. देरी करना उचित नहीं है.” मित्र ने कुमार की आज्ञा प्रमाण कर, सेनाको कूच की आज्ञा दी. रथ, घोडे, हाथी पियादे आदि की समुद्र समान सेना चलने लगी, जिससे बहुत शब्द हुआ.

सेना के पयान के शब्द सुन, कुमारका कूच समझ अंजना बहुत दुःखित हुई और विचारने लगी—हाय ! मुझे पूर्वोपार्जित कर्मने महा निधान दिया था, सो दैवने छीन

लिया. क्या करूं ? अब क्या होगा ? जो मेरे भाग्य से मेरे पिता मुझपर कृपा कर प्राणनाथ को पिछा फिरावे और मेरे प्रियतम की सुदृष्टि मेरे पर हो, तो मैं जीऊंगी और जो मेरे नाथ मेरा परित्याग करेंगे तो मैं अनशन व्रत धर शरीर तजूंगी, ऐसा चिंतवन करती वह सती मूर्च्छा खा पृथ्वीपर ऐसी पडी, जैसे कोई मूल रहित लता निराश्रित हो गिर पड़े. सब सखियोंने शीतोपचार कर उसे सचेत किया और जब उन्होंने मुर्च्छा का कारण पूछा, तो वह लज्जावश कुछ न कह सकी.

राजामहेंद्र कुमार का कूच सुन अति व्याकुल हुवा और समस्त भाइयों सहित राजा प्राल्हाद पास आया. तब राजामहेंद्र और राजा प्राल्हाद कुमार को कहने लगे—" हे कल्याणरूप ! यह कूच क्यों किया है ? अहो ! तुमको किसने अनिष्ट कहा है ? शोभायमान ! तुम किसको अप्रिय हो ? तुम्हारे पिताका और हमारा वचन यदि सदोष भी हो, तो तुम्हे सर्वथा मान्य होना चाहिये. हे प्रिय ! पीछे फिरो और हमारे मन वांच्छित पूर्ण करो."

गुरु जनोंकी बात सुन कुमार का सिर नीचा हो गया. उनकी आज्ञासे वह पीछा फिरा और मनमें विचारने लगा कि अंजना को व्याह कर तज दूंगा, जिससे वह दुःखसे जन्म पूरा करे और पर का भी इसे संयोग न हो.

अंजना प्राणवल्लभ को पीछे फिरा सुन हर्षित हुई. लग्न के समय उनका विवाह मंगल हुवा. अशोक के पल्लव समान आरक्त अति कोमल कन्या का कर जब दुल्हे के हाथ में दिया गया, तब वह कुमार को अग्नि की ज्वाला समान लगा और जब कभी कुमार की दृष्टि उसपर अनिच्छया पड़ जाती, तो वह उसे विद्युत् पात समान सहन न कर सक्ता. बड़े विधान से उनका विवाह कर सर्व बंधुगण आनंदित हुए. दोनों संबंधी मान सरोवर के तट महान उत्सव से एकमास तक रहे.

पवन कुमारने अंजनाको व्याह ऐसी तजी कि वह उसका मुख तक न देखता. अंजना पतिके असंभापणसे और उनकी कृपा दृष्टि न देख बहुत दुःखी हुई. रात्रिमें उसे निद्रा न आती, अश्रुधारा बहती रहती; और शरीर मलिन हो गया. विवाहकी वेदीमें जो पतिका मुख देखा था, वह उसीका ध्यान किया करती. अन्तरंग ध्यानमें पतिका रुप निरुपण कर जब वह नाथ दर्शन न कर सक्ती तो वह सर्व चेष्टा रहित हो, शोक कर बैठी रहती और मनमें कहती—"हे नाथ! तुम्हारे मनोज्ञ अंगोंके मेरे हृदयमें होते भी मुझे आताप क्यों होता है? मैं निरापराध हूं! आप निःकारण मुझ पर कोप क्यों करते हो? अब प्रसन्न होवो. मैं तुम्हारी भक्ता हूं. मेरे चित्त के विषाद को हरो. मैं हाथ जोड़ यह विनंती करती हूं कि—जैसे आप अन्तरंग दर्शन देते हो, वैसे ही बहिरंग दर्शन भी दो. जैसे बिना सूर्य दिन, बिन चंद्रमा रात्रि और बिन क्षमा,

दया, शील, संतोषादि गुणों के विद्या नहीं शोभती तैसेही आपकी कृपा विना मेरी शोभा नहीं है. इस तरह वह मनमें पतिको उलहना देती और बडे २ मोतियों के समान नेत्रोंसे अश्रुबुंदे झराती रहती. कोमल सेज उसे न सुहाते; स्नानादि संस्कार रहित रहती; और केश न गुंथती. एक दिन उसे वर्ष समान वितता! कुमारीकी यह अवस्था देख सब परिवार व्याकुल हुवा; और सबको उस वेलाकी अभिलाषा लगी रहती, जब कि कुमार इस प्रियाको समीप ले बैठे, कृपादृष्टिसे देखे और मिष्ट वचन बोल उसे प्रसन्न करे.

वायुकुमार का अंजनापर प्रेम.

अथानंतर पुंडरीक नगरीके राजा वरुण और लंकापति दशानन* (रावण) में विरोध उत्पन्न हो गया. यह वरुण महा

*लंका द्वीपमें रत्नश्रवा नामा महा शूरवीर, दातार और जगत्प्रिय राजा राज्य करता था. वह धीरवीर विद्या साधने को पुष्पक नामा महा घोर वन में गया. वहां उसकी सेवा के लिये राजा व्योम बिंदुने अपनी पुत्री कैकसीको भेजी, जो सेवा कर हाथ जोड़ खडी रहती थी. कितनेक दिन पश्चात् नियम समाप्त होनेपर रत्नश्रवा मौन छोड़ कैकसी को पूछा-"हे बाले! तू कौन है, किसकी पुत्री है और किस कारण यूथसे बिछडी हुई मृगी के समान वनमें अकेली रहती है?' वह बोली-"हे राजा! व्योमबिंदु और राणी नंदवतीकी पुत्री हूं. आपकी सेवाके लिये उनने मुझे यहां भेजी है उसही समय

प्रतापवंत और शूरवीर था. और उसकी चतुरंग सैन्या बहुत भारी थी. रावणने उसे अपने आधिन करनेकी इच्छासे उसके पास एक दूत भेजा. वह दूत राजा वरुणके पास जा कहने लगा–" हे विद्याधर पते ! सर्वके पति अर्द्धचक्रि रावणकी यह आज्ञा है कि तुम उसे प्रणाम करो अथवा युद्धकी तैय्यारी

रत्नश्रवाको मानसस्तंभिनी विद्या सिद्ध हो गई विद्याके प्रभावसे उसही वनमें पुष्पान्तक नामा नगर बसाया और कैकसीका विधिपूर्वक पाणि ग्रहण कर कतिपय काल वहीं रहे

अथानतर राणी कैकसीने शुभ गर्भ धारण किया नवमें महिने पुत्र हुवा जब रावणका जन्म हुवा तब वैरियाके आसन कंपायमान हुए देव दुंदुभिए बजने लगीं माता पिताने पुत्र के जन्मका अति हर्ष किया और बहुत दान दिया आगे इनके बडे राजा मेघवाहनको इंद्रोंके राजा भीमने एक हार दिया था जिसकी हजार नागकुमार देव रक्षा करते थे यह हार पास ही धरा हुवा था सो प्रथम ही दिवस बालक रावणने उसे मुट्ठी में पकड लिया राजा रत्नश्रवा यह देख आश्चर्य करने लगे और मनमें विचारा–यह कोई महा पुरुष होना चाहिये, क्योंकि यह हजार नागकुमार देव रक्षित हार से क्रीडा करता है आगे चारण मुनिने कहा था कि तेरे यहा पृथ्वीधर पुत्र होगा सो यह प्रति वासुदेव प्रकट हुवा है फिर पिताने हार बालकके गले में पहनाया उस हारमें नव बडे २ मोती थे, जिनके योगसे पिताको उनमें पुत्रके नव प्रतिबिंब दिखाई दिये तब रत्नश्रवाने निश्चय किया कि अब बालकके कंठमेंसे हार न निकाला जाय इसहीसे रावण-का नाम दशमुख या दशानन भी प्रसिद्ध है

करो." तब राजा वरुण हंसकर कहने लगा-"हे दूत! अर्द्धचक्रि किस वस्तुका नाम है, और वह कहां पाई जाती है? यह नाम तो मैंने आज तक नहीं सुना था. रावण कौन है और कहां रहता है? मैं न तो इंद्र, न वैश्रवण, न यम और न सहस्त्ररश्मि हूं, जो वह मुझे दबा ले. यदि देवताओंको वश करलेने से उसे गर्व उत्पन्न हुवा है तो मैं उसे गाळ दूंगा. घर में बैठे बढ़ाई मारना क्षत्रियोंका धर्म नहीं है. उसे जाकर कह देना कि यदि तुझ में बल है तो युद्ध करने को तैय्यार हो जावे."

दूतने जा रावण को सब वृत्तान्त कह सुनाया. तब रावणने समुद्र तुल्य सेना से वरुण के नगर को घेर लिया और उसे विना दिव्य अस्त्रोंके जीतने की प्रतीज्ञा की. युद्धमें वरूण के पुत्रोंने रावण के बंहनोई खरदूषण को पकड लिया. यह देख रावणने युद्ध बंध कर दिया, और मंत्रियोंसे मंत्र कर सब देशों के राजाओं के पास दूत भेजें और यह समाचार लिख भेजा कि वे अपनी २ सेनाएं लेकर शीघ्र ही लंकामें उपस्थित होवें.

राजा प्राल्हाद के पास भी दूत आया. राजाने स्वामी भक्तिवश दूत का सन्मान किया और पत्र माथे चढ़ाया. जब राजा प्राल्हाद रावण के समीप जाने को उद्यमी हुवा, तब पवनकुमार हाथ जोड विनंती करने लगा-" हे नाथ! पुत्रके होते तुम्हें जाना युक्त नहीं. पुत्र का धर्म है कि पिताकी सेवा करे. इसलिये हे तात! मुझे जाने की आज्ञा दो."

राजा प्रल्हाद बोला—"हे पुत्र ! तुम अभी सुकुमार हो. तुमने कोई रणक्षेत्र देखा नहीं, इसलिये तुम यहीं रहो."

पवन कुमार बोला—"हे पिताजी ! क्षत्रि पुत्र बालक नहीं होता है. जैसे सिंहका बच्चा ही हाथियों के झुंडको चकचूर कर देता है और जैसे अग्निका एक स्फुलिंग मात्र ही बडे भारी बनको भस्म कर देता है वैसेही मैं भी शत्रुको जीत विजय पा अभी ही पीछे आता हूं."

पिताने आशीर्वाद दिया-"हे पुत्र ! तेरी जय हो." तब पवनकुमारने जिनदेव की पुजा की और माता पिता को प्रणाम कर विदा हुवा. बाहिर निकला, तो कुमार को आभूषण रहित मलिन वदना और अश्रु बहाती हुई अंजना दृष्टि पडी. उसे देख वह बोला—"हे पापिणी ! मना करने पर भी ढीट हो निर्लज्जता से सामने आ खडी होगई." पति के ये अति क्रूर वचन उसे ऐसे प्रिय लगे जैसे बहुत दिन की प्यासी मयूरी को मेघ बिंदु लगें. पति के वचन मन से अमृत समान पी वह हाथ जोड कहने लगी—"हे नाथ ! जब आप यहां विराजते थे तब भी मैं वियोगिनी ही थी. अब आप निकट हैं इस आशा से मेरे प्राण कष्ट मे टिक रहे हैं. जब आप दूर देश जावेंगे तो मैं कैसे जीऊंगी ? आपने नगर के सब लोगों को तो श्री मुखसे दिलासा दिया और मुझे औरों के ही मुखसे दिलासा दिलवाया होता. जब आपने मुझे तजी तो जगत में मुझे शरण नहीं मरण है." कुमार कोप कर "मर" ऐसा कह चले गया

और हाथीपर आरूढ़ हो रवाना हुवा. सती अंजना खेद खिन्न हो पृथ्वीपर गिर पड़ी.

पहिले ही दिन मान सरोवर के तट संध्या हो गई. तव कुमारने वहीं पडावा किया. विद्या के प्रभाव से एक वहुखण महल वना उसी के छत पर वैठे पवनकुमार मित्र प्रहस्त से बातें कर रहा था कि इतने में किसी पक्षी की आवाज़ सुनाई दी. उधर दृष्टि की तो देखा कि एक चकवी अपने चकवे की वियोगरूप अग्निसे तप्तायमान हो नाना प्रकारकी चेष्टाएं कर रही है ॥ अस्ताचलकी ओर सूर्य गया सो उधर ही देख रही है; परों को हिला उड़ती है परन्तु गिर पडती है; और अपना प्रतिबिंब पानी में देख उसे प्रियतम समझ पुकारती है, परन्तु वह आवे क्यों ? सेना की नाद से भयभीत हो उसका चित्त चकवे की आशामें भ्रम रहा है, नेत्रों से अश्रुधाराएं वह रही हैं, और तट के वृक्षपर चढ कर दशों दिशाओं में देख रही है, परन्तु प्राणवल्लभ को न देख धरती पर आ पडती है. यह देख कुमार का मन दया से आर्द्र हो गया. वह विचारने लगा कि यह चकवी प्रियतम का वियोगरूप शोकाग्नि से जल रही है; चंद्रमा की चंदन समान शीतल चांदनी इसे दावानल समान, कोमल पल्लव खड्ग समान, चंद्र किरण वज्र समान, और स्वर्ग भी नर्क समान भासता है. ऐसा सोचते २ उसे अंजना की याद आई और समीप ही व्याह का स्थान देख उसका हृदय भिद गया. वह विचार ने लगा कि जब यह चकवी

एक ही रात्रि का वियोग सहन नहीं कर सकी है तो वह अंजना, जिसको मुझ पापीने बावीस वर्ष से त्याग दी है, कैसे जीवती होगी? हाय! मुझ वज्र हृदय ने उस निर्दोष महा सती को वृथा त्याग दी है. अब मैं क्या करूं? पिता से विदा लेकर निकला हूं सो वापिस कैसे जाऊं? बड़े संकट की बात है. यदि मैं उसे विना मिले संग्राम के लिये जाऊंगा, तो वह निश्चय ही मरण को प्राप्त हो जायगी और उसके अभाव से मेरा भी अभाव होगा.

मित्र प्रहस्त, जो मित्र के दुःखसे दुःखी और सुखसे सुखी रहता था, कुमार को चिंताग्रस्त देख पूछने लगा—"तुम्हें इस अवस्था में देख मेरा मन व्याकुल हो रहा है, इस लिये लज्जा छोड़ मुझे सर्व हाल कहो." कुमार ने सब वृत्तान्त कह सुनाया. प्रहस्त क्षणेक विचार कर बोला—"हे मित्र! तुम युद्ध के लिये घरसे माता पिता की आज्ञा ले निकले हो, सो पीछे जाना युक्त नहीं, और यदि अंजना को यहां बुलवावें, तो वह भी लज्जा की बात है, इसलिये वहा पर गुप्त रीति से चलें और उससे आनन्दरूप सुख सभाषण कर शीघ्र ही सूर्योदय के पहिले ही चले आयगे. ऐसा करने से तुम्हारा चित्त निश्चल हो जायगा और शत्रु को जीतने का निश्चय से यही उपाय है.

पवन कुमार मुद्गर नामा सेनापति को कटक की रक्षा सौंप, सुगंधादि सामग्री ले प्रहस्त सहित आकाश मार्ग से अंजना

के महल पर गुप्त रीती से गये. पवन कुमार बाहर खड़ा रहा और मित्र प्रहस्त समाचार देने को भीतर गया. उसने हाथ जोड़ अंजना को पवनंजय के आने के हाल कह सुनाए, तब अंजना बोली—"हे प्रहस्त! मैं पुण्यहीन पाप कर्म के उदय से पति की कृपा रहित हूं, सो तुम क्यों वृथा हंसी करते हो?"

प्रहस्त बोला—"हे पतिव्रते! अब तेरे सब अशुभ कर्म नष्ट हुवे हैं] और तेरा प्राणनाथ तुझसे प्रसन्न हो यहां आया है."

वसंतमाला बोली—"हे भद्र! मेघ बरसे तबही भला, इसलीये इस के प्राणनाथ इसके महल में पधारें, तो इसका बड़ा भाग्य हो." इतनेमें पवनकुमार भीतर आगये. पति को देख महासती अंजना ने हाथ जोड़ मस्तक नमाय पैर पड़े. कुमारने उसका मस्तक अपने कर से उठा, उसका कर गह सेजपर बैठाई. प्रहस्त नमस्कार कर बाहर चला गया और वसंतमाला भी अपने स्थान को गई.

पवन कुमार लज्जित हो सुंदरीसे वारंवार कुशल पूछने लगा और उसका जो वृथा निरादर कियाथा उसकी क्षमा मांगने लगा.

अंजना बोली—"हे नाथ! इसमें आपका क्या दोष है? दोष तो मेरे पूर्वोपार्जित पापकर्मोंका ही है. आप मेरी इतनी विनय क्यों करते हो? मैं तो आपके चरणकी रज हूं." उन दोनोंको परस्पर प्रेमालाप करते देख निद्रा देवी भाग गई,

परन्तु पिछले पहर उसने अपना अधिकार उनपर जमा लिया. प्रभातका समय हो आया, तब मित्र प्रहस्तने कुमारको जगवाय, उसे रात्रिकी कुशळ पूछ, कहने लगा–" हे मित्र ! अब चलें. प्रियाजीका सन्मान फिर आकर करना और कोई न जाने इस प्रकार लौट चलें, अन्यथा लज्जित होना होगा."

पवन कुमार बोला–" हे मित्र ! ऐसा ही करना चाहिये". तब प्रहस्त तो बाहिर गया और कुमार प्राणवल्लभा को अति स्नेहसे उरसे लगा कहने लगा–"हे प्रिय ! अब हम जाते है. तुम उद्वेग मत करना. थोडेही दिनोंमें हम स्वामीका कार्यकर आते हैं और फिर अपन आनंदसे रहेंगे."

अंजना बोली–"हे महाराज कुमार! मेरा ऋतु समय है इसलिये गर्भ स्थितिका संभव है. अब तक आपकी मेरे उपर कृपा दृष्टि न थी, सो सब ही लोग जानते है, इस लिये मेरे कल्याण के निमित्त अपने आगमन का समाचार मातापिता से कहते जाना."

पवनकुमार बोला–" हे प्यारी ! हम मातापिता से आज्ञा ले विदा हुए है, सो अब इनके समीप जानेमें लज्जा आती है और यदि लोग सुनेंगे तो हास्य करेंगे. तुम्हारे गर्भ प्रकट होने के पहिले ही हम लौट आयंगे. तुम चित्त प्रसन्न रक्खो, और यदि कोई पूछे तो लो, यह हमारी मुद्रिका दिखाना". ऐसा कह पवनकुमार अंजना को मुद्रिका दे और उससे विदा हो, वह मित्र सहित कटक में आगया.

अंजनाकुं वनवास.

कुछ काल व्यतीत होने पर अंजना के गर्भ के चिन्ह प्रकट हुए. सासु केतुमती उसे गर्भिणी देख पूछने लगी—" हे चांडालिनी ! यह कर्म तूने किस के साथ किया ? " अंजनाने हाथ जोड़ प्रणाम कर पति के आगमनका सर्व वृत्तान्त कह सुनाया.

केतुमती बोली—" हे पापिनी ! मेरा पुत्र तो तुझसे बहुत विरक्त है. वह न तो तेरा मुख देखना चाहता है और न तेरे शब्द सुनना चाहता है; और वह हमारी आज्ञा ले संग्राम को गया है, फिर वह तेरे पास कैसे आसक्ता है ? हे निर्लज्जे ! धिक्कार है तुझ पापिनी को, जिसने चंद्रमा की किरण समान हमारे उज्ज्वल वंश को कलंक लगा दिया ! इस वसंतमाला सखीने तुझे ऐसी बुद्धि दिखाई है. वेश्या के पास कुलटा रहे, तो काहे-की कुशल ?"

अंजना ने विश्वासार्थ सासु को पति की दी हुई मुद्रिका दिखाई, परन्तु उसने न मानी और क्रूर नामा एक किंकर को बुला उसे आज्ञा दी कि उन दोनों को गाड़ी मे बैठाय महेंद्रपुर के समीप छोड़ आवे. तब क्रूर नामा किंकर उन्हे गाड़ी में बैठा महेंद्रपुर के समीपवर्ति वन में छोड कहने लगा—" हे देवी ! मैंने अपनी स्वामीनी की आज्ञा से तुम्हे दुःख का कार्य किया है सो क्षमा करना."

महासती अंजना को देख सूर्य्य की प्रभा चिता से मंद हो गई. धीरे २ दशो दिशाएं अंजना के अश्रुओ से बने हुए बादलों से श्याम होगई. पक्षी कोलाहोल करने लगे, मानो अंजना के दुःख से दुःखित हो वे पुकार कर रहे हो. रात्रिको वसंतमाला ने पल्लवों का साथरा बिछा दिया, परन्तु उस सती के अश्रूओं की गर्मी से निद्रा पलायन कर गई, रात्रि वर्ष बराबर बीती. जब प्रभात हुवा, तो वह अतिविह्वल हो पिताके घरकी ओर चली. जब वह महल के द्वार पर पहुंची, तो दुःखसे विकृतरूपा अंजनाको द्वारपालने न पहिचान, अंदर जानेसे मना किया. जब सखीने सर्व वृत्तान्त कह सुनाया, तो द्वारपाल ने भीतर जा राजासे विनंती की–हे महाराज ! आपकी पुत्री आई है. राजाने अपने प्रसन्नकीर्त्ति नामा पुत्रको सन्मुख जा अंजनाको लानेकी आज्ञा दी, परन्तु द्वारपालके यथार्थ विनती करनेपर राजाने लज्जा कारण सुन महाकोपायमान हो पुत्रको आज्ञा दी कि उस पापिनीको नगरसे बाहर निकाल दो. तब महोत्सव नामा मंत्रि बोला–" हे राजन् ! ऐसी आज्ञा उचित नही. वसंत मालासे सब ठीक करलो. सासु केतुमती महाक्रुर है, इसलिये उसने उसे झुठा दोष लगा निकाल दिये हैं, और अब तुम भी उसे निकाल दो, तो वह किसके शरण जाय ? "

महोत्सव सामंत के ये न्याययुक्त वचन उसने ऐसे बहा दिये, जैसे कमल पत्र जल बिंदुओंको अपने पर न ठहरने

दे, और कहने लगा.—"यह वसंतमाला जो उसके पास सदा रहती है, कदाचित् उसके स्नेहसे सत्य बात न बतावे, तो हमें कैसे निश्चय हो ? अंजनाके शीलमें संदेह है, इस लिये उसे नगर के वाहर निकाल दो और नगर निवासियोंको भी आज्ञा दे दो कि उसे कोई आश्रय न दे.

तब अंजना कहने लगी—" हे सखे ! यहां सब पाषाण चित्त बसते हैं, इस लिये वनमें चलें. अपमान से तो मरना ही भला है." ऐसा कह वह सिंह से भयभीत मृगी की नाईं वन की ओर चली. गर्भ के भार से आकाश मार्ग से जाने को असमर्थ अंजना सखी के कांधेपर हाथधर महा कष्ट से पैर रख-ने लगी. वन अनेक अजगरों से पूर्ण, दुष्ट जीवों के नाद से अत्यन्त भयानक और अति सघन है, जहां अति तीक्ष्ण कंकर और भीलोंके समुह बहुत हैं. धीरे २ वह पहाड की तलहटी तक आई और वहां आसुं भर बैठ गइ और वसंतमाला को कहने लगी—" हे सखे ! मैं एक पैर भी आगे नहीं धर सक्ती हूं. अब मैं यहां से आगु न चलूंगी. चाहे मृत्यु भी आजाय, तौभी मैं यहांसे न हटूंगी. "

सखी उसे मधुर वचनों से शांति उपजा कहने लगी-" हे देवी ! देखो, यह एक गुफा सामने ही है. कृपा कर यहां से उठ बहां सुख से बैठना. यहां क्रुर जीव विचरते हैं. और तुम्हे गर्भ की रक्षा करना चाहिये, सो हठ मत करो." तब वह आताप की मारी सखी के वचन से और वन के भयसे चलने

को उद्यत हुई और सखी उसे हस्तालंबन दे, विषम भूमि से निकाल गुफा के द्वार पर लेगई. विना विचारे गुफामें प्रवेश करने के भयसे और विषम मार्ग के श्रम से वे दोनों एक पत्थर पर बैठ गई और गुफा में देखने लगी. वहांपर एक पवित्र शिला पर कोई चारण मुनि विराजमान थे, सो वे उन्हें दिखाई दिये. वे दोनों सब दुःख को भूल, मुनि के समीप गई और तीन प्रदिक्षणा दे, हाथ जोड, मुनि के चरणों में अश्रु-रहित निश्चल नेत्र लगा विनंती करने लगी—"हे कल्याणरूप! आपके शरीर में कुशल तो है ?"

मुनि अमृत तुल्य परम शांत वचन कहने लगे—"हे कल्याण रूपीणियों ! हमारे कर्मानुसार तो सब कुशल है. ये सब जीव अपने २ कर्मों के अनुसार फल भोगते है. देखो कर्मकी विचित्रता ! कि राजा महेंद्र ने अपनी निर्दोष पुत्री को निकाल दी है." सो सर्व वृत्तान्त के ज्ञाता मुनि को नमस्कार कर वसंतमाला पूछने लगी—"हे नाथ ! कौन कारण पवनकुमार इस अंजना से उदास हुए, फिर किस कारण अनुरागी हुए, और कौन मंदभागी इसके गर्भ मे आया है जिससे इसका जीवन संशय में है ?"

तब स्वामी अमितगति तीन ज्ञानधारी सर्व वृत्तान्त यथार्थ कहने लगे—"हे पुत्री ! इस गर्भ में कोई उत्तम पुरुष आया है और जो यह दुःख भोग रही है वह पूर्वोपार्जित कर्मोंका फल है सो सुनो"—

की, जिससे वह द्वेष को प्राप्त हुआ. फिर युद्ध के लिये घर से निकल मान सरोवरपर डेरा किया. वहां संध्या समय चकवी-का विरह देख करुणा उत्पन्न हुई, और रात्रिको गुप्त रीतिसे तेरे महल में आया और तुझे ऋतुदान दिया, जिस से तू गर्भवती हुई है.

"है वालके ! तू कर्म के उदय से ऐसे दुःख को प्राप्त हुई है. अव तु संसार समुद्र से तारनेवाले श्रीजिनदेवकी भक्ति कर, क्यों कि इस पृथ्वीपर जो सुख हैं, वे सव जीनदेव की भक्ति के प्रभाव ही से है. हे पुत्री ! अव तू यथाशक्ति नियम ले और जिन धर्म का सेवन कर और यह वालक जो तेरे गर्भ में आया है वह महा कल्याण का भाजन है. इस पुत्र के प्रसाद से तू परम सुख पावेगी. तेरा पुत्र अखंड वीर्य है. थोड़े ही दिनोंमें तेरा पति तुझे आ मिलेगा, इस लिये हे भव्ये ! तू चित्तमें खेद न कर और प्रमाद रहित शुभक्रिया में उद्यमी हो", ऐसा धर्मोपदेश दे मुनिराज आकाश मार्गसे विहार कर गये.

मुनिराजके वचन सुन अंजना सुंदरी और वसंतमाला वहुत प्रसन्न हुई और मुनि के विराजने से पवित्री कृत गुफामें पुत्र प्रसूतिका समय देखती रहने लगी.

हनूमानजीका जन्म.

अथानंतर उस गुफा के मुख एक महा भयंकर सिंह आया और महा विषम शब्द से वन को ऐसा गुंजारने लगा, मानो भय से पहाड रोते हों. उस शोचनीय दशामें अंजनाने यह प्रतिज्ञा की कि यदि इस उपसर्ग से मेरा शरीर जाय, तो मेरा अनशन व्रत है और यदि उपसर्ग टरे तो भोजन लुं.

सखी वसंतमाला बहुत विव्हल हो हाथमें खड्ग ले कभी आकाश में जाती और कभी भूमि पर आती. उसी ही गुफामें एक मणिचूल नामा देव रहता था जिस की रत्नचूड़ा नामा महा दयावती स्त्री थी वह यह उपसर्ग देख पति से बोली—"हे देव! देखो, ये दो स्त्रियें सिंह से महा भयभीत है सो तुम इनकी रक्षा करो."

तब गंधर्व देवको दया उत्पन्न हुई और उसने तत्काल अष्टापद का रूप धारण कर सिंह को ऐसा भगाया जैसे सर्प को गरुड़ भगाता है, फिर वह गंधर्व आनंदित हो ऐसा गाने लगा, जिससे मनुष्य तो क्या, देव तकभी मुग्ध हो जावें.

एकदिन अंजना सखी से बोली—"हे सखी, आज मुझे कुछ व्याकुलता है". वसंत माला बोली—"हे शोभने, तेरा प्रसुति समय आया है सो तू आनंदित हो," ऐसा कह उसने कोमल पल्लवों की एक सेज रची, जिसपर पुत्रका जन्म हुआ. जैसे पूर्व दिशा सूर्य को प्रगट करती है, तैसे अंजना ने हनूमान-

जीको जन्म दिया. गुफा अन्धकार रहित हो प्रकाश रुप हो गई. अंजना पुत्रको छातीसे लगा कहने लगी-"हे पुत्र! तू ऐसे गहन वनमें उत्पन्न हुआ है इस लिये मैं तेरा जन्मोत्सव नहीं कर सकी. यदि तू तेरे दादा या नाना के घर जन्म लेता, तो बडा भारी जन्म महोत्सव होता. तेरा चंद्रमुख देख कौन आल्हादित न होता? क्या करुं मैं मंद भागिनी! सर्व वस्तु रहित हूं. पूर्वोपार्जित कर्मों ने मुझे ऐसी दुःखी बनाई है कि मै कुछ नहि कर सक्ति हूं. प्राणियों को सबसे अधिक दुर्लभ वस्तु दीर्घायु है सो हे पुत्र! तू चिरंजीव हो. तू है तो मेरा सर्व है." अंजना के मुखसे ऐसे दिन वचन सून वसंतमाला बोली-"हे देवी! तू कल्याण पूर्णी है. इस के सुंदर रुप और शुभ लक्षण से वह महा ऋद्धिका धारक होगा ऐसा दिखाई देता है. देख, तेरे पुत्रके उत्सव में मानो यह वेलरुप वनिता जिसके पल्लव चलायमान हैं नृत्य कर रही है और भ्रमर गुंजार रहे है वे मानों संगीत कर रहे है."

अथानंतर वसंतमालाने आकाश मार्ग से जाता हुआ सूर्यके तेज समान प्रकाशरुप एक विमान देखा और अपनी स्वामिनी से कहा, तब अंजना यह समझ कि कोई निःकारण वैरी मेरे पुत्र को हर ले जायगा, रुदन करने लगी. उस का विलाप सुन विद्याधर ने आकाश से विमान उतार गुफा के द्वार पर थांभा और स्त्री सहित उसमें प्रवेश किया. वसंतमाला ने उनका सत्कार किया और आसन दिया. विद्याधर वसंतमाला से पूछने लगा-"हे शुभानने! यह बाई कौन

है ? किसकी पुत्री है, किसकी प्राणवल्लभा है और किस कारण वन में रहती है ?"

तब वसंतमाला, जिसका कंठ दुःख से भर आया था, नीची दृष्टि कर बडे कष्ट से बोली—"हे महानुभाव! तुम्हारे वचनहीसे तुम्हारे अन्तःकरण की शुद्धता पाई जाती है. यदि तुम्हे इसके दुःख के सुनने की इच्छा है तो मैं कहती हूं. यह जगत् प्रसिद्ध, महा यशवान् नीतिवान, निर्मल स्वभाव राजा महेंद्रकी पुत्री है, और राजा प्रल्हाद के पुत्र पवनकुमार की प्राणवल्लभा है. एक समय वह कुमार पिता की आज्ञा ले रावण के निकट जा रहा था, वह कुमार मानसरोवर के तट से रात्रि में इसके महलमें आया, और ऋतुदान दे सुबह होने के पहिले ही चला गया, जिससे इस के गर्भ की स्थिति हुई. सासु केतुमतिने इसके शीलकी शंका कर इसे पिताके घर पठा दी. पिताने भी अपयश के भय से इसे निकाल दी. सो यह बडे कुल की बालिका आलंबन रहित हो यूथ से बिछडी हुई मृगी की नाई इस वन में रहती है. यह वन महा उपसर्ग का स्थान है. न जाने इसे कब सुख होगा? तब वह हनूरुह द्वीपका प्रतिसूर्य नामा राजा बोला—"हे! भव्ये! मैं राजा चित्रभानु और राणी सुंदरमालिनी का पुत्र हूं. अंजना मेरी भानजी है. इसे मैंने बहुत दिनों से नहीं देखी थी इसलिये नहीं पहिचानी." ऐसा कह उसने अंजना को बाल्यावस्था से ले सब हाल कह सुनाए. पूर्व वृत्तान्त सुन अंजना उसे मामा

जान उसके गले लगी और वहुत रोई. राजा प्रतिसूर्य और उसकी राणी भी वहुत रोई, जिससे वन शब्दमई हो गया. कुछ काल पश्चात् उसने जलसे अंजना का मुख प्रक्षालन कराया और आपने भी वैसा किया. वन भी शब्द रहित हो गया, मानों वह इनकी वार्ता सुनना चाहता हो. अंजना ने मामी से क्षेम कुशल पूछी और मामा से कहने लगी–"हे पूज्य! मेरे पुत्रका समस्त शुभाशुभ वृत्तांत ज्योतिषियों से पूछो. तव सावंतसर नामा ज्योतिषि जो साथ में था, वोला कि बालक की जन्म वेला वताओ. वसंतमाला वोली कि आज ही अर्द्ध रात्रि गये पुत्र का जन्म हुवा है. ज्योतिषि लग्न स्थाप, बालक के शुभ लक्षण जान यों कहने लगा–

"यह वालक मुक्तिका भाजन है, फिर जन्म नहीं लेगा. यदि तुम्हे शंका है तो मैं संक्षेप में कहता हूं सो सुनो. चैत्र शुक्ल अष्टमी की तिथि है, श्रवण नक्षत्र है, मेष का सूर्य उच्च है, शुक्र तथा शनैश्चर दोनो मीन के है, सूर्य पूर्ण दृष्टि से शनि को देखता है, मंगल दश विश्वा सूर्य को देखता है, बृहस्पति पंद्रह विश्वा सूर्य को देखता है, सूर्य दश विश्वा बृहस्पति को देखता है, बृहस्पति पूर्ण दृष्टि चंद्रमा को देखता है. चंद्रमा बृहस्पति को देखता है. बृहस्पति शनैश्चर को पंद्रह विश्वा देखता है. शनैश्चर बृहस्पति को दश विश्वा देखता है. बृहस्पति शुक्र को पंद्रह विश्वा देखता है और शुक्र बृहस्पति को पंद्रह विश्वा देखता है. इस के सब ही ग्रह बलवान बैठे है.

सूर्य और मंगल दोनों इसका अद्भुत राज्य निरूपण करते हैं और बृहस्पति और शनि मुक्ति के दाता हैं. जो एक बृहस्पति उच्चस्थान बैठा है, सो सर्व कल्याणकी प्राप्ति का कारण है; और ब्रह्मनामा योग है; और मुहूर्त शुभ है, सो इसे अविनाशी सुखका समागम होगा, इस प्रकार सबही ग्रह बलिष्ट है.

राजा प्रतिसूर्यनें जयोतिषिको बहुत दान दिया, और भानजी से बोला—"हे वत्से ! हम सब हनूसह द्वीप को चलें और वहां बालक का जन्मोत्सव भली भांति होगा." अंजनाने मामा के परिवार सहित गुफा को छोड़ी, और विमान में बैठ आकाश मार्ग से हनूसह द्वीप के लिये प्रस्थान किया. मार्ग में बालक कौतुक से मुकलता हुआ माता की गोद में से उछला, जिस से वह विमानमे से गिर गया ! यह देख अंजना और प्रतिसूर्य और उसके परिवार के सब लोग हाहाकार कर विलाप करने लगे. अंजना अति दीन वदन हो रुदन करने लगी—" हाय पुत्र ! यह क्या हुआ ? हाय ! निर्दयी दैवने मुझे रत्न संपूर्ण निधान दिखाकर फिर छीन लिया और पति के वियोग से मुझ दुःखित का पुत्ररुप आलंबन खींच लिया ! अब मेरे जीवन में क्या सार है ? " तब राजा प्रतिसूर्य बालक के लिये नीचे उतरा, तो उसने देखा कि—बालक एक शिलापर सुख से अपना अंगुठा चूसता क्रीडा कर रहा है और पहाड के हजारों खंड होगये हैं. यह देख वह

आश्चर्यित हुआ. उसने उस उठा अंजना को सौंपा. माता ने भी विस्मित हो उसका सिर चूमा और छाती से लगा लिया.

राजा प्रतिसूर्य अंजना से कहने लगा.—" हे बालके ! यह बालक महावज्र रूप है, जिसके पड़ने से पहाड चूर्ण होगया. जब इसका बाल्यावस्थाही में देवताओं से अधिक अद्भुत शक्ति है तो फिर यौवनावस्था की शक्तिका कहना ही क्या है? यह निश्चय चरम शरीरी है. जब राजा प्रतिसूर्य अपने नगर के समीप आया, तब नगर के सब लोग नाना प्रकार के मंगल द्रव्यों सहित सन्मुख आये. राजा ने राज मंदिरमें प्रवेश किया और महान जन्मोत्सव किया. पर्वतमें जन्म होनेसे और उसपर गिरने से उसका चूर्ण कर डालने से बालक का नाम श्री "शैल" रक्खा गया और हनूरुह द्वीप में जन्म महोत्सव होनेसे " हनूमान " नाम पृथ्वीपर प्रसिद्ध हुआ.

पवनकुमार का अंजना के विरह में वन में फिरना.

पवनकुमार कटक ले पवन की नाईं शीघ्र ही रावण के निकट गया, और आज्ञा पा बरुण से युद्ध करने लगा. बहुत काल तक नाना प्रकार के शस्त्रों से उन दोनों में युद्ध होता रहा. अन्तमें पवन कुमार ने वरूण को बांध लिया और खर-दुषण को छुड़ाया. वरुणने रावण की सेवा अंगीकार की.

रावण पवनकुमार से अति प्रसन्न हुआ और उसे बहुत सा पारितोषक दे विदा दी. पवनकुमार रावण से विदा हो अंजना के प्रेम से-शीघ्र ही घर को चला. पिताने पुत्र का विजयी हो लौट आना सुन नगरको ध्वजा तोरणादिसे शोभित किया और सब परिजन और पुरजन सन्मुख आये. कुमारने माता पिताको प्रणाम कर सबका मुजरा लिया, और क्षणेक सभामें बैठ सबकी शुश्रुषा की. फिर कुमार प्रहस्तको साथ ले अंजना के महलमें गया, परन्तु उसे वहा न पा मित्रसे बोला– " हे मित्र ! प्राणप्रिया विना यह महल जंगल सा भासता है, इसलिये तुम किसीको पूछो कि मेरी प्रिया कहां है ? "

तब प्रहस्त ने बाहिरके लोगों से सब वृत्तान्त निश्चय कर कुमार को कह सुनाया. वह हाल सुन कुमार का हृदय क्षोभित हुवा. माता पिता से विना ही पूछे वह मित्र सहित महेंद्र के नगरकी ओर चला, राजा महेंद्र ने पवनकुमार का विजयी हो पितासे मिल महेंद्रपुर का आना सुन नगरी की बड़ी शोभा कराई और आप अर्घादिक उपचार ले सन्मुख आया और बहुत आदर से कुंवर को नगर में लेगया. कुमार ने राजमंदिर में प्रवेश किया और क्षणेक ससूर के समीप विराज सब का सन्मान किया और यथायोग्य वार्तालाप कीया. राजा से आज्ञा ले अंतःपुर मे जा सासू का मुजरा किया और फिर प्रिया के महल पधारा. वहां भी प्राणवल्लभा को न देख अति विरहातुर हो एक दासी से कुमार ने पूछा-

"हे बालके! हमारी प्रिया कहां है?" वह वोली–"हे देव! यहां तुम्हारी प्रिया नहीं है. महाराज ने उसे न रक्खी, इस लिये न जाने वह कहां गई है." ये शब्द कुमार को वज्रपात समान लगे, मुख कमल मुरझा गया और शरीर जीव रहित सा होगया. तब ससुर के नगर से निकल वह अंजना की खोज के लिये पृथ्वीपर भ्रमण करने लगा, मानों पवनकुमारको पवन ही लगी हो. उसे बहुत आतुर देख प्रहस्त बोला–" हे मित्र! खेदखिन्न क्यों होते हो? यह पृथ्वी कौन वडी है? जहां होगी वहांसे ढूंढ निकालेंगे."

कुमार बोला–"हे मित्र! अंजना विना यह संसार मुझे असार लगता है. मैं सब पृथ्वीपर उसे ढूढुंगा और यदि वह न मिलेगी, तो मैं भी नहीं जीऊंगा. तुम आदित्यपुर जाओ और मेरे माता पितासे सब वृत्तान्त कह सुनाना."

पवनकुमारका अति आग्रह देख प्रहस्त आदित्यपुरको लौट गया और राजा प्रल्हादको सब हाल कह सुनाया. प्रल्हाद बहुत दुःखित हुआ और राणी केतुमाति भी पुत्रके शोकसे रूदन करती कहने लगी.–" हे प्रहस्त! जो तूने मेरे पुत्रको अकेला छोड दीया सो ठीक नहीं किया.

प्रहस्त बोला–" हे माता! कुमारने बहुत ही आग्रह कर मुझे तुम्हारे पास भेजा है, परन्तु अब मैं उसके निकट जाता हूं."

राणीने पूछा-"वह कहां है ?"

प्रहस्तने उत्तर दिया-"जहां अंजना वहां वह होगा."

राणी-"अंजना कहां है ?"

प्रहस्त-"मै नहीं जानता. हे माता ! जो विना विचारे कोई काम करता है तो उसे पछताना पड़ता है. कुमार ने यह निश्चय किया है कि यदि मै प्रिया को न पाऊंगा, तो प्राण त्याग करूंगा." यह सुन केतुमति बहुत पश्चाताप करने लगी.

उधर पवनकुमार अंबर गोचर हाथी पर चढ़ पृथ्वीपर विचरने लगा. उसके हृदय में यह चिंता व्यापने लगी कि वह कमलवदना, जिसके चित्त मे मेरा ही ध्यान है, शोकाग्नी से संतप्त हो कहां गई होगी ? कहीं गर्भाभार से पीडित हो वह प्राण रहित न हो गई हो अथवा दुःख से नेत्राधा हो कहीं अजगर सेवित कूप मे न पड गई हो! इस भयंकर वन में प्याससे अर्दित हो कहीं वह भोली गंगामें उतरी हो और वहन गई हो अथवा अति तीक्ष्ण कंकर और कंटकों से विदारित पद हो एक पैड़ भी न चल सकने से न जाने उसकी क्या दशा हुई होगी ? कहीं दुःख से गर्भपात न हुआ हो और वह महा विरक्त हो आर्या न होगई हो ? प्रिया को कहीं भी न पा उसे संसार शून्य लगने लगा. उसका मन न पर्वत मे, न मनोहर वृक्षो में और न नदी के तट लगता. वह इतना विवेक रहित हो गया कि सुंदरी की बातें वृक्षों से पूछने लगा. भ्रमण करता करता वह भूतरवर नामा वन मे आया. वहां हाथीसे उतर प्राणवल्लभा

का ऐसा ध्यान करने लगा जैसे कोइ मुनि आत्माका ध्यान धरता हो. फिर हथियार और वस्त्र पृथ्वीपर डाल, गजेंद्र से कहने लगा—" हे गजेंद्र ! अब तुम स्वेच्छाचारी होवो. इस नदी के किनारे शल्लकी वन है सो वहां उसके पल्लव चरते विचरो. और यहां हथिनियों के समुह के समुह हैं सो तुम उनमें कुवर हो फिरो," परन्तु उस कृतज्ञीने स्वामी का साथ नहीं छोडा।

अब राजा प्राल्हाद ने सब विद्याधरों को बुलाये और सब परिजनों को साथ ले वे आकाश मार्ग से कुमार को ढूंढने निकले; और उसे पृथ्वीपर वनों में, तलावों के तट और पर्वतादियों में देखने लगे. राजा प्रतिसूर्य के पास एक दूत गया, जिसने पवनकुमार के कहीं चले जाने के हाल सुनाए. अंजना यह हाल सुन बहुत दुःखित हुई और विलाप करने लगीः—"हाय नाथ ! मेरे प्राणों के आधार मुझ जन्म दुःखारी को छोड़ कहां गये ? क्या मुझ पर क्रोध न छोड़ोगे ? एक वार ही अमृत वचन बोलो. इतने दिन ये प्राण तुम्हारे दर्शन ही की वांछा से रक्खे हैं. यदि तुम दर्शन न दोगे तो ये प्राण मेरे किस काम के ?" उसे ऐसा विलाप करते देख, राजा प्रतिसूर्यने उसे बहुत दिलासा दिया कि हम तेरे पतिको अभीही ढूंढने जाते हैं. ! फिर वह बहुतसे विद्याधरोंको साथ ले मनसे भी अधिक शीघ्रगामी विमानमें बैठ पवन कुमारको खोजने निकला; और राजा प्रल्हादके साथ हो गया. वे ढूंढते २ भूतरवर नामा

अटवी में आये. वहां वर्षाकाल के सघन मेघ समान अंबर गोचर हाथीको देख विद्याधर प्रसन्न हुए और राजा प्रति-सूर्यको कहने लगे कि जहा यह हाथी है वहा पवनकुमार भी होना चाहिये, क्यों कि यह हाथी उसही कुमारका है. हाथी विद्याधरोंके कटकका शब्द सुन क्षोभित हुआ और जब वे उसके समीप गये तो उसने स्वामीकी रक्षार्थ उन्हे भगा दिया और पास नहीं आने दिया. तब विद्याधरोंने उसे हाथिनियो के समुहसे वश किया, क्योंकि जितने वशीकरण के उपाय हैं उनमें स्त्री समान कोई उपाय नहीं है. राजा प्रल्हाद पवन कुमारके समीप गये और उसे कहने लगे–" हे पुत्र! तु महा विनयवान हो हमें छोड़ कहां आया? महा कोमल सेजपर सयन करनेवाले तूने इस महा भीम वनमें कैसे रात्रि व्यतीत की होगी?"

पवन कुमार काठके पुतलेकी नाई निश्चल रह किसी से न बोला. तब अंजना का मामा राजा प्रतिसूर्य पवनकुमार-को छाती से लगा कहने लगा–" हे कुमार! मै सर्व वृत्तान्त जानता हूं सो सुनो. संध्याभ्रनामा पर्वतपर अनंगवीचि नामा मुनि को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ; सो मैं उनकी वंदना कर वापिस आ रहा था कि मार्ग में पर्वत की एक गुफासे किसी स्त्री की रुदन सुनी. तब मैंने विमान से उतर गुफामें प्रवेश किया. वहा अजना को देख मैंने वसंतमाला से वनवास का कारण पूछा. वसंतमालाने सब वृत्तान्त कह सुनाया. वहा

अंजना को एक पुत्र हुआ, जिसकी कांति से गुफा प्रकाश-रूप हो गई.

यह वार्त्ता सुन पवनकुमार हर्षित हो पूछने लगा—"वह बालक सुख से तो है?"

प्रतिसूर्य बोला—"बालक को मैं विमान में बैठा हनूसह द्वीप को ले जा रहा था कि वह माता की गोदमें से उछला और पृथ्वीपर गिर पड़ा!" बालकका गिरना सुन पवनकुमार के मुखसे आह! निकलने लगी.

प्रतिसूर्यने कहा—"सोच मत करो. बालक को गिरा देख मैं नीचे उतरा तो क्या देखता हूं कि पर्वत खंड२ हो गया और बालक एक शिलापर खेल रहा है! मैंने उसे उठा माता को दिया. इस समय अंजना पुत्र सहित हनूसह द्वीपमें सुखसे तिष्ठती है. यह वृत्तान्त सुन पवनकुमारको अंजनाको देखनेकी अभिलाषा तत्काल उत्पन्न हुई. वे सब हनूसह द्वीपको गये. वहां प्रति-सूर्य ने सबको बहुत आदरसे रक्खा और फिर वे सब विद्या-धर प्रसन्न हो अपने २ स्थान को गये. बहुत दिनों में स्त्रीका संयोग पा पवनकुमार वहीं रहने लगे. हनूमान जी बाल्यावस्था-को उल्लंघ नव यौवन में बहुत सी विद्याएं प्राप्त कीं. वे अनेक प्रकार के स्वर्ग के सुख अनुभव करते आनंद से रहने लगे.
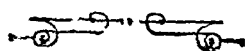
हनूमानजी का रावणकी भानजी से विवाह.

अथानंतर राजा वरण ने फिर आज्ञा लोप की. तब रावण ने कोपायमान हो उसपर फिर चढ़ाई की और सब भूमि गोचरी विद्याधरों को बुलाया, सब सामंतो के पास दूत भेजे और यह संदेशा कहलाया कि आपको अपनी सेना ले मेरेपास बहुत शीघ्र आना चाहिये. हनूरुह द्वीप में भी प्रतिसूर्य तथा पवनकुमार के पास भी दूत आया. दूत के वचन सुन उन्होंने अपनी सेनाएं इकट्ठी की और रवाना होने को उद्यत हुए. चलते समय वे अपने हनूमान कुमार को राज्य सत्ता सौंपने लगे, कारण यह बुद्धिमानों की यह नीति है.

हनूमान जी उन्हे इस कार्य में उद्यत हुए देख कहने लगे—" हे पिताजी ! आप यह क्या करते है ?" इतना कह यौवनशाली हनूमान जी स्वयं सेना सहित रावण के समीप जाने को तैय्यार होगये. तब राजा पवनंजयने कहा—"बेटा ! तुम्हें कुल परंपरा से प्राप्त होने वाले और शत्रुओं की बाधा रहित राज्य की रक्षा करना उचित है."

कुमारने अपना सिर झुका कहा—" पिताजी ! मुझ पुत्र के होनेपर भी आप किस प्रकार जा सक्ते है ? कारण पुत्र का यही धर्म है कि अपने माता पिताको सुखी रक्खे. अन्यथा शोक संताप के करने वाले बहुत से पुत्रों की उत्पत्ति से क्या लाभ है. ? पिता का एक ही भक्त सुपुत्र हो तो वही बस है."

पवनकुमार—"बेटा ! तू अभी सुकुमार है, तुझे युद्ध कर्मका अभी अभ्यास नहीं है," इसलिये तुझे शत्रु के सन्मुख जाना उचित नहीं है." तब कुमारने प्रत्युत्तर दिया—"पिताजी ! पृथ्वी तलपर पुरुष के शक्ति शालीपने की ही प्रशंसा की जाति है। देखिये, गजराज कितना स्थूल होता है और सिंह कितना पतला होता है, परन्तु सिंह की गर्जना मात्र ही से सैकड़ों हस्थी क्षणमात्र में भाग जाते हैं। अत एव यही कहना चाहिये कि शूरवीरता से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं. इस में अवस्था की कोई अपेक्षा नहीं है. आपके पुण्य प्रभाव से मैं क्षणमात्र में शत्रुका पराजय करूंगा." पुत्रके वचन सुन पिता को संतोष हुआ और उसने अनेक शकुनों की प्रेरणा से अपने पुत्र को सन्या के मध्यमें भेजकर उसके चित्त को प्रफुल्लित किया.

कुमार हनूमानने स्नानादिक क्रिया कर मांगलिक वस्तुओं से भगवान की पूजा की; और माता पिता और मामा की आज्ञा ले सामंतो सहित लंका- की ओर प्रस्थान किया. त्रिकुटाचल के सन्मुख विमान में बैठे जाते हुए हनूमानजी ऐसे शोभते थे मानों मंदराचल के सन्मुख चंद्र जाता हो. वे महा उत्साहसे नाना देश, द्वीप और पर्वतों को उलंघते और समुद्रतरंग शीतल स्थानों के अवलोकन करते हुए रावण के कटक में जा पहुंचे. हनूमानजी की सेना देख बड़े २ राक्षस विद्याधर विस्मित होगये. रावण उन्हे देख

सिंहासन से उठा और उसने विनय से नम्रीभूत कुमार को उर से लगाया और पास बैठाया. परस्पर कुशल प्रश्नांतर रावण कहने लगा—" पवनकुमार ने हमसे बहुत नेह बढ़ाया जो तुमसा गुणों का सागर पुत्र हमारे पास भेजा. तुमसा बली पा मेरे सब मनोरथ सिद्ध होंगे. तुमसा रूपवान और तेजस्वी कोई नहीं है. " रावण ने जब हनूमानजी के गुण वर्णन किये तो उनका शरीर लज्जावंत पुरुष की नाई नम्रीभूत हो गया. सत्य है संतोष की यही रीति है.

हनूमानजी विद्या से समुद्र को भेद वरुण के नगर में गये. रावण को कटक सहित आया जान वरुण योद्धाओं को ले पुत्रों सहित नगर के बाहर आया. वरुण के पुत्रों ने नाना प्रकार के अस्त्रों के समुह से आकाश को आच्छादित कर दिया, और रावण के कटक को ऐसा व्याकुल किया जैसे असुरकुमार देव क्षुद्र देवों को कंपायमान करता है. अपने कटक को व्याकुल देख रावण वरुण के पुत्रों पर गया और जैसे कोई गजेंद्र वृक्षों को उपाड़े तैसे ही उसने बड़े २ योद्धाओं को उपाड़े। एक तरफ रावण वरुण के सौ पुत्रों से लड़ने लगा और दूसरी तरफ कुंभकर्ण और इंद्रजीत से वरुण लड़ने लगा. रावणका शरीर बाणों से भिद गया तौ भी उसने कुछ न गिना. हनूमान जी रावण को केसूला के रंग समान रक्त शरीर देख वरुण के पुत्रों पर दौड़े और उन्हें कंम्पायमान किया. वे वरुणके कटक पर ऐसे पड़े, मानों कदली वन में मदोन्मत्त गज ने,

प्रवेश किया हो. उन्हें अपने कटक में क्रीडा करता देख, वरुण उनपर धाया; परन्तु रावण ने नदी के प्रवाह को पर्वत समान रोक दिया. तब रावण और वरुण में घोर युद्ध होने लगा. उसही समय हनूमानजीने वरुण के सौ पुत्रों को बांध लिये. यह हाल सुन वरुण को विद्या का स्मरण न रहा, जिससे रावण ने उसे पकड़ लिया और कुंभकर्ण को सौंप दिया. राजा को पकड़ा सुन वरुण की सेना भागी. कुंभकर्ण ने कोप कर वरुण के नगर को लूटने का विचार किया, तब रावण बोला—"हे बालक! तूने यह क्या दूराचार सोचा? जो अपराध था, सो तो वरुण का था, प्रजाका क्या? दुर्बल को दुःख देना दुर्गति का कारण है और महा अन्याय है." ऐसा कह उसने कुंभकर्ण को शांत किया और वरुण को, जिसका मुख नीचा हो गया था बुला कहने लगा—"हे प्रवीण! तुम शोक मत करो कि मैं युद्ध में पकड़ा गया. योद्धाओं की दो ही रीतियें हैं. मारे जांय या पकड़े जांय. रण से भागना तो कायर-का काम है, इस लिये तुम हमारी क्षमा मांग अपने स्थान को जाओ और मित्र बांधवादि सहित सुख से राज्य करो.

वरुण हाथ जोड़ रावण से कहने लगा—"हे वीराधिवीर! मेरा अपराध क्षमा करो. तुम इस लोक में महा पुण्याधिकारी हो. तुम से जो वैर भाव करे वह मूर्ख है. अहो स्वामीन्! मैं आपके विरुद्ध अब कभी न होऊंगा.

तदुपरांत हनूमान जी ने वरुण के सौ पुत्रों को छोड दिया, तब वरुण हनूमानजी को कहने लगा—"हे कुमार! आप जैसी उत्तम क्षमा मैंने कहीं नहीं देखी. यदि आप मेरी सत्यवती नामा पुत्री को परणो, तो आप समान उदारचित्त पुरुषों से संबंध कर मै कृतार्थ होऊं." इस तरह विनंती कर वरुणने अति उत्साह से हनूमानजी को अपनी पुत्री परणाई.

रावण अपनी राजधानी को लौट गया। वहा उसने हनूमानजी का बहुत सन्मान कर अपनी बहिन चंद्रनखा की महारूपवती पुत्री 'अनंगसुमा' उनको परणाई; और बहुत संपदादिक दे कुंडलपुर का राज्य दिया, और अभिषेक कराया. उस नगर में हनूमानजी सुख से रहने लगे, मानो स्वर्ग लोक मे इंद्र ही हो. फिर किहंकपुर के राजा नलकी पुत्री 'मालिनी' से, जिसने अपनी रूपसंपदा से लक्ष्मी को जीत लिया था, विवाह किया.*

अथानंतर किहकंधपुरी के राजा सुग्रीव तथा राणी सुतारा पद्मावती अपनी पुत्री को नवयौवना देख, उन्हें उसके विवाह की चिंता लगी. माता पिता को रात्रि दिवस नींद नहीं आती और भोजन से अरुचि हो गई. रावण के पुत्र इंद्रजितादि अनेक कुलवान् शीलवान् राजकुमारों के चित्रपट उसे सखियों द्वारा दिखाये, परन्तु उन सब को देख उसने दृष्टि संकोच ली. जब उसने हनूमान कुमार का

---

*तथा किन्नर जाति के विद्याधरोंकी सौ क्षत्रिय परणी.

चित्रपट देखा, तो वह काम के पंच बाणों से भिद गई, तब उसे हनूमान जी में अनुरागिणी जान पुत्री का चित्रपट लिखवाया और हनूमानकुमार के पास भेजा. वह उस चित्रपट को देख ऐसा मोहित हुआ कि सहस्त्र विवाह होने पर भी किहकंधपुर गया. कुमार को आया सुन सुग्रीव अति हर्षित हुआ और सन्मुख आ कुमार का नगर में प्रवेश कराया. पद्मावती कुमार को झरोखे में से देख चकित हो गई ! जैसा वर तैसी कन्या, दोनों का अति हर्ष और बड़ी विभूति से विवाह हुआ. हनूमान जी प्रिया सहित अपने नगर में आये और पुत्र को महा लक्ष्मीवान देख माता पिता सुखस्वरूप समुद्र-में गोते खाने लगे.

सीताहरण.

शंबूक रावण का भानजा और खरदूषण का पुत्र सूर्यहास खड़ग साधने के लिये दंडक वनमें गया. वहां वह ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर और एक ही अन्न का भोजन लेता हुआ बांस के एक बिड़े में बैठा, जहां उसकी माता चंद्रनखा प्रतिदिन भोजन दे आती थी. बारह वर्ष व्यतीत होने पर वह खड़ग प्रकट हुआ; और सात दीन में जो उसे न ले तो खड़ग और के हाथ में जाय और साधने वाले की मृत्यु हो. माता उस खड़ग को देख अति प्रसन्न हुई और यह विचारती की अब तीन दिन और हैं कि मेरा पुत्र वह खड़ग प्राप्त करेगा.

उसही वनमें रामचंद्र जी, लक्ष्मण और सीता भी, पिता की आज्ञानुसार राज्य छोड़ रहते थे. एक समय लक्ष्मण फिरता २ उधर निकल आया, जहां शंबूक तप कर रहा था. लक्ष्मण उस ज्योतिर्मई खड्ग को बास के एक वृक्षपर देख विस्मित हुआ. उसने उस खड्ग को ग्रहण किया और परिक्षार्थ बांस के उसही भिड़ेपर चलाया, जिससे वृक्षों के साथ शंबूक का भी सिर धड़ से अलग हो गया. लक्ष्मण को यह मालुम नहीं हुवा और वह खड्ग ले अपने स्थान पर आ गया. जब दूसरे दिन चद्रनखा पुत्र के लिये भोजन ले वहां आई, तो पुत्र को मरा देख शोकाकुल हो गई और उसके कटे सर को गोद में ले, उसे बार २ चूमा, और महा कोप कर उस के शत्रुको ढूढने चली. ढूढते २ वह वहां आई, जहां महा रूपवान रामचद्रजी और लक्ष्मण बैठे थे. उनके रूप को देख वह अपने प्रबल कोप को भूल गई. तत्काल वह उन पर ऐसी अनुरागिणी हो गई जैसे कोई हंसनी कमल वन को, या मृगी हरे धान्य के खेत को देख कर होवे. कितने ही हाव भाव और प्रेमालाप से भी वह उनका मन चलायमान न कर सकी, तब निराश हो वह घर को गई और अपने बदन और वस्त्रों की दुर्दशा बना पति से विलाप कर कहने लगी कि— मेरे पुत्र को, जिसके सूर्यहास खड्ग प्राप्त कर ने में केवल तीन ही दिन रह गये थे, दुष्ट लक्ष्मण ने मार डाला है. मुझे

वन में अकेली देख उस पापीने अत्याचार करना चाहा, परन्तु मैं उस के हाथ से बड़े कष्ट से निकल यहां तक आई हूं. यह सुन खरदूषण क्रोधसे ज्वलित हो लड़के का वैर लेने के लिये बड़ी भारी सेना ले दंडकवन में आया. रामचंद्रजी भी लड़ने के लिये उद्यत हुए; परन्तु लक्ष्मणने उन्हे न जाने दिया और यह कह कि यदि मुझपर भीड़ पड़ेगी तो मैं सिंहनाद करूंगा, वह खरदूषण से लड़ने के लिये गया.

जब शंबूक के मामा रावण ने भानजे की मृत्यु के हाल सुने तो, वह भी पुष्पक विमान में बैठ लड़ने के लिये चला. मार्ग-में उसकी दृष्टि राम सहित सीता पर पडी. वह उस महा सती को देख महा मोह को प्राप्त हुआ और अपने वहां आगमन-का कारण भूल गया. उसने अवलोकनी विद्या से मालुम कर लिया कि यदि मैं सिंहनाद करूंगा तो श्री राम सीता को अके-ली छोड़ लक्ष्मण की सहायता को अवश्य जायगा. उसने वैसाही किया. जब श्री राम लक्ष्मण के पास पहुंचे, तो उसने विस्मित हो श्री राम को सीता की रक्षार्थ वापिस भेज दिया. इतने में सीता को अकेली देख रावण उसे विमान में बैठा ले गया. श्री राम लौटनेपर सीता को न देख हाहाकार कर विलाप करने लगे और जब लक्ष्मण खरदूषण को मार लौटे, तो सर्व हाल जान वह भी अत्यन्त शोक करने लगा.
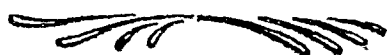
सुग्रीव का श्री राम से मिलाप.

जब किहकंधपुर के राजा सुग्रीव की राणी सुतारा पर मोहित हो साहसगतिनामा एक विद्याधर सुग्रीव का रूप बना उसको बहुत दुःख देने लगा. वह कृत्रिम सुग्रीव राजा बन बैठा और सत्य सुग्रीव दुःख का मारा नगर छोड बाहर फिरने लगा. उसने अनेक राजाओं की सहायता ली, परन्तु वह कृत्रिम सुग्रीव किसीसे न हारा, तब उसने अपने दामाद हनूमानजी की सहायता ली, परन्तु हनूमानजी भी उसे न जीत सके. अन्त में उसने श्री राम से निवेदन किया. श्री रामने विचारा कि इसका और मेरा दुःख समान है. सो यदि मैं इसपर उपकार करूं, तो यह मेरा मित्र होगा. फिर यदि यह मेरा उपकार न करेगा, तो मैं निर्ग्रंथ मुनि हो मोक्षका साधन करुंगा, ऐसा विचार वे सुग्रीव से कहने लगे—

"हे सुग्रीव ! जिस विद्याधर ने तेरा रूप बनाया है उसे जीत तेरा राज्य निष्कंटक कर तेरी स्त्री तुझे मिला दूंगा. और तेरा काम हुए पश्चात् तूने सीताकी खबर हमें ला देना कि वह कहां है." तब सुग्रीव कहने लगा—"हे प्रभो ! मेरा कार्य हुए बाद यदि मैं सात दिन में सीता की सुध न लाऊं तो, अग्नि में प्रवेश करूं."

तब श्री राम और लक्ष्मण ने किहकंधपुर जा कृत्रिम सुग्रीव को युद्ध के लिये एक दूत भेजा, वह सब सेना से नगर के बाहर आया और दोनों सुग्रीवों में युद्ध होने लगा.

अन्त में कृत्रिम सुग्रीव ने सत्य सुग्रीव के सिरमें एक गदा ऐसा मारा, जिससे वह अचेत हो भूमि पर गिर पड़ा. वह उसे मृत समझ नगर में लौट गया. जब वह सचेत हुवा तब वह कहने लगा—"हे रामचंद्रजी! तुमने उसे नगर में क्यों जाने दिया?"

श्री राम बोले—"हम तुम दोनों को एक स्वरूप देख भेद ही भूल गये कि सत्य सुग्रीव कौन है?"

फिर श्री रामने कृत्रिम सुग्रीव को और युद्धार्थ बुलवाया और सत्य सुग्रीव को छिपा रक्खा. तब श्री राम को देख उसकी वैताली विद्या भाग गई, जिससे उसका सत्य स्वरुप प्रकट हो गया. अब श्री राम और उसके बीच युद्ध होने लगा. अंतमें वह विद्याधर मारा गया, तब रामचंद्रजी ने उसे उसका राज्य सौंप सुखी किया.

सुग्रीव अपनी प्राणवल्लभा सुतारा को पा रामचंद्रजी से अपनी प्रतिज्ञा भूल गया. श्री राम सोचने लगे कि कदाचत् मेरे विरह से तप्तायमान हो सीता परलोक को सिधारी होगी, इस लिये वह उसे न पा अथवा वह अपना राज्य पा निश्चिंत हो गया है, इस लिये हमारा दुःख भूल, सुग्रीव हमारे पास नहीं आता है. ऐसा चिंतवन करते श्री राम की आंखों से आंसु ढल पड़े. तब लक्ष्मण रामचंद्रजी को सचिंत देख क्रोध से प्रज्व-लित हो गया; और हाथ में खड्ग ले सुग्रीव के पास पहुंचा. वहां सुग्रीव की पत्नी सुतारा ने लक्ष्मण को क्रोधाविष्ट देख

वही तेरी पुत्रियों को वरेगा. पिता उन वचनों पर दृढ हो हमें किसी को नहीं देते हैं, जिससे वह अंगारक वैर को प्राप्त हुआ है. साहसगति के मारनेवाले को जानने की अभिलाषा से हम यहां मनोगामिनी विद्या साधने आई थीं. आज हम को देख अंगारक ने इस वन मे अग्नि लगा दी. जो विद्या छ वर्ष और कुछ दिनों में सिद्ध होती है वह हमें उपसर्ग से न डरने के कारण बारह ही दिनों में सिद्ध हो गई है. हे महाभाग ! जो तुम सहाय न करते, तो हमारा अग्नि से नाश होता और मुनि भी भस्म हो जाते.

वन के दाह शांत होने तथा मुनियों के उपसर्ग टरने-के वृत्तान्त सुन, राजा गंधर्व हनुमानजी के पास आया. हनूमानजी से श्री राम का किहकंधपुर मे विराजना सुन, वह अपनी पुत्रियों सहित वहां गया और उनको महा विभूति से श्री राम को परणाई.

वहां से हनूमानजी त्रिकुटाचल की ओर चले. चकतेर उनकी सेना एकदम रुक गई और आगे न बढ़ सकी, तब हनूमानजी ने अपने समीपवर्ती लोगों से पूछा कि मेरी सेना आगे क्यों नहीं चलती है ? क्या यहां कोई असुरों का नाथ चमरेंद्र है अथवा इंद्र है ? इस पर्वत में कोई जिन मंदिर है अथवा कोई चरम शरीरी मुनि है ? तब पृथुमति नामा मंत्रि बोला-" हे देव ! देखिये, यहां कोई मायामई यंत्र है. तब हनूमानजी ने वहां विरक्त स्त्री के हृदय समान एक दुष्प्रवेश

किला देखा, जहां महा भयानक, सर्व भक्षी, और अति तीक्ष्ण करवतों तथा जिह्वा के अग्रभाग से रुधिर उगलते हुए सर्पों से मंडित एक पुतली बैठी थी. विषरूप धुम्रका अंधकार छा रहा था. जो कोई मूर्ख सामंत होने के मान से उद्धत हो प्रवेश करता, तो उसे मायामई सर्प ऐसे निगल जाते, जैसे कोई मेंढक हो. लंका का कोट मंडल ज्योतिष् चक्र से भी ऊंचा है और सर्व दिशाओं से दुर्लंघ्य है. वह यंत्र प्रलय काल के मेघों के समान महा भयानक शब्दों से युक्त और अत्यन्त पाप कर्मियो से निर्माया है. यंत्र को देख हनूमानजी विचारने लगे कि यह मायामई कोट राक्षसों के नाथ ने रचा है, सो अब मैं विद्यावल से उसे तोड़ राक्षसों का मद ऐसे हरूंगा, जैसे कोइ आत्मध्यानी मोह के मदको चूर करे है.

तब युद्ध का मन कर हनूमानजी ने सेनाको आकाशमें थांभी; और आपने मायामई बख्तर पहिन, हाथ में गदा ले, मायामई पुतली के मुख में प्रवेश किया. उनने उस मायामई पुतली की कुक्षि अपने तीक्ष्ण नखों से विदार डाली और गदे के घात से कोट को चूर्ण कर डाला. उस को विखरा देख कोटका अधिकारी वज्रमुख महा क्रोधायमान हो विना विचारे हनूमानजी पर धाया, तब दोनों तरफ के योद्धा नाना प्रकार के आयुध ले परस्पर लड़ने लगे, परन्तु हनूमानजी के सुभटों आगे वज्रमुख के योद्धा दशों दिशाओं में भागे और हनूमानजीने सूर्य से भी अधिक ज्योतिवाले चक्रों से वज्रमुख का सिर पृथ्वीपर गिरा दिया.

युद्ध में पिता का मरण देख, उसकी पुत्री लंकासुंदरी, क्रोध से रक्त नेत्र कर हनूमानजी पर आई और कहने लगी- " हे दुष्ट ! मैं ने तुझे देखा. तुं कहां बच कर जायगा? यदी तुज में शक्ति है तो मुझ से लड़ाई कर. हे पापी ! मै तुझे अभी ही यमपुरी को पठा देती हूं, ऐसा कह उसने हनूमानजी को ऐसा वेढ़ा, जैसे मेघ पटल सूर्य को ढ़ांक दे. उनने विद्या वल से अस्त्रों को अपने पास तक न आने दिये. वह लंकासुंदरी हनुमानजी को जीतने के वदले उनके काम बाणों से हार गई; ओर वह साक्षात् लक्ष्मी समान रूपवती हनूमानजी के भी हृदय में प्रवेश कर गई. लंकासुंदरी ने हनूमानजी पर चलाने के लिये जो शक्ति उठाई थी उसे नीचे डाल दी; और एक पत्र में यह समाचार लिखा, कि मे जो देवताओं से भी नहीं हारी हूं, तुम्हारे काम बाणों से हार गई हूं. उसे बाण में लगा हनूमानजी पर चलाया. हनुमानजी उस पत्र को पढ़ अति प्रसन्न हो रथ से नीचे उतरे और उस सुंदरीकुं मिले, मानो काम रति से मिलता हो. वह प्रशांत वैर हो पिता के मरण का शोक करने लगी. तब हनूमान जी कहने लगे-" हे चंद्रवदनी ! रूदन मत कर. तेरे पिता परम क्षत्रिय थे. शूरवीरों की तो यही रीति है कि स्वामी के कार्य के लिये युद्ध में प्राण तक अर्पण कर दें और तुम शास्त्रों में प्रवीण हो, सो सब अच्छी तरह जानती हो, इस लिये तुम आर्त्त ध्यान को छोड़ो. सब प्राणियों को अपने उपार्जे कर्म भोगने ही पड़ते हे." तब वह शोक रहित

हुई और हनूमानजी के साथ ऐसी शोभने लगी, जैसे पूर्ण चंद्रमा से निशा शोभे. हनूमानजी ने स्तंभनी विद्या से आकाश में एक मायामई नगर वसाया और वहीं उनका लंकासुंदरी से पाणि ग्रहण हुआ.

जब प्रभात को हनूमान जी चलने को उद्यमी हुए, तब महा प्रेम से भरी लंकासुंदरी कहने लगी–"हे कंत! कोट के टूटने का हाल सुन रावण खेद खिन्न हुआ होगा, सो तुम अब लंका क्यों जाते हो?"

तब हनूमानजी ने सर्व वृत्तान्त कह सुनाया. वह कहने लगी–"अब तुम्हारा और रावण का वह प्रेम नहीं रहा है. जैसे तैल के नहीं रहने से शिखा नहीं रहती है, वैसे ही स्नेह के टूटने से संबंध का व्यवहार नहीं रहता है. अब तक तुम्हारा यह व्यवहार था कि जब तुम लंका में आते थे, तो नगर में गली २ आनंद होता था और अब प्रचंड रावण तुम से द्वेष रूप है सो वह निःसंदेह तुम को पकड़ेगा, इस लिये जब तुम्हारी उनकी संधि हो जाय, तब उससे मिलना."

हनुमानजी कहने लगे–"हे विचक्षणे! मुझे उससे लड़ाई नहीं करना है. मुझे तो केवल उसका अभिप्राय जानना है. और मैं उस सीता सती का दर्शन करना चाहता हूं, जिसको देख रावण का भी सुमेरु समान अचल मन चलायमान हो गया है." ऐसा कह उनने सेना को लंकासुंदरी के समीप रखी और आप लंका में गये.

हनूमानजी ने थोड़े ही सेवकों को ले निशंकता से लंकापुरी में प्रवेश किया. प्रथम ही वे विभीषण के मंदिर में गये, वहां विभीषण ने उनका बहुत सन्मान किया. फिर क्षणेक बैठ वार्त्तालाप कर हनूमानजी बोले—" जो रावण अर्द्ध भरतक्षेत्र का स्वामी है उसे यह उचित न था कि दरिद्र मनुष्य की नाई पर स्त्री चोर कर लावे. जो राजा हैं वे सर्व मर्यादा के मूल हैं. यदि राजा अनाचारी हो, तो सर्व लोक में अन्याय की प्रवृत्ति होती है. ऐसा चरित्र करने से सर्व लोक में निंदा होती है, इस लिये तुम रावण को कहना कि वह न्याय को न उल्लंघे." तब विभीषण बोला,—" मैं ने भाई को बहुत बार समझाया है, परन्तु वह मानता नहीं है. और आठ दिन से वह मुझ से बोलता भी नहीं है, तथापि तुम्हारे वचन से मैं उसे फिर दबाकर कहूंगा; परन्तु यह हठ उससे छुटना कठिन है. आज ग्यारहवां दिन है. सीता नीराहार है और जल भी नहीं ग्रहण किया, तिस पर भी रावण को दया नहीं उपजी है. यह सुन हनूमानजी का हृदय दया से आर्द्र हो गया और वे प्रमथ नामा वन को, जहां सीता थी, जाने को उद्यमी हुए.

हनूमानजी का सीता से मिलाप.

महा सती सीता को दूर ही से देख हनूमानजी मनमें कहने लगे कि—धन्य है इस माताका रूप! जिसने इस लोक में सर्व लोक जीते हैं, मानों यह कमल से निकली हुई लक्ष्मी ही

विराज रही है. दुःख समुद्र में डूबी हुई है, तो भी इस समान
कोइ नहीं है. जैसे बने तैसे मैं इसे श्री राम से मिलाऊंगा.
उनके लिये तो मैं अपना तन भी दे दूंगा; परन्तु इसका
वियोग न देखुंगा, ऐसा सोच हनूमानजी ने अपना रूप बदला
और मंद मंद पैर धर, आगे जा श्री रामकी मुद्रिका छूपके
सीता के समीप डाली. मुद्रिका को देख सीता को रोमांच हो
आया और मुख भी कुछ हर्षित हुआ. सीता को हर्षित देख
उसके प्रसन्नता के हाल रावण से कहे. रावण ने कार्य सिद्धि
जान मंदोदरी आदि को उसके पास भेजा.

मंदोदरी सीता के समीप जा कहने लगी—"हे बालके!
आज तूने प्रसन्न हो हम पर बड़ी कृपा की. अब लोक के स्वामी
रावण को परण." यह सुन सीता कोपकर कहने लगी—"हे
खेचरी! आज मेरे पति की वार्त्ता आई है. मेरे पति आनंद-
से हैं, इस लिये मुझे हर्ष हुआ है." मंदोदरी ने सोचा कि
आज ग्यारह दिन हुए इसने अन्न जल नहीं लिया है सो कदा-
चित् यह वायु से ऐसी बकती है. तब सीता मुद्रिका लाने-
वाले को कहने लगी,—"हे भाई! मैं यहां भयानक वनमें पड़ी
हूं, सो जो उत्तम जीव मेरे भाई समान स्नेह रखनेवाला यह
मुद्रिका लाया है, वह प्रकट दर्शन देवे. तब हनूमानजी प्रकट
हुए और उनने हाथ जोड़ सिस नमाय नमस्कार की. प्रथम
अपना कुल, गोत्र, मातापिता का नाम बताय उनने अपना
नाम सुनाया; और फिर श्री रामने जो कहा था सो सब कह

सुनाया—' हे स्वामिनी ! श्री राम स्वर्ग विमान तुल्य महल में, विराजते है, परन्तु तुम्हारे विरह रूप समुद्र में वे कहीं भी रति नहीं पाते हैं। समस्त भोगोपभोग तज वे मौन धर, तुम्हारा ही ध्यान करते है. वे विणा का नाद और सुंदर स्त्रियों का गीत नहीं सुनते हैं. वे सदा तुम्हारी ही कथा करते है और केवल तुम्हारे ही दर्शन के लिये प्राण को रखते है.

राणी मंदोदरी हनूमानजी को रामका पक्ष ले उनके समाचार ले आये हुए देख आश्चर्यित हुई और उन को कहने लगी—"यह बड़ा आश्चर्य है कि जिस हनूमानजी को लंका का धनी रावण भाईयों से अधिक गिनता है, वे भूमिगोचरियों के दूत बनकर आये है!"

हनूमानजी ने उत्तर दिया—"हे राजा मय की पुत्री और रावण की पटराणी ! मुझे भी बहुत आश्चर्य है कि जिस पति के प्रमाद से तू देवों के सुख भोग रही है, उसे अकार्य में प्रवर्त्त देख तू मना नहीं करती है मगर उसके दुष्ट कार्य मे अनुमोदना करती है. तू अपने पति को विष भरा भोजन करने से क्यों नहीं रोकती है? जो अपना भला बुरा नहीं जानता है उसका जीना पशु समान है. और कहा तो तेरा सब से अधिक सामर्थ्य और कहा यह तेरा पर स्त्री रत-पति का दूतीपना? तुम तो सब बातों मे प्रवीण और बुद्धि-मती थी और अब प्राकृत जीवों के समान दूतीपने कार्य करती

हो. तुम अर्द्ध चक्री की महिषी कहिये पटराणी हो, सो अब मैं तुम को महिषी कहिये भैंस समान जानता हूं." मंदोदरी आदि हनूमानजी के ऐसे न्याय युक्त वचन सुन कुछ न बोल सकी. मान भंग हो वे रावण के पास गई और सब हाल कह सुनाया.

तदुपरांत हनूमानजी ने हाथ जोड़ नमस्कार कर सीता को आहार के लिये निवेदन किया. सीता को यह प्रतिज्ञा थी कि जब तक पति के कुशल समाचार न सुनुं, तब तक भोजन न करूंगी. सो अब पति के सुख समाचार सुन उसने भोजन करना अंगीकार किया. तब हनूमानजी एक कुलपालिका को भोजन की सामग्री लाने को आज्ञा दे के आप विभीषण के यहां गये और वहीं भोजन किया.

जब सीता भोजन कर कुछ विश्राम को प्राप्त हुई, तब हनूमानजी ने हाथ जोड़ विनती की–"हे पतिव्रते! हे गुण-भूषणे! मेरे कांधे चढ़ो. मैं तुम्हें क्षण मात्र में समुद्र उल्लांघ के श्री राम के पास ले जाउंगा. तब सीता रूदन कर कहने लगी–"हे भाई! पति की आज्ञा बिना मेरा गमन करना योग्य नहीं है. यदि वे पूछें कि बिना बुलाए क्यों आई, तब मैं क्या उत्तर दूंगी? रावण ने तुम्हारा उपद्रव तो सुना ही होगा. तुम्हारा यहां विलंब करना योग्य नहीं है, सो अब तुम जावो और लो, यह मेरा क्षत्र चूड़ामणि उन्हे विश्वासार्थ दे कहना कि मैं जानती हूं कि आप की मुझपर बहुत कृपा है, तथापि अपने

प्राण यत्न से रखना. तुम से मेरा वियोग हुआ है सो अब तुम्हारे ही यत्न से मिलाप भी होगा."

अथानंतर रावणने, हनूमानजी का मायामई यंत्र तोड़, लंका में प्रवेश करना सुन क्रोधरूप हो, महा निर्दई किंकरों को यह आज्ञा दे पठाया कि—मेरे पुष्पक नामा क्रीड़ोद्यान में कोई द्रोही विद्याधर आया है सो उसे पकड कर मेरे पास लाओ. तब उनने जा कर वन रक्षकों से कहा कि तुम प्रमाद रूप क्यों हो रहे हो? कोई एक दुष्ट विद्याधर यहां प्रमथ वनमें आया है सो उसे महाराज ने पकड़ बुलाया है. तब वन के सब रक्षक योद्धाओं को ले हनूमानजी को पकडने चले.

अनेक लोगों को शस्त्र सहित आते देख, सिंह से भी अधिक पराक्रमी हनूमानजी ने अपने मुकुटस्थ रत्नजडित वानर चिन्ह से प्रकाश किया. उस प्रकाश को देख वे सब पलायन कर गये, तब अधिक बलवान योद्धा शक्ति, तोमर, खडग, चक्र, गदा, धनुष आदि अस्त्रों से सज्ज होकर आये, और हनूमानजी पर आयुधों की वर्षा करने लगे. यह देख अस्त्र रहित अंजनीपुत्र ने बड़े २ वृक्षों के समूह और पर्वतों की शिलाएं उखाडीं और रावण के सुभटों पर चलाई, जिससे अनेक योद्धा मारे गये. उनने कई एक मुक्कों और लातों से मारे, कई एक पीस डारे और कई एक भाग गये. इस तरह उनने समुद्र समान रावण की सेना निर्मूल डाली, उस वन के भवन,

वापिका, और विमान तुल्य उत्तम मंदिर आदि सबही चूर डाले. हाटों की पंक्तियां फोड़ डाली और अपनी जंघाओं से अनेक वर्ण रत्नों के महल ढ़ा डाले, सो अनेक वर्णों के रत्नों के रज से ऐसा मालुम पड़ता था, मानो आकाश में हजारो इंद्र धनुष चढ़े हों.

तब मेघवाहन और इंद्रजीत बक्तर पहन बड़ी भारी सेना ले हनूमानजी को पकड़ ने आये. हनूमानजी चार घोड़ों के रथपर आरूढ़ हो धनुष बाण ले राक्षसों की सेनापर धाये. दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध होने लगा. हाथियों से हाथी, रथों से रथ, घोडों से घोडे, और पियादों से पियादे लड़ने लगे. कई एक मारे गये और कई एक पुकार करने लगे. हरएक सुभट अपनीर पूर्ण शक्ति दिखाने लगा और जो कायर थे वे तो भाग ही गये. कई एक तो सिर कट जाने से धड़ ले फिरने लगे. गृद्ध पक्षी आसमान में उड़ने लगे और रणभूमि स्मशान सी ही भासने लगी. जब बहुत देर तक युद्ध होता रहा और हनूमानजी न पकड़े गये, तब इंद्रजीतने सोचा कि यह पवन सुत अवश्य चरम शरीरी है, इसे नागफांस ही से फाड़ना चाहिये, ऐसा सोच उसने नागफांस छोड़ी. उसने छूटते ही हनूमानजी को गाढ़ा बांध लिया.

जब इंद्रजीत हनूमानजी को बांध बाजार में से ले चला, तब लोग उन्हें देख अनेक प्रकार की बातें करने लगे. देखो, यह वह अंजनीपुत्र है, जिसने बालपन में विमान से गिर पहाड़

का चूरा कर डाला था, जिसने वरुण के सौ पुत्रों को रण में बांध लिया था, और जिसने अजेय लंकासुंदरी को जीत लिया था; वही आज बंधन में फसा है.

दूसरा कहने लगा कि इंद्रजीतने इसे प्रपंच से बांध लिया है. इस समान तो कोई धीर सुभट ही नहीं है. वह वीरों मे महा बलवीर है. तो तीसरा बोला कि यह सब कहना झूठ है. जो उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही विनाश को प्राप्त होगा. ये सब कर्म के फेरे है. कभी तो मनुष्य सुख लीला करता है और कभी भीख मांगता फिरता है. जब तक वे इस प्रकार बातें कर रहे थे, इतने में इन्द्रजीत ने हनूमानजी को ले जा रावण के सन्मुख खड़ा कर दिया. और कहा—"हे पिताजी! लिजिये, यह हनूकुमार है. अब आप जो योग्य समझें, वह देह दंड इसे दीजिये."

तब दशमुख हनूमानजी से कहने लगा, "हे वानर पति! मैं ने तुझे भाई समान गिन कुंडलपुर का राज्य दिया और तूने स्वामी द्रोह का कार्य किया, इस लिये अब तेरी मृत्यु निकट आई है. तुझ सा कोई मूर्ख न होगा, जो सुवर्ण को छोड पत्थर को ले और हस्ती को छोड गधे पर चढे. देख, कैसा तूने हम विद्याधरों के पक्षको छोड भूचर वनवासियों का पक्ष ग्रहण किया है?

हनुमानजी हंस कर बोले—"हे लंकापति, मेरी बात ध्यान दे सुनो. इन्द्रवाहन तुम्हारे नाना थे, जिनकी इंद्रादिक देव

पूजा करते थे, उनके वंश में बहुत से नरेंद्र हुए हैं, जो कर्म फंद को काट मुक्ति को प्राप्त. श्रीमाली तुम्हारे दादा थे, जो जिनव्रत धर शुभ स्थानको गये. रत्नश्रवा तुम्हारे पिता थे, जो निर्दोष तप कर शिवपुर को गये. उनके उज्वल वंश में तुमने जन्म ले उसे धूसर कर डाला है. अब तुम्हारी मृत्यु निकट आई है, जो सोते हुए सिंह, राम को जगाया. यदि तुम्हें जीवने की इच्छा हो तो सीता को राम के पास भेज दो. तुमने वेद शास्त्र में सुना ही है कि तुम्हारी मृत्यु लक्ष्मण के हाथ होगी. जब से तुमने परस्त्री को हरा है, तबसे हमने तुमारी आशा छोड़ दी है, क्यों कि जो कुमित्र से मित्रता, कुआंरी कन्या से यारी और दुष्ट भूपति की सेवा करता हैं उसका पुन्य शीघ्रही नष्ट हो जाता है और इसही भव मोक्ष गामी हैं, फिर हम उनकी आशा क्यों छोड़ें ?"

रावण मान सह बोला,—"रे वानर ! राम और लक्ष्मण कौन रंक हैं, जिन्हें पिताने घर से निकाल दिया है और वे अब भीलों की नाई फल फूल खा वनों में रहते हैं. अरे ! तूने अभी मेरा पौरूष नहीं सुना है. मेरा कुंभकर्ण भाई है और इंद्रजीत और मेघकुमार पुत्र हैं, जिन के पौरुष का पार नहीं और जिनकी भूचर खेचर सबही सेवा करते हैं. नव ही ऋद्धियां मेरे भंडार में हैं. सेनाका पार नहीं है. लंका द्वीप के चहुं ओर अति उतंग कोट है, जो समुद्र से घिरा होने के

कारण शत्रु से दुष्प्रवेश है. मेरे पास और जो वस्तुएं हैं उनका पार नहीं है. ऐसी २ राजसत्ता को पा मैं इस लंकापुरी में इंद्र समान ही राज्य करता हूं."

हनुमानजी.—" हे भूपति ! यह संसार इंद्र धनुष समान असार है. रथ, हस्ती, अश्व, पालकी आदि मेघकी घटा समान क्षण में बिखर जाती है और यह आयु अंजलि के जल ज्यों क्षणिक ही है. माता पिता, मित्र, कलत्र आदि सब अपना ही स्वारथ साधते हैं और कोई सहाय नहीं होता है. इस पृथ्वी पर अनेक चक्रवर्ती राजा हुए हैं, परन्तु वे सब काल से नहीं बचे हैं. हे भूपाल ! जिस समय दुर्भिक्ष काल आ पड़ता है. उस समय इस जीव को कोई शरण नहीं होता. यह जीव इस संसार में अनंत काल से भ्रमण कर रहा है, तौभी उसका पार नहीं आया. जिस समय जीव इस चर्म, हड्डि, रुधिर, मंजा, मांस आदि मलिन पदार्थों से भरे हुए शरीर को छोड़ अलग होता है, उस समय केवल पुण्य और पाप ही उसके साथ जाते हैं. इस लिये हे राजन् ! यह निंद्य कार्य न कर और सीता को श्री राम को सौंप दे.

परस्त्री सेवने की दुर्बुद्धि से तेरा नाश होगा. जैसे नाना प्रकार के भोजन करने पर भी कोई तृप्त नहीं हो, विष की एक ही बूंद मात्र से नाश को प्राप्त होता है, वैसे ही तू भी हजारों स्त्रियों से तृप्त न हो, परस्त्री की तृष्णा से नाश को प्राप्त होगा. हे रावण ! इस लिये सीता को श्री राम को

सौंप दे, अन्यथा तेरे ही कारण राक्षस वंशियोंका नाश होगा."

ये वचन सुन रावण क्रोध से आरक्त हो कहने लगा—" यह पापी मृत्यु से नहीं डरता है. इसे ले जावो और दुर्दशा कर नगर में फिराओ." जब किंकर उन्हें बांध बाहर निकले, तो हनूमानजी बंधन तुड़ाय आकाश में उड़ गये, मानों कोई यति मोहफंद को तोड़ मोक्षपुरी को जाता हो.

श्री राम की लंकापर चढ़ाई.

अथानंतर हनूमानजी अपना कटक ले किहकंधपुर आये, उन्हें लंका से लौट आये सुन नगर के लोग सन्मुख आये और राव ने बड़े उत्साह से नगर में प्रवेश कराया. हनूमानजी उसही वक्त श्री राम से मिले और हाथ जोड़ नमस्कार कर हर्षित वदन से सीता की वार्ता और रहस्य के सब वृत्तान्त कहे और सीता का चूड़ामणि सौंपा. श्री राम पूछने लगे—"हे हनूकुमार ! सत्य कहो, क्या सीता जीवती है ?"

हनूमानजी बोले,—' हे नाथ ! वह जीवती है और उसे आपका ही ध्यान है. हे पृथ्वीपते ! आप सुखी होओ. आपके विरह से वह सत्यवती निरंतर रुदन करती है और उसने नेत्रजल से चतुर्मास कर रक्खा है. गुण के समुद्र की नदी सीता के केश बिखर रहे हैं, बारंबार निश्वास डालती है और दुःख समुद्र में डूबी हुई है. उसका पहिले ही से दुर्बल

हिंदी शिक्षावली

दूसरा भाग

पाठ १—पाठशाला की परिपाटी

लड़को ! तुम पाठशाला जाते हुये राह में किसी से लड़ाई झगड़ा न किया करो। आपस की लड़ाई में दुख ही दुख है, सुख कुछ भी नहीं है। जब तुम पाठशाला में पहुँचो तब बड़े आदर से गुरू जी को प्रणाम करो और अपनी जगह पर बैठ कर पढ़ने लिखने में लग जाओ। जो गुरू जी कहें उसके विरुद्ध कोई काम न करो। वहाँ आपस में बात चीत न करो। इस में केवल तुम्हारा ही नहीं औरों का भी समय अकारथ जायगा। जो समय जिस काम के करने का है उसको उसी में लगाओ। ऐसा करने से बड़े २ काम सहज में हो जाते हैं।

पाठशाला का समय पढ़ने ही के लिये है। इस लिए तुमको चाहिये कि उस समय में जी लगा कर पढ़ो लिखो और उसे खेल कूद या बात चीत में न गवाँओ। अपने साथ के पढने वालों से मेल रक्खो। जो तुम ऐसा करोगे तो वे भी समय पड़े पर काम आवेंगे। जो तुम अपना पाठ कहीं से भूल जाओ तो अपने साथियों से पूँछ लो और जो कुछ वह तुम से पूँछें उन्हें

भी बता दो। ऐसे बर्ताव से आपस में प्रीति बढ़ती है। जब पाठशाला से छुट्टी पाओ सीधे घर चले आओ। राह में देर करना ठीक नहीं है। घर से भी अपने मा बाप की आज्ञा के बिना कहीं न जाओ।

पाठ २—मा बाप की आज्ञा मानना

लड़को! तुम नहीं जानते हो जब तुम पैदा हुये थे तब तुम्हारी क्या दशा थी; न तुमको उठने बैठने की सामर्थ्य थी, न भले बुरे की पहचान। इस दशा में तुम्हारे मा बाप ने तुमको पाला पोसा, सैकड़ों दुख सहे पर तुम्हें कष्ट न होने दिया। मा को देखो, उसने तुम्हें नौ महीने पेट में रक्खा; जब तुम पैदा हुए किस लाड़ प्यार से तुम्हें अपना दूध पिलाया; पहरों छाती पर लेटाया; झूले में झुलाया; थपक २ कर सोलाया और तुम्हारे सुख के लिये अपना सुख गँवाया।

बाप को देखो, सारे दिन उसने मेहनत करके अपना पसीना बहाया; जब कहीं चार पैसे मिले घर आया; तुम्हें अच्छा २ खिलाया; अच्छा २ पहिनाया; जब तुम कुछ सयाने हुये पढ़ाया लिखाया या किसी अच्छे धन्धे में लगाया। मरते समय तक तुम्हारी ही भलाई का ध्यान रक्खा, जितना कमाया सब तुम पर निछावर कर दिया।

जितनी प्रीति तुम्हारे ऊपर मा बाप की है उतनी किसी की नहीं। वे तुम्हारे सुख में अपना सुख समझते हैं और तुम्हें दुखी देख कर दुखी होते हैं। तुम्हारे पालने में उन्होंने कितने कष्ट उठाये हैं। तुम यह न समझो कि उन्होंने तुम्हारा पालन केवल इसी भरोसे पर किया है कि जब तुम बड़े होगे तब उनकी सेवा करोगे और बुढ़ापे में सुख दोगे। भला इन उपकारों का बदला तुम कैसे कर सकते हो। तुम्हारे जन्म भर की सेवा तुम्हारे मा बाप की एक बात के बराबर भी नहीं हो सकती।

लड़को! तुमको चाहिये कि अपने मा बाप का बड़ा आदर किया करो और उनका कहना मानो। जैसा वे तुम से कहें वैसा ही किया करो, क्योंकि तुम्हारी इतनी समझ कहाँ कि भले बुरे की पहिचान कर सको। वे जिस बात को बुरा कहें उससे बचो और जिस बात को अच्छा कहें उसे जी लगा कर करो। अच्छा काम करोगे तो अच्छे कहलाओगे और सब लोग तुम्हारी बड़ाई करेंगे। बुरा काम करोगे तो बुरे कहलाओगे और सब लोग तुम्हारी निन्दा करेंगे। जहाँ तक हो सके उनके प्रसन्न रखने का यत्न करो। उनसे कभी कड़ी बात न कहो।

पाठ ३—गाय

हमारे देश में जितने पालतू चौपाये हैं उनमें गाय सबसे उत्तम गिनी जाती है, यहाँ तक कि हम उसको गौ माता कहते हैं। गाय देखने में बड़ी भोली और सुंदर होती है। उसकी गरदन छोटी और पूँछ लंबी होती है। पूँछ के सिरे पर मोटे २ बालों का गुच्छा होता है। गाय के खुर बीच से चिरे रहते हैं। गायें कई रंग की होती हैं जैसे काली, लाल, सफेद और चितकबरी। काली गाय को श्यामा भी कहते हैं। गाय का मुख्य चारा घास भूसा है। पर दूध बढ़ाने के लिये खली और चूनी चोकर भी देते हैं। गाय उन पशुओं में से है जो पहिले अपना चारा कुछ थोड़ा ही चबाकर निगल जाते हैं, फिर कहीं सुख से बैठ कर खाया हुआ चारा उगल कर चबाते हैं। इसी को जुगाली या पागुर करना कहते हैं। गाय पागुर न करे तो जान लेना चाहिये कि बीमार है।

गाय का दूध सब दूधों में उत्तम है। भैंस बकरी का दध भी पिया जाता है; पर गाय का दूध ऐसा अच्छा होता है कि रोगियों को भी दिया जाता है। गायें दस पंद्रह सेर तक दूध देती हैं। ऐसी गायें बहुधा हाँसी हिसार की ओर होती हैं। मथुरा के ज़िले में भी कोसी की गायें बहुत दूध देती हैं। गाय का यही बड़ा गुण

नहीं है कि उस का दूध बहुत अच्छा होता है; उसके बच्चों के सहारे हमारे देश में खेती होती है। बैलों से हल चलता है, बैलों से सिरावन खींची जाती है, बैलों से मॅड़ाई होती है, बैलों ही से सिंचाई का काम लिया जाता है, बैलों को गाड़ी में जोतते हैं। मरने के पीछे गाय बैल का चमड़ा कितने काम में आता है। सच तो यह है कि हमें परमेश्वर का धन्यवाद देना चाहिये कि उसने हमें दया करके ऐसा अमूल्य पशु दिया।

पाठ ४—क्रोध

क्रोध में आदमी की बुद्धि ठिकाने नहीं रहती। क्रोधी भले बुरे कामों को नहीं समझ सकता, उस समय जो मन में आता है बिना सोचे समझे कर डालता है। इसी लिये उसको पीछे पछताना पड़ता है। उसका मन सदा दुख ही में डूबा रहता है। उससे कोई मेल नहीं रखता और न किसी का जी उससे बात करने को चाहता है। जैसे बड़ी आँधी पेड़ों को जड़ से उखाड़ कर फेंक देती है और भूडोल बड़े २ शहरों का सत्यानाश कर डालता है वैसे ही क्रोधी का क्रोध अपने चारों ओर अंधाधुंध मचा देता है। इसलिये जब क्रोध आवे उसको रोको, बात को टाल दो, जिस पर क्रोध आया हो उसके

सामने से टल जाओ। जी तो नहीं मानेगा पर हठ से उसे दूसरे काम में लगाओ; कोई और बात करने लगो; खड़े हो तो बैठ जाओ; प्यास न भी हो तो पानी पी लो जिससे क्रोध शांत हो जाय। क्रोध में गाली देना, कोई कड़ी बात कह बैठना, या हाथ चलाना बहुत ही बुरा है। जो तुमने किसी को गाली दी और उसने उलट कर तुमको बुरा भला कहा, या तुमने किसी पर हाथ चलाया और वह भी लिपट पड़ा, तो भलमंसी धूल में मिल गई। इस लिये क्रोध कभी न करना चाहिये।

पाठ ५—अच्छा लड़का

एक दिन एक बुड्ढा बैसाखी के सहारे चलता हुआ एक गाँव को जाता था। गाँव के बाहर कुछ लड़के गोरू चरा रहे थे। जब वह एक पेड़ के नीचे पहुँचा तो उस की बैसाखी टूट गई। वह थका तो था ही, बैसाखी रख कर उसी पेड़ की छाया में सो गया। थोड़ी देर में एक छींटा पानी का भी आया, पर वह सोता ही रहा। बुड्ढे की आँख खुली तो उसने देखा कि एक लड़के ने अपना कुरता उतार कर उसके मुँह पर डाल दिया है और पास बैठा हुआ उसी की बैसाखी बना रहा है। बुड्ढा बोला "बेटा! तुमने अपना कुरता हमें क्यों ओढ़ा दिया?" लड़के ने कहा "पानी बरसने लगा था,

न जाग पड़ते"। इतने में लड़के ने उसकी बैसाखी
ी ,बना दी। बुड्ढा उठकर चलने लगा तो उसने
ांखों में आँसू भर लड़के की ओर देख कर कहा "जब
न परदेश गये थे हमारे भी एक लड़का था, वह अब
म्हारे बराबर हुआ होगा। दीन दुखिया पर जैसी तुम
 दया की है वैसे ही वह भी करता हो तो हम अपने
ो धन्य समझेंगे। उसका नाम रामरत्न था और हमारा
ब्रत्न है"। लड़का उस बुड्ढे को लिपट गया और
ला "मैं ही तुम्हारा लड़का हूँ और मेरा ही नाम
मरत्न है"। बुड्ढा अपने लड़के की सपूती देख कर
ला न समाया। वह लड़के के साथ अपने घर गया
ौर जब तक जिया जो कोई उसके घर पर आता,
से टूटी बैसाखी दिखाता और अपने लड़के की
ड़ाई करता।

पाठ ६—भाई बहिन और दर्पन

एक आदमी के दो बच्चे थे, एक लड़का और एक
ड़की। लड़का बड़ा सुंदर था, पर लड़की का रूप
ता न था। संयोग से एक दिन दोनों खेलते २ अपना
ह दर्पन में देखने लगे। लड़का अपने मुँह की सुंदरता
ख फूला न समाया और अपनी बहिन से बोला "तुम
ी चाहती होगी कि जैसे हम सुंदर हैं तुम भी वैसी ही

सुंदर होती"। यह बात लड़की को लग गई और उदास होकर रोती हुई अपनी मा के पास जा कर बोली "अम्मा! भैया से कह दो कि अपना मुँह दर्पन में न देखा करें"। मा ने बेटी को गले से लगा लिया और लड़के को बुला कर कहा "बेटा! तुम बड़े सुंदर हो, तुमको दर्पन में अपना मुँह अच्छा लगा है तो तुमको चाहिये कि बुरी चाल न चलो, नहीं तो तुम्हारी सुंदरता में बट्टा लग जायगा।" फिर लड़की से बोली "बेटी, तुम्हें अपना रूप अच्छा न लगे तो तुम्हें चाहिये कि जो कुछ उसमें बुराई है उसे अपनी अच्छी चाल से छिपा दो। तुमने नहीं सुना कि अच्छे रूप को संसार देखता है और अच्छे गुण को भगवान"।

पाठ ७—चंद्रमा

चंद्रमा का आकार गोल है। पूर्णमासी के दिन हम को पूरा चंद्रमा दिखाई देता है। फिर नित थोड़ा २ घटता जाता है यहाँ तक कि अमावस के दिन वह निगाह से छिप जाता है। फिर धीरे २ बढ़ने लगता है और बढ़ते २ फिर पूरा हो जाता है। इस भाँति हर महीने नया चंद्रमा देखने में आता है। चंद्रमा में प्रकाश नहीं है वह केवल सूरज की जोति से चमकता है। जो भाग सूरज के सामने होता है वह देख पड़ता है

और जो आड़ में होता है वह नहीं दिखाई देता। यही कारण है कि चंद्रमा कभी छोटा देख पड़ता है और कभी बड़ा। जब चंद्रमा पृथ्वी और सूरज के बीच में आ जाता है तब अँधेरा भाग हमारी ओर रहता है और हम उसको नहीं देख सकते। चद्रमा पृथ्वी के चारों ओर एक महीने में घूम आता है। पृथ्वी चंद्रमा से पचास गुनी बड़ी है। चंद्रमा पृथ्वी पर से सूरज के बराबर देख पड़ता है। इसका कारण यही है कि वह पृथ्वी के पास है और सूरज उससे चार सौ गुना दूर है। जैसे पृथ्वी पर पहाड़ हैं वैसे ही चंद्रमा में भी हैं यही पहाड़ काले २ धब्बे से जान पड़ते हैं।

पाठ ८—बीमार हाथी और उसकी चतुराई

एक साहिब लिखते हैं कि एक हाथी की आँखें उठ आईं और तीन दिन तक दर्द से न खुलीं। उसके मालिक ने एक डाक्टर से पूछा "आप इस बेचारे की आँखों को भी अच्छा कर सकते हैं?" डाक्टर ने उत्तर दिया "जो दवा आदमी की आँख में टपकाई जाती है वही दवा इसकी आँखों में डालकर देखूँगा कि गुण करती है या नहीं"। महावत ने हाथी को लिटा दिया और डाक्टर ने उसकी आँखों में दवा डाली। हाथी

दर्द न सह सका और चिंघाड़ने लगा। पर थोड़ी देर में उसकी आँखें कुछ २ खुलने लगीं। दूसरे दिन जब डाक्टर फिर आया, हाथी उसकी बोली पहचान कर आप से आप एक ओर सिर झुकाकर लेट गया, अपनी सूँड़ को लपेट लिया और सांस रोक ली, जैसे कोई आदमी धीरज धर के पीड़ा सहने के लिये अपने को सँभाले। जब दोनों आँखों में दवा डाली गई तब उसने लम्बी साँस खींची और सूँड़ हिलाई मानों यह कहा कि मैं आप को धन्यवाद देता हूँ।

पाठ ९—खरहा और कछुआ

एक कछुए को परदेश जाना था, इस लिये साथ ढूँढने लगा। संयोग से एक खरहा भी उसी ओर जाने वाला था। कछुए ने कहा "आओ भाई! हम तुम साथ चलें"। खरहा ठट्ठा मार कर हँसा और कहने लगा—कहाँ तू रेंग २ कर पहरों में चार अंगुल धरती चलता है और कहाँ मैं बिजली की तरह लपकता हूँ, हवा की तरह उड़ता हूँ, भला मेरा तेरा क्या साथ?" कछुए ने कहा "सच है, पर ईश्वर ने चाहा तो तुमसे आगे पहुँचूंगा। न मानो तो दाँव बद के दौड़ लो" खरहे ने कहा "अभी दौड़ो"। दोनों में दौड़ ठहरी। कछुआ धीरे २ चलने लगा और खरहा दो ही छलाँगों

में इतनी दूर निकल गया कि दिखाई न पड़ा। थोड़ी दूर जाकर खरहे ने सोचा कि मैं जितना चल चुका हूँ कछुए को साँझ तक उतना चलना कठिन है। आओ एक झपकी ले लूँ। खरहा लेटकर गहरी नींद सो रहा। कछुआ थोड़ी देर के पीछे घसिटता २ आया तो क्या देखता है कि खरहा पड़ा सो रहा है। वह चुपके से चल दिया। जब खरहा जगा और कछुआ न देख पड़ा, तब आपही आप कहने लगा कि "कछुआ अभी तक न पहुँचा, आगे पीछे आही रहेगा, मैं चल कर ठिकाने पर पहुँच रहूँ"। ठिकाने पर पहुँच कर कछुए को बैठा देख उसे बड़ा अचरज हुआ और मन में बहुत लजाया। सच है, उद्योग निष्फल नहीं होता।

पाठ १०—सवाई जयसिंह

औरंगज़ेब और महाराजा जयसिंह में किसी कारण अनबन हो गई। औरंगज़ेब ने बहुतेरा चाहा कि महाराजा से बदला लें, पर वे अपनी बुद्धिमानी से उस के हाथ न आये। उनके मरने पर बादशाह ने उनके लड़के को पकड़वा मँगाया। राजकुमार अभी तक विद्या ही सीखने में लगे थे और संसार के व्यवहार न जानते थे। चलते समय उनके भाई बंदों ने अपनी २ समझ के अनुसार बादशाह के प्रश्नों के उत्तर बताये। राज-

कुमार ने कहा "जो बादशाह इनमें से एक भी बात न पूँछे तो क्या उत्तर दूँ ?" उनकी मा ने कहा "बेटा अपनी समझ से उत्तर देना, ईश्वर तुम्हारा भला ही करेगा"। जब राजकुमार बादशाह के सामने पहुँचे तब बादशाह ने उनके दोनों हाथ पकड़ कर लाल पीली आँखें कर के कहा "तेरे बाप ने मेरे साथ बहुत सी बुराइयाँ की हैं; बोल, मैं उनके पलटे में तुझे क्या दंड दूँ ?" राजकुमार ने बड़ी नर्मी से उत्तर दिया "हुज़ूर ! ब्याह में कन्यादान के समय पुरुष स्त्री का एक ही हाथ पकड़ता है और उस लाज के मारे उस का जन्म भर निर्वाह करता है; आपने तो मेरे दोनों हाथ पकड़े हैं; अब मुझे क्या डर है ?" औरंगज़ेब इस बुद्धिमानी के उत्तर से प्रसन्न हुआ और बहुत सा राज अपने पास से देकर उसका नाम "सवाई जयसिंह" रक्खा। सच है, विद्या में बड़ा बल है।

पाठ ११—बुराई के बदले भलाई

एक दिन एक ठाकुर साहिब अपनी चौपाल में बैठे थे। इतने में एक भील हारा थका भूखा प्यासा उधर आ निकला और ठाकुर साहिब से कहा "भूख के मारे मेरा दम निकलता है, कुछ खाने को मिल जाय जिस से आगे चलने का सहारा हो"। ठाकुर ने उसे झिड़क

कर कहा "चल, यहाँ तेरे खाने को कुछ नहीं है" । तब उस बेचारे ने कहा "थोड़ा पानीही पिला दो" । ठाकुर साहिब आपे से बाहर हो गये और कहने लगे "त यहाँ से जायगा कि नहीं, उठूँ तेरी हड्डी पसली तोड़ दूँ ?" यह सुन कर वह बेचारा अपना सा मुँह लेकर चुपचाप चल दिया ।

थोड़े ही दिन पीछे ठाकुर साहिब शिकार को वन में गये । वहाँ राह भूल गये और भटकते २ एक झोपड़ी के पास जा निकले । रात बहुत बीत गई थी और उन का गाँव बहुत दूर था, इससे झोपड़ी के मालिक ने उनको अपने यहाँ टिका लिया। वह एक लोटे में पानी भर लाया और जो कुछ उसके पास खाने को था आगे रख दिया । जब ठाकर साहिब खा पी चुके तो उनके सोने के लिये पयाल बिछाकर ऊपर से कम्मल डाल दिया। ठाकुर साहिब रात भर सुख से सोये। जब सबेरे उठे तब उसने उनको घर की राह दिखाई और कहा "आप मुझे पहचानते हैं ?" जब दोनों की चार आँखें हुईं, ठाकुर साहिब के मुँह से बात न निकली क्योंकि यह वही भील था जिसको उन्होंने दुत्कार दिया था। चलते समय भील ने ठाकुर साहिब से कहा "जब कभी कोई भूका प्यासा तुम्हारे पास आवे तो

उसे कुछ खिला पिला दिया करो, झिड़क कर भगा न दिया करो" ।

पाठ १२—दया

वसंत ऋतु में एक दिन गौतम बुद्ध अपने चचेरे भाई देवदत्त के साथ बाड़ी में बैठे थे । उसी समय एक हंसों का झुंड मीठी बोली बोलता हुआ हिमालय की ओर जा रहा था । देवदत्त ने सब से आगे के हंस पर तीर चलाया; वह घायल होकर धरती पर गिर पड़ा । बुद्ध उस का दुख न देख सका और आँखों में आँसू भरकर उस अधमरे हंस को उसने उठा लिया । उस पर हाथ फेर २ कर धीरे २ तीर को खींचा और उसके घाव में दवा लगाकर उसे अपनी छाती से लगा लिया । इतने में देवदत्त ने कहा "मैंने इस हंस को मारकर गिराया है, इसे मुझे दे दो" । बुद्ध ने कहा "तुमने बहुत बुरा काम किया कि इस निर्दोषी जीव को मारा, तुमको कुछ भी दया न आई ! मैं तुमको यह हंस कभी न दूँगा" दोनों में बड़ा झगड़ा हुआ और उसे निपटाने के लिये बुद्धिमानों की सभा की गई । उनमें से एक ने कहा मारनेवाले से बचाने वाले का अधिकार इस हंस पर अधिक है। यह बात सब ने मान ली और हंस बुद्ध ही के पास रहा । अच्छा हो जाने पर बुद्ध ने उसे उड़ा दिया ।

पाठ १३—विपत्ति में मित्र की परीक्षा होती है

दो आदमी परदेश साथ २ चले और आपस में यह ठहरा कि दुख पड़ने पर एक दूसरे की सहायता करें। संयोग से दोनों एक जंगल में होकर जा रहे थे कि इतने में एक रीछ का सामना हो गया। उनमें से एक झटपट दौड़कर पेड़ पर चढ़ गया और दूसरा साँस रोक कर धरती पर मरे हुये के समान लेट गया। रीछ कुछ देर तक उसके मुँह और कानों को सूँघता रहा, अंत में मरा हुआ जान छोड़कर चल दिया। जब रीछ कुछ दूर निकल गया तो जो आदमी पेड़ पर चढ़ गया था वह उतर कर अपने साथी से पूँछने लगा "मित्र! रीछ बार २ अपना मुँह तुम्हारे कान में लगाकर क्या कहता था ?" उसने कहा "रीछ ने मेरे कान में ऐसी बातें कहीं कि मैं क्या कहूँ"। उसके मित्र ने कहा "एक आध बात तो हमको सुनाओ"। उस आदमी ने कहा "एक बात तो यह थी कि जो आदमी अपना ही काम निकाले और मित्र का साथ न दे, उससे प्रीति न करनी चाहिये"। किसी ने कहा है।

विपति बराबर सुख नहीं जो थोड़े दिन होय।
इष्ट मित्र अरु बंधु जित ज़ानि पड़े सब कोय॥

पाठ १४—भेड़िया

भेड़िया सब देशों में पाया जाता है; पर इस देश में बहुतायत से होता है। इसकी सूरत कुत्ते से मिलती जुलती है। इसका रंग भूरा, बाल घने, दाँत पैने, पूँछ झबरी होती है। इसकी उँचाई तीन फुट तक और लंबाई चार फुट तक होती है। इसके कान लंबे होते हैं। और खड़े रहते हैं। नाक लंबी और नोकीली होती है। भेड़िया मांस खानेवाले जीवों में से है। वह दिन में अपने भिटे में छिपा पड़ा रहता है और रात को शिकार की खोज में निकलता है। भेड़ियों के झुंड के झुंड इकट्ठे फिरा करते हैं। भेड़िया जब तक बहुत भूखा नहीं होता आदमी पर चोट नहीं करता। वह बकरी के बच्चों को बहुधा उठा ले जाता है। और कभी २ आदमी के बच्चों को भी ले जाता है। कभी २ ऐसा भी देखने सुनने में आया है कि आदमी के बच्चों को भेड़िये पाल लेते हैं। आगरे के पास सिकंदरे के यतीमख़ाने में एक ऐसा लड़का था जो भेड़िये के भिटे में मिला था।

पाठ १५—भेड़िया और सारस

एक भेड़िये के गले में हड्डी अटक गई। बहुतेरा खांसा खखारा पर हड्डी न निकली। अंत में सारस के पास गया और कहा "हम तुम एक ही जंगल के

रहनेवाले हैं, इस समय पड़ोसी का धर्म निवाहो। मेरे गले में हड्डी अटक गई है और जान पर आ बनी है, अपनी लंबी चोंच से इसको निकाल लो; जो माँगोगे दूँगा"। सारस ने यह बात मान ली और भेड़िये के गले में अपनी लंबी गरदन डालकर हड्डी खींच ली। थोड़े ही दिन पीछे भेड़िया एक हिरन शिकार करके लाया और नदी के किनारे बैठकर खाने लगा। इतने में सारस पास जा अपने उपकार की सुध दिला कर कहने लगा "आज मैं बहुत भूखा हूँ, मुझे भी एक टुकड़ा दो"। भेड़िये ने कहा "ऐ मूर्ख! यह उपकार क्या थोड़ा है कि तूने मेरे गले में अपनी गर्दन डाली और मैंने उसे छोड़ दिया और तेरी जान बचा दी।"

पाठ १८—भेड़िया और भेड़ का बच्चा

एक भेड़िया किसी दिन नदी के किनारे खड़ा पानी पी रहा था। क्या देखता है कि नदी के बहाव की ओर एक भेड़ का बच्चा भी पानी पी रहा है। उसे देखकर भेड़िये के मुँह में पानी भर आया और उसको कोई दोष लगा कर मारना चाहा। यह सोचकर भेड़ के बच्चे के पास जाकर कहने लगा "अरे दुष्ट! हम प्यासे मरते हैं और तू पानी को मैला करता है, जिसमें हम न पी सकें"। बेचारा भेड़ का बच्चा भेड़िये की डरावनी सूरत

देखकर उसकी घुड़की से काँप उठा और गिड़गिड़ा कर कहने लगा "आप यह क्या कहते हैं ! पानी का बहाव आपकी तरफ़ से मेरी तरफ़ है; मेरी तरफ़ का पानी आप तक कैसे जा सकता है ?" भेड़िये ने कहा "तू बड़ा बकवादी है। तूने छः महीने हुए मुझे बड़ी गालियाँ दी थीं"। बच्चे ने कहा "अभी तो मैं छः महीने का हुआ भी नहीं हूँ; गालियाँ किसने दी होंगी" ? तब भेड़िया बोला "तूने न गालियाँ दी होंगी तेरी मा ने दी होंगी" । बच्चे ने कहा "मेरी मा तो उसी दिन मर गई जिस दिन मैं पैदा हुआ था" । यह सुनते ही भेड़िये ने बच्चे को दबोच लिया और फाड़ कर उसको खा गया ।

पाठ १७—दिशा

मुख्य दिशा चार हैं—पूरब, पच्छिम, उत्तर, दक्खिन । जो तुम सबेरे जिधर से सूरज निकलता है उधर मुँह करके खड़े हो तो तुम्हारे दाहिने हाथ दक्खिन, बाँये उत्तर, पीठ पीछे पच्छिम और सामने पूरब होगा । हिंदू दस दिशा मानते हैं । चार तो वही हैं जो ऊपर लिख आये हैं । चार और इनके बीच में (ईशान, नैऋत्य, वायव्य, आग्नेय) मानी गई हैं । एक ऊपर (आकाश) और एक नीचे (पाताल) । अंग्रेज़ों ने अपनी चतुराई

से एक यंत्र ऐसा बनाया है जिससे आप से आप दिशा मालूम हो जाती हैं। इस यंत्र को अंग्रेज़ी में "मैरीनर्स् कम्पस्" और फ़ारसी में "कुतुबनुमा" कहते हैं। इस का चित्र नीचे दिया हुआ है। इसके बीच में एक सुई होती है जो कैसी ही घुमा कर रक्खी जाय सदा उत्तर दक्खिन हो जाती है। सुई के उस सिरे पर जो उत्तर की ओर रहता है एक त्रिशूल सा बना रहता है। इससे दिशा जानने में कभी धोखा नहीं होता।
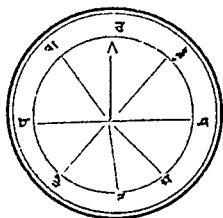
पाठ १८—दिन—महीने—बरस

हिंदुस्तानियों में सूरज के निकलने से दिन गिना जाता है, पर अंग्रेज़ रात के बारह बजे से दिन मानते हैं। दिन में चौबीस घंटे माने गये हैं। हफ़्ते में सात दिन होते हैं जिनके नाम यह हैं—सोमवार, मंगल, बुध, बिहफै, शुक्र, सनीचर और इतवार। इन्हीं को संस्कृत में चन्द्रवार, भोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार, कहते हैं। रविवार को आदित्यवार और बिहफै को बृहस्पति भी कहते हैं।

महीना तीस दिन का गिना जाता है, पर इसका भी कुछ ठीक नहीं। हम लोग एक पूर्णमासी से दूसरी पूर्णमासी तक एक महीना मानते हैं। इसमें कभी २९ दिन होते हैं, कभी ३० भी हो जाते हैं। हिंदुओं के महीनों के नाम चैत, बैसाख, जेठ, आषाढ़, सावन, भादों, कुँआर, कातिक, अगहन, पूस, माह और फागुन हैं। कुँआर को कहीं २ असोज, अगहन को मगसिर और माह को माघ कहते हैं। अंग्रेज़ी महीनों के दिनों म और भी अंतर होता है। एक महीना २८ ही दिन का होता है, चार तीस दिन के माने जाते हैं, और सात इकतीस दिन के होते हैं। चौथे बरस २८ दिन वाले महीने के २९ दिन कर दिये गये हैं। अँग्रेज़ी महीनों के नाम यह हैं—जनवरी ३१, फ़र्वरी २८, मार्च ३१, अप्रैल ३०, मई ३१, जून ३०, जूलाई ३१, अगस्त ३१, सितंबर ३०, अक्टूबर ३१, नवंबर ३०, दिसंबर ३१।

पाठ १९—गंगोत्री और गंगाजी

गंगाजी को कौन नहीं जानता? सैकड़ों लड़के ऐसे होंगे जो गंगाजी में कम से कम एक बार तो स्नान करही चुके होंगे; पर ऐसे बूढ़े भी बहुत कम हैं जिन्होंने वह स्थान देखा हो जहाँ गंगाजी का निकास है। एक पहाड़ दो कोस ऊँचा जड़ तक बर्फ़ से ढका हुआ है

इसी के ऊपर से एक बर्फ़ की नदी आध कोस चौड़ी और कई कोस लंबी धीरे २ नीचे को सरकती है। इस की चाल ऐसी धीमी है कि एकाएक देखने से एक चट्टान बर्फ की मालूम होती है। परंतु दो चार घंटे तक बराबर कोई देखता रहे तो इसका सरकना मालम हो जाता है। इस भारी बर्फ़ की नदी में एक खड्ड है। इस को हिंदू लोग गोमुख कहते हैं और इसी गोमुख से गंगा जी का जल निकलता है। गंगाजी पहले तो पहाड़ों में कोसों तक बही हैं। देवप्रयाग में अलकनंदा के साथ इनका संगम हुआ है, वहीं से गंगा नाम पड़ा है। देव-प्रयाग से ऊपर भागीरथी नाम है। ऋषिकेश में गगाजी पहाड़ से निकल कर मैदान में बही हैं। वहाँ से तेरह मील चलकर गंगाजी के किनारे हरिद्वार बड़ा तीर्थ स्थान है। यहाँ हर साल बैसाख के महीने में बड़ा भारी मेला होता है और यहीं से सरकार अँग्रेज़ बहादुर ने नहर निकाली है।

पाठ २०—चिमगादर

एक समय पशुओं और पक्षियों में लड़ाई होने लगी। चिमगादर अलग खड़ा हुआ देखता रहा। कोई कुछ पूँछे तो कहता था "हम न इनमें के न उनमें के"। खड़ा २ मन में सोचता था कि जिसकी जीत होगी उसी

में जा मिलूंगा। जब पशुओं की जीत देख पड़ने लगी तो उनके पास जाकर बोला "मैं तुम्हीं में से हूँ। मेरी गिनती चिड़ियों में नहीं है। भला कभी किसी ने ऐसी चिड़िया देखी है जिसके मेरे से दाँत हों ?" इसके पीछे ऐसा हुआ कि चिड़ियों की जीत हुई। यह देखकर पशुओं का संग छोड़ उनमें जा मिला और कहने लगा "मैं भी तुम्हीं में से हूँ। देखो मेरे भी पर हैं। कहीं पशु भी मेरी तरह उड़ सकते हैं ? फिर ऐसी दशा में मैं चिड़िया नहीं तो क्या हूँ ? चिमगादर ने इतनी चतुराई भी की पर दोनों में से एक ने भी उसका साथ न दिया। जब किसी ने दोनों में से अपने में न मिलाया तो निराश होकर उसको दोनों से अलग होना पड़ा। यही कारण है कि वह उनके सामने नहीं निकलता और अपना मुँह छिपाये पड़ा रहता है। जब पशु सो जाते हैं और पक्षी बसेरा ले लेते हैं, तब वह रात में निकलता है, कि उसको कोई न देखे।

पाठ २१—सिकन्दर और राजा पुरु

सिकंदर मकदूनिया के बादशाह फैलकूस का बेटा था। ईसामसीह के जन्म से तीन सौ छप्पन बरस पहिले इसका जन्म हुआ। हकीम अरस्तू से उसने विद्या सीखी। लड़कपन से वह यही चाहता था कि मैं

ऐसे काम करूँ कि मुझसे बढ़कर संसार में कोई न निकले। उसने फ़ारिस आदि देशों को सहज ही में जीतकर अपने राज में मिला लिया और वहाँ के बादशाह के परिवार के साथ बड़ी भलमंसी का बर्ताव किया। उन्तीस ही बरस की अवस्था में सिकंदर हिंदुस्तान पर चढ़ आया। झेलम नदी के किनारे तक बे रोक टोक चला आया। यहाँ राजा पुरु बड़ी भारी सेना लेकर उससे जा भिड़ा। कई घंटे तक राजा की सेना से बड़ी लड़ाई हुई। अंत में राजा की सेना खेत छोड़ भागी पर राजा मैदान से न हटा। अंत तक लड़ाई में अकेला हाथी पर डटा रहा। सिकंदर को उसकी वीरता पर बड़ा अचरज हुआ और उसने कहला भेजा "राजा अब भी मेरे पास चला आवे तो मैं उसको छोड़ दूँ"। यह सुन राजा बेधड़क बादशाह के पास चला गया। सिकंदर ने पूँछा "मैं तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव करूँ"? राजा ने उत्तर दिया "जैसा राजा राजाओं के साथ करते हैं"। उसका साहस देखकर सिकंदर बहुत प्रसन्न हुआ और उसका सारा राज उसे फेर दिया। सिकंदर यहाँ से और आगे बढ़ना चाहता था, पर उसकी सेना ने इस बात को न माना। सिकंदर ने अपनी सेना को समुद्र की राह भेजा दिया और आप ज्यों त्यों बैबिलन

(बाबुल) में पहुँचा । वहाँ उसे ज्वर आ गया और तेंतीस ही बरस की अवस्था में मर गया ।

पाठ २२—तोता

हिंदुस्तान में तोते का रंग बहुधा हरा होता है, पर और देशों में भूरे लाल या पीले तोते भी मिलते हैं । तोते की चोंच मोटी टेढ़ी और लाल रंग की होती है । उसके दो पंजे होते हैं और हर पंजे में चार अँगुलियाँ होती हैं । अँगुलियों ही के सहारे से वह ऊपर चढ़ता है । उसके पंजे हाथ का काम देते हैं । तोता गरम देशों में होता है । जब लोग उसे ठंढे देश में ले जाते हैं तो गरम जगह में रखते हैं । बहुधा सरदी से तोता मर जाता है। उसकी चोंच बड़ी नोकीली होती है । वह कड़े से कड़े अखरोट को सहज में तोड़ डालता है और पेड़ों में घोंसला बनाकर रहता है । जंगलों में तोतों के झुंड के झुंड दिखाई देते हैं । इनसे बचाने के लिये किसानों को अपने खेतों की बड़ी चौकसी करनी पड़ती है । जिस खेत में इनका झुंड बैठ जाता है उसको मटिया-मेट कर देता है। इस देश में बहुत से लोग तोता पालते हैं । सिखाने से वह आदमियों की तरह बोलने लगता है । तोता अपने पालने वाले को बहुत कम काटता है । अजान आदमी को तुरन्त काट खाता है । इस

की आँखों में शील नहीं होता, इसीसे जिनके शील नहीं होता उन्हें "तोताचश्म" कहते हैं।

पाठ २३—आपस की फूट का फल

उज्जैन में एक सेठ बड़ा मालदार था। उसके दो बेटे थे जो बाप के मरने पर उसके धन दौलत के मालिक हुये। दोनों भाई मेलजोल से न रह सके और सारा माल असबाब आपस में बाँटना चाहा। आपस में बहुत झगड़े, बखेड़े, हुये, फिर भी ठीक २ बँटवारा न हो सका। अंत में जब कुछ उपाय न सूझा तो एक जानकार वकील के पास गये। उसने उनका सारा हाल सुन कर यह कहा "जो कुछ तुम्हारे पास है उसके दो बराबर हिस्से करके आपस में बाँट लो"। यह बात दोनों भाइयों को पसंद आई और घर आकर उन्होंने ऐसाही किया। रुपया पैसा गहना पाता मकान खेत असबाब सब आधा २ कर लिया, यहाँ तक कि पशुओं के भी दो २ बराबर हिस्से कर डाले। इस आपस की फूट से बहुतों की जान गई। इससे भी बढ़कर एक बात यह हुई कि उनके घर में एक टहलुई थी, उसके भी दो टुकडे बराबर कर डाले। भला यह बात कैसे छिप सकती थी। होते २ राजा के कान तक पहुँची। दोनों भाई पकड़े गये और अंत में जान से मारे गये। कहा भी है—

"खेत में उपजै सब कोई खाय।
घर में होय तो घर बह जाय" ॥ (फूट)

पाठ २४—बिना विचारे काम करने का पछतावा

किसी नगर में एक ब्राह्मण अपनी स्त्री के साथ रहता था। उनके कोई लड़का न था, इस कारण उन्होंने एक नेवला पाला था जिसको वे लड़के के समान प्यार करते थे। कुछ दिन बीते ब्राह्मणी के लड़का पैदा हुआ। एक दिन वह लड़के को सुलाकर पानी भरने चली गई और ब्राह्मण से कह गई कि बच्चे को नेवले से बचाये रहना। संयोग से ऐसा हुआ कि ब्राह्मण भी लड़के को सूने घर में सोता छोड़ पूजा पाठ के लिये निकल गया। इस बीच में एक काला साँप बिल से निकला और लड़के की ओर चला। नेवला यह देखकर बच्चे को बचाने के लिये साँप पर झपटा और उसने उसको मार डाला। इतने में ब्राह्मणी पानी लेकर लौटी और नेवला अपना करतब दिखाने को मुँह में लोहू लगाये हुये द्वार पर उस के सामने दौड़ा आया। ब्राह्मणी नेवले का मुँह लोहू में सना हुआ देख रोने लगी और बोली "हाय पापी! तूने मेरे बच्चे को मार ही डाला!" क्रोध में आकर नेवले के ऊपर उसने घड़ा पटक दिया और नेवला मर गया। जब ब्राह्मणी भीतर आई तब उसने देखा कि लड़का

सो रहा है और पास ही काला साँप मरा पड़ा है। यह देख नेवले के मरने के सोच में अपनी छाती और सिर पीटने लगी। किसी ने सच्च कहा है—

बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय।
काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय॥

पाठ २५—कोहनूर हीरा

कहते हैं कि यह अनमोल हीरा गोलकुंडा की किसी खान से निकला था और पहिले पहिल महाराजा युधिष्ठिर के भाई राजा कर्ण के पास रहा। फिर उज्जैन के राजा विक्रमादित्य ने उसको पाया। इसके पीछे यह हीरा मालवा देश के राजा के हाथ लगा। अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा के राजा से इसको छीन लिया। सन् १५२६ ई० में बाबर ने इब्राहीम लोदी को, जो उस समय हिंदुस्तान में राज करता था, लड़ाई में हराया। इब्राहीम लोदी लड़ाई में घायल होकर थोड़े ही दिनों में मर गया। बाबर ने इब्राहीम के कुटुम्ब के साथ बहुत भलमंसी का बर्ताव किया। इस लिये इब्राहीम की मा ने प्रसन्न होकर यह हीरा बाबर को भेंट दिया। सन् १७३८ ई० में नादिरशाह ने दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह को लड़ाई में हराकर उससे यह हीरा ले लिया। नौ बरस पीछे नादिरशाह मारा गया और कोहनूर धीरे २

अहमदशाह दुर्रानी के पास पहुँचा । फिर यह काबुल के बादशाह शाहशुजा के अधिकार में आया । सन् १८१३ ई० में पंजाब के महाराजा रणजीतसिंह ने शाहशुजा से इस हीरे को पाया और इसके बदले में पचास हज़ार रुपये साल की निकासी की जागीर और तीन लाख रुपये दिये । सन् १८४६ ई० में पंजाब पर अँग्रेज़ों का अधिकार हुआ और महाराजा रणजीतसिंह के लड़के दलीपसिंह से यह इनके हाथ लगा । तब से यह हीरा श्रीमती राजराजेश्वरी महारानी विक्टोरिया के पास उनके मृत्यु समय तक था और इस समय श्रीमान् इंगलेंडेश्वर के पास है । आज कल इस हीरे का दाम तीस लाख रुपया आँका जाता है ।

पाठ २९—घोड़ा

घोड़े का बदन गठीला होता है और टाँगें पतली। उसके सुम गाय बैलों की तरह चिरवाँ नहीं होते । वे कड़ी धरती पर चलने से घिस जाते हैं । इस लिये उन के बचाव के लिये नाल बाँधे जाते हैं । उसकी पूछ में लंबे २ बाल होते हैं जिनसे वह अपनी मक्खियाँ उड़ाता है । गर्दन पर लंबे २ बाल होते हैं जिसको अयाल कहते हैं । घोड़ा बड़ा समझदार जानवर है । अपने थ.न और मालिक को बहुत पहिचानता है । जिस राह से एक

दो बार आये उसे नहीं भूलता। उसमें सबसे बड़ा गुण यह है कि जिस तरह चाहो सधा लो। सवारी देता है, बोझ ले जाने के काम में आता है, गाड़ी और तोप खींचता है, हल भी चलाता है। निडर ऐसा है कि बंदूक की गोलियों और तोप के गोलों से भी नहीं झिझकता। घोड़े कई रंग के होते हैं और बहुधा रंग के नाम से ही उनके नाम पड़े हैं—जैसे सुरंग, कुम्मैत, नुक़रा, मुश्क़ी, अबलक़, सब्ज़ा। कभी२ घोड़े अपने खेतों के नाम से भी पुकारे जाते हैं—जैसे बालोतरा, भोटिया, तुर्की, ताज़ी। अरबी घोड़े ताज़ी कहलाते हैं। अरब वाले अपने घोड़ों को बच्चे की तरह पालते हैं, वैसेही उनको प्यार करते हैं और कभी उनको चाबुक नहीं छुआते। एक दिन की बात है कि एक अँग्रेज़ी अफ़सर के पास कोई अरब मिलने आया। साहिब उसके घोड़े पर रीझ गये और उससे कहने लगे पाँच सौ रुपये ले लो और अपना घोड़ा हमारे हाथ बेच दो। अरब बहुत ग़रीब था पर उसने न माना। बढ़ते २ साहिब ने दो हज़ार रुपये तक लगा दिये। पहिले तो उस अरब का मन डाँवाडोल हुआ पर घोड़े की ओर देखकर उसका जी भर आया और यह कहकर चल दिया "साहिब आप के पास बहुत धन है, पर मैं अपना घोड़ा न दूँगा"।

पाठ २७—नारियल का पेड़

नारियल का पेड़ लंका के टापू में बहुतायत से पैदा होता है और हिन्दुस्तान में भी समुद्र के किनारे के हिस्सों में पाया जाता है। यह पेड़ साठ सत्तर बरस तक फलता है। सूरत में ताड़ से मिलता जुलता है और अपने ढँग का निराला है। इसका कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जो किसी न किसी काम में न आता हो। कलियाँ तरकारी के काम में आती हैं। फूलों की माला बनती है। दूध पीने के काम में आता है, उससे चीनी निकाली जाती है और उसका सिरका भी बनता है; गिरी को खाते हैं और उसका तेल निकालते हैं। तेल से घी का काम लेते हैं। सिंहली इसको भात के साथ बड़े चाव से खाते हैं। तेल को दियों में जलाते हैं। जटा की रस्सियाँ और चटाइयाँ बनती हैं। जटा को महीन२ कूटकर गद्दों में रुई की जगह भरते हैं। गिरी के ऊपर की खोल के हुक्के और छोटे२ प्याले बनाये जाते हैं। पत्तियों से मकान छाये जाते हैं और चटाई और टोकरियाँ बनती हैं। पत्तों को जलाकर सज्जी की तरह एक चीज़ निकालते हैं जो बड़े काम की होती है। लकड़ी की कड़ियाँ, तख्ते, दरवाज़े और खिड़कियाँ बनाई जाती हैं और कुर्सी और संदूक भी बनती हैं। तने की छोटी २

डोंगियाँ बना लेते हैं। नारियल सिंहाली लोगों के जीवन का मुख्य सहारा है।

पाठ २८—मेल के लाभ

आपस में प्यार से रहना, काम पड़े पर एक दूसरे की सहायता करना, कोई ऐसी बात जिससे किसी का जी दुखी न करना, कभी किसी से भूल भी हो जाय तो उसके अपराध को क्षमा कर देना और उसको मन में न रखना, इसी का नाम मेल है। मेल से रहने में बहुत से लाभ हैं।

एक पहाड़ के नीचे एक नदी बहती थी। नदी के किनारे २ पहाड़ से मिली हुई एक सँकरी पगडंडी दूर तक चली गई थी। संयोग से दो बकरे उस राह से आते थे—एक इधर से एक उधर से। जब बराबर आये, बड़ी कठिनाई में पड़े। न कोई मुड़कर लौट सकता और न दूसरे के पास से निकल सकता था। एक तरफ़ ऊँचा पहाड़ रोकता था और दूसरी तरफ़ नदी का खटका था कि पैर फिसला और जान गई। अब देखो उनके मेल जोल ने कैसा काम किया। जिस विपत्ति में फँसे थे उससे कैसे सहज में छुटकारा हुआ। एक बकरा राह में लेट गया और दूसरा धीरे २ उसपर पैर रखकर निकल गया। जो बकरा लेटा हुआ था उसके लिये राह साफ़ हो गई।

बेखटके जहाँ जाना था उठ कर चल दिया । मेल और आपस की सहायता से दोनों ने अपनी २ जान बचाई ।

पाठ २९—विश्वासघात का फल

एक राजा बड़ा न्यायी था । एक बार उसने अपने मंत्री को अकेले में बुलाकर कहा "मैं तुमको अपने सब मंत्रियों से अच्छा समझता हूँ और तुम पर मेरा विश्वास भी बहुत है । मेरा भाई मुझको गद्दी से उतारना चाहता है और इस काम के लिये छिपाकर सैकड़ों उपाय कर रहा है । मैं तुमको यह काम सौंपता हूँ कि जिस तरह हो सके मेरे भाई को ऐसे बुरे काम से रोक दो, पर यह भेद किसी से न कहना" । मंत्री ने शपथ खाकर कहा कि "मैं सदा तुम्हारी सेवा तन मन धन से करता रहूँगा, मेरे प्राण तक क्यों न चले जायँ विश्वासघात न करूँगा" । मंत्री की यह बातें सुन राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसे बहुत सा धन दिया । अवसर मिलते ही उस कपटी ने राजा के भाई से कहा कि "तुम सचेत रहो, राजा तुम्हारे प्राण लेना चाहता है।" यह सुनकर भाई ने उसे धन्यवाद दिया और अवसर मिलने पर अच्छा इनाम देने का वचन दिया । राजा थोड़े दिन पीछे मर गया और उसका भाई गद्दी पर बैठा । राज पाते ही उसने उस कपटी मंत्री को मार

डालने की आज्ञा दी और कहा "तू अपने राजा से विश्वासघात कर चुका है, अब मैं तुझपर भरोसा कैसे करूँ ! जो अपने थोड़े लाभ के लिये मालिक के भेद को खोलता है, उसको इससे हलका दंड नहीं मिल सकता।" मंत्री ने अपने उपकार की सुधि दिलाई और बहुत कुछ कहा सुना पर राजा ने कुछ भी ध्यान न दिया और उसको सूली पर चढ़वा ही दिया। विश्वास-घातियों की अंत में ऐसी ही दशा होती है।

पाठ ३०—कुत्ते की स्वामि-भक्ति

कुत्ता अपने मालिक को बहुत चाहता है और उस के भले के लिये अपने प्राण तक दे देता है। कहते हैं कि किसी व्यौपारी के पास एक कुत्ता था जिसको वह बहुत प्यार करता था। व्यौपारी ने परदेश में बहुत सा धन इकट्ठा कर लिया और कुत्ते के साथ घर को लौटा। कई कोस चलकर वह व्यौपारी एक पेड़ के नीचे ठहरा और पास ही रुपयों की थैली रख दी। चलते समय थैली को उठाना भूल गया। यह देखकर कुत्ता उस थैली के लाने के लिये लौटा। थैली बहुत भारी थी, उससे न उठी। कुत्ते ने अपने मालिक को उसकी भूल जताने के लिये बड़ा यत्न किया पर वह कुछ न समझा। लाचार होकर कुत्ते ने अपने मालिक के घोड़े की टाँग में काट खाया। सौदागर

समझा कि कुत्ता बावला हो गया है और उसके गोली मार दी। बेचारा लोहूलुहान हो गिर पड़ा; सौदागर आगे चल दिया। थोड़ी दूर चलकर उसे अपनी थैली की याद आई और उसके खोज में पीछे फिरा। राह में उसे लोहू के चिह्न बराबर मिले पर कुत्ते का पता न चला। जब वह उस पेड़ के पास पहुँचा जहाँ पहिले ठहरा था, तब क्या देखता है कि कुत्ता थैली को ताक रहा है। मालिक को देख कुत्ता पूँछ हिलाने लगा और उसने चाहा कि उसका हाथ चाटे कि इतने ही में मौत ने उसे आ घेरा। लड़को! तुम भी अपने पालने वाले की सेवा में कभी चूक न करो।

पाठ ३१—लालच से हानि

एक दिन एक बाघ ताल में नहा हाथ में कुश लेकर राह में आ बैठा। इतने ही में एक कंगाल ब्राह्मण उधर आ निकला और बाघ को वहाँ बैठा देखकर ठिठक रहा। उसको डरा हुआ देख कर बाघ ने कहा "देवता! मैं यहाँ सोने का कड़ा पुण्य करने के लिये बैठा हूँ। तुम चले आओ, उसे ले लो"। यह सुनकर ब्राह्मण ने विचारा कि आज मेरे भाग जागे देख पड़ते हैं, पर ऐसी शंका में पड़ना उचित नहीं है। फिर यह भी सोचा कि बिना कष्ट के सुख भी नहीं मिलता। यह सोच विचार

कर ब्राह्मण बोला "दिखाओ कड़ा कहाँ है ?" बाघ ने हाथ पसार कर उसे कड़ा दिखा दिया। उसे देख कर ब्राह्मण के मन में लालच समाया और कहने लगा "तुम जीवों को मार कर खाते हो, मैं तुम्हारा विश्वास कैसे करूँ ?" बाघ ने कहा "अब मैं बुड्ढा हुआ, शरीर और इंद्रियों में बल नहीं रहा, तुम मेरा विश्वास क्यों नहीं करते ? मैंने जवानी में बहुत पाप किये हैं, इस लिये अब पुण्य दान कर के उन से उद्धार चाहता हूँ। तुम को दुखी जान कड़ा देना विचारा है। आओ इस ताल में नहा कर कड़े का संकल्प ले लो"। ब्राह्मण लोभ का मारा ज्योंही नहाने को ताल में घुसा त्योंही कीचड़ में फँस गया। उस को फँसा देख बाघ धीरे २ उधर बढ़ा और पास पहुँच कर उस ने उस की गर्दन दबा ली। तब तो ब्राह्मण पछताकर कहने लगा "मैंने बहुत बुरा किया कि इस दुष्ट की बातों में आ गया"। ब्राह्मण इसी सोच विचार में पड़ा था कि बाघ उसको मार कर खा गया। मनुष्य को चाहिये कि बिना सोचे समझे कोई काम न करे और लोभ से बचा रहे।

पाठ ३२—अनजान आदमी का साथ करने से हानि

भागीरथी के किनारे एक पाकर के पेड़ के कोल में एक अंधा गिद्ध रहता था। उस पेड पर और भी बहुत

सी चिड़ियाँ रहती थीं जो थोड़ा २ अपने चुगा में से उसे देती थीं और वह उनके बच्चों की रखवाली किया करता था। एक दिन एक बिलाव चिड़ियों के बच्चे खाने की लालसा से उस पेड़ के नीचे आया। उसको आता देख कर बच्चे चिल्लाने लगे। गिद्ध ने कहा "यह कौन आता है ? दूर भाग, नहीं तो मार डालूँगा"। बिलाव ने कहा "लोगों से आप की बड़ाई सुन कर आप के पास धर्म की बातें सुनने को आया हूँ। यह बड़े खेद की बात है कि आप सरीखे महात्मा बिना समझे बूझे मुझे मारने उठे"। गिद्ध ने जवाब दिया "मैंने इस लिये कहा कि बिल्ली को मांस से रुचि होती है और यहाँ चिड़ियों के बच्चे रहते हैं"। बिलाव बोला मैं "नित गंगा-स्नान करता हूँ और जीव का मारना पाप समझता हूँ। मैं यह भी अच्छी तरह जानता हूँ कि अपना पेट साग पात से भर सकता हूँ तो फिर इसके लिये ऐसा बड़ा पाप क्यों करूँ ?" इस तरह पर समझा बुझा कर बिलाव गिद्ध के पास कोल में रहने लगा। कुछ दिन बीते धीरे २ चिड़ियों के बच्चे घोंसलों से खींच २ कर खाने लगा। जिनके बच्चे वह खा लेता वह इधर उधर ढूँढ़ती फ़िरतीं। यह देखकर बिलाव वहाँ से लंबा हुआ। गिद्ध के पास अपने बच्चों की हाड़ियाँ देख सब ने अपने मन में यह शंका की कि हो न हो

इसी ने हमारे बच्चों को खाया है। सब ने एक मत हो कर उस गिद्ध को मार डाला। फल यह है कि बिना जाने बूझे किसी को अपने घर न ठहराना चाहिये, नहीं तो अंत में हानि होती है।

पाठ ३३—पृथ्वी

पृथ्वी जिस पर हम बसते हैं नारंगी की तरह गोल है,। परंतु बहुत बड़ी होने के कारण हमें चपटी देख पड़ती है। बड़े २ पहाड़ उस पर ऐसे हैं जैसे नारंगी के छिलके पर दाने। जहाज़ जो पूरब से पच्छिम की ओर या पच्छिम से पूरब की ओर एकही सीध में बिना मुड़े चले जाते हैं अंत में घूम कर वहीं फिर पहुँच जाते हैं जहाँ से चले थे। इस से भी पृथ्वी की गोलाई जानी जाती है। पृथ्वी का एक भाग स्थल है और तीन भाग जल।

पृथ्वी पर कहीं हरे खेत लहलहाते हैं, कहीं हरी घास के बिछौने बिछे हैं; किसी जगह बाग़ लगे हैं रंग २ के फूल खिले हैं, कहीं नदी लहराती है, कहीं गहरे पानी का हज़ारों कोस लंबा चौड़ा समुद्र है; कहीं बस्ती है, कहीं उजाड़; कहीं दूर तक बालू के मैदान हैं, कहीं कोसों तक पहाड़ हैं जिनकी चोटियाँ आसमान से बातें करती हैं, किसी जगह गरमी इतनी होती है कि शरीर में आग फुकी जाती है और लू से बदन झुलसा जाता है, कहीं

सरदी इतनी पड़ती है कि हाथ पैर ठिठुरे जाते हैं; कभी गरमी होती है; कभी बरसात, कभी जाड़ा। बस्ती हो या जंगल, जानवर सब ही जगह पाये जाते हैं। आदमी को चाहिये कि कुछ २ हाल सब जगह का जाने। इसी जानने का नाम भूगोल विद्या है

पाठ ३४—बुराई का फल बुरा होता है

एक बार एक सिंह के पंजे में चोट आई और वह बहुत बीमार पड़ा। जंगल के सब जीव जंतु उसे देखने आये कि जिससे अच्छा हो जाने पर किसी को न सताये। लोमड़ी नहीं गई। भेड़िया ने सिंह से कहा "महाराज! आप की सारी प्रजा आपके देखने को आई, पर अहंकार के मारे लोमड़ी न आई"। सिंह को लोमड़ी का न आना अच्छा न लगा, उस ने कहा "अच्छा देखा जायगा"। वहीं लोमड़ी का भी कोई मित्र खड़ा था, उस ने झट यह समाचार उसे पहुँचा दिये। समाचार पाते ही लोमड़ी दौड़ी चली आई और जल्दी से दंडवत कर के कहने लगी "महाराज! जब से इस दासी ने आपकी बीमारी का हाल सुना, दवा के खोज में जंगल २ फिरी, पर अब बड़ी कठिनाई से एक जाँची हुई दवा हाथ लगी है"। सिंह ने पूछा "वह क्या है?" लोमड़ी ने कहा "उस दवा में एक मित्र की जान जाती है, पर

हाँ महाराज को ईश्वर अच्छा करे और हम सेवकों की जान जाय तो उत्तम है" । सिंह बोला "दवा का कुछ नाम भी है ?" लोमड़ी ने कहा एक बड़े पुराने वैद ने बताया है कि भेड़िये का गुर्दा पीस कर लेप किया जाय तो पंजा तुरंत जुड़ जाय" । भेड़िया भी जिसने लोमड़ी की बुराई की थी वहीं था; लोमड़ी की बात का जवाब भी न देने पाया कि चीतों ने जो सिंह की ड्योढ़ी पर थे, उसको पछाड़ दिया और उसके गुर्दे निकाल लिये। किसी ने सच कहा है—

"खाड़ खने जो और को ताको कूप तयार" ।

पाठ ३५—बुद्धि से बडे बडे काम हो सकते हैं

किसी वन में एक सिंह रहता था। वह नित जानवरों को मार कर खाया करता था। यह देख कर वन के सब जीव जंतु इकट्ठा हुये और सिंह के पास जाकर विनय के साथ बोले "महाराज ! आप हमारे राजा हैं और हम सब आप की प्रजा। आप कहें तो आप के भोजन के लिये हम लोग एक पशु नित भेज दिया करें जिस से आप को कष्ट न उठाना पड़े" । सिंह ने इस बात को मान लिया और बारी २ से एक पशु उसके पास जाने लगा। कुछ दिन पीछे एक खरहे की बारी आई। उस ने सोचा कि मेरा शरीर तो छोटा है, इतने में उस का

क्या भला होगा। जब उसका पेट न भरेगा तो वह हमारे भाइयों को निस्सन्देह खायगा और हमारा वंश एक या दो बारी में मिट जायगा। इस लिये मैं जीते जी उसका नाश करूँ तो अच्छा है। यह मन में ठान धीरे धीरे चल कर सिंह के पास देर में पहुँचा। सिंह भूख से घबड़ा कर कहने लगा "इतनी देर कहाँ लगाई!" उस ने कहा "इसमें मेरा कुछ अपराध नहीं है। मैं आपके पास चला आता था, राह में आप ही सा दूसरा सिंह मिला, उस ने मुझे रोक लिया। बड़ी कठिनाई से मैं यहाँ तक आया हूँ और उसे वचन दे आया हूँ कि अभी पिछले पाँव लौटा आता हूँ"। सिंह बोला "वह कहां है? मुझे अभी दिखा, मैं उसे बिना मारे आज भोजन न करूँगा"। ऐसी बातें करके दोनों वहाँ से चले। चलते २ जब कि दूर वन में निकल गये तब सिंह ने कहा "अरे वह तुझे रोकने वाला कहाँ है?" खरहे ने इधर उधर देख जवाब दिया "वह आप के डर से कुएं में कूद पड़ा है"। इतनी सुनते ही सिंह क्रोध में आ गया, और कुएं के पनघट पर जा पानी में झाँका। पानी में उसने अपनी परछाईं देखी और समझा कि दूसरा सिंह है। तुरंत ही उसके मारने को कुएं में कूद पड़ा और पानी में डूब कर मर गया। खरहे ने जाकर जंगल के सब जान-

वरों को खबर दी कि मैं आज सिंह को मार आया हूँ और तुम्हारे जन्म २ के दुख दूर कर आया हूँ। यह सुन कर सब ने उस की बुद्धि की सराहना की ।

पाठ—३६ बुरा स्वभाव

एक लड़का नित पाठशाला में पढ़ने जाया करता था। एक दिन वह पाठशाला से एक पुस्तक चुरा लाया। लड़के की मा ने उससे कुछ भी न कहा और पुस्तक बेच कर उसे आम खाने को ले दिये। इसी तरह करते करते उस को चोरी की बान पड़ गई और उसने बहुत सी चोरियाँ कीं और चोरी का माल अपनी मा को दिया। मा धन के लालच से बेटे से कुछ न कहती और सदा उसका लाड़ प्यार करती। थोड़े दिनों में वह पक्का चोर हो गया। एक दिन वह राजा के महल में चोरी करते पकड़ा गया और उसे फाँसी की आज्ञा हुई। फाँसी चढ़ते समय सैकड़ों आदमी उसे देखने आये। उसकी मा भी वहाँ आई और फूट फूट कर रोने लगी। लड़के ने मा से मिलने की आज्ञा माँगी। आज्ञा मिलते ही उस ने अपनी मा से कान में बात करने का बहाना कर उस का कान कुतर लिया। मा हाय २ करती दूर भागी। सब लोग यह देख लड़के को धिक्कारने लगे। लड़के ने कहा "आप लोगों का क्रोध करना वृथा है। इसी के

कारण मेरी यह दशा हुई है। जो बचपन से मुझे अच्छे ढँग में डालती तो आज मेरी जान क्यों जाती" ।

देखो जब पेड़ छोटा होता है उसकी डाली जिस ओर चाहो सहज में झुक जाती है। परन्तु वही पेड़ जब बड़ा हो जाता है तो कितना ही उपाय करो नहीं मुड़ता। यही हाल लड़कों का है। जब तक छोटे रहते हैं सहज ही में अच्छे ढंग पर लाय जा सकते हैं, पर बड़े होने पर उनको ढंग पर लाना बहुत कठिन हो जाता है। इस लिये लड़को ! तुम को चाहिये कि बचपन ही से अच्छे कामों में मन लगाओ और बुरे कामों से बचे रहो। जो बचपन से लत पड़ जाती है बड़े होने पर सैकड़ों उपाय क्यों न करो नहीं छूटती।

पाठ ३७—सूरज

सूरज एक आग का गोला है और पृथ्वी से तेरह लाख गुना बड़ा है। उसकी दूरी पृथ्वी से साढ़े नौ करोड़ मील है, इसी कारण इतना छोटा देख पड़ता है। कुपढ़ लोग यह जानते हैं कि सूरज हमारी पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, पर यह उनकी भूल है। ठीक तो यह है कि पृथ्वी सूरज के चारों ओर एक बरस में घूम आती है। और चौबीस घंटे में एक बार अपनी कीली पर घूम जाती है। पृथ्वी का जो भाग सूरज के सामने आ जाता है उस

में दिन होता है और दूसरे में रात। जब अँधेरा हिस्सा सामने आ जाता है तब वहाँ दिन हो जाता है और उजाले हिस्से में सामने से हट जाने से रात हो जाती है। इस तरह बारी से आधी दुनियाँ में रात और आधी में दिन होता है, पर इस पृथ्वी पर दो ऐसी भी जगह हैं जहाँ साल में छ महीने का दिन और छ महीने की रात होती है। सूरज की गरमी से पानी भाप बन कर उड़ता है और उसी भाप से बादल बन कर फिर पानी बरसता है। इसी की गरमी से नाज और फल पकते हैं, सूरज की गरमी न होती तो कोई जीव जंतु न जी सकता।

पाठ ३८—सब को प्रसन्न करना कठिन है

एक बुड्ढा आदमी और उसका बेटा दोनों परदेश में थे और उनके साथ एक टट्टू भी था। टट्टू पर ओढना बिछौना लादे दोनों बाप बेटे पाँव २ जा रहे थे। लोगों ने यह देख कर कहा "देखो यह दोनों कैसे पागल हैं कि टट्टू साथ है फिर भी पैरों जाते हैं"। यह सुन कर बुड्ढा टट्टू पर सवार हो लिया। तब लोगों ने कहा देखो बाप कैसा निर्दयी है, आप तो घोड़े पर चढ़ा है और बेटा पैरों घसिटता है"। बाप टट्टू पर से उतर पड़ा और बेटे को सवार कर दिया। फिर भी लोगों ने कहा "देखो बेटा कैसा कपूत है, बुड्ढा बाप तो पैदल चलता

है और आप जवान हट्टा कट्टा घोड़े पर चढ़ा है। तब बुड्ढा टट्टू पर आगे सवार हुआ और बेटे को अपने पीछे बैठा लिया। फिर भी लोगों ने कहा "जान पड़ता है कि टट्टू मँगनी का है, इसी से असबाब के सिवाय दो आदमी भी लदे हैं। इस बेचारे टट्टू पर इन को कुछ भी दया नहीं आती"। सच तो यह है जो सब को प्रसन्न करने का उपाय करता है उससे कोई भी प्रसन्न नहीं होता।

पाठ ३९—ऊंट

ऊंट बड़ा सीधा जानवर है। जो कुछ उसको सिखाया जाता है बच्चों की तरह सहज में सीख लेता है। एक नकेल के सहारे से उससे सारा काम लिया जाता है। उसकी टाँगें लंबी होती हैं। उसके पैर के नीचे एक गद्दी होती है। जब वह पृथ्वी पर पैर रखता है गद्दी फैल जाती है और इसी सबब से उसका पैर रेत में नहीं धँसता। उसकी गर्दन लंबी होती है। उसको झुका कर धरती पर चर सकता है और उठा कर ऊँचे २ पेड़ों की पत्तियों को खा सकता है। उसकी आँखों के पपोटे भी भारी होते हैं। उन्हीं से अपनी आँखों को धूप की गरमी से बचाता है। उसकी पूँछ बहुत छोटी होती है। उसके ओठ (होठ) ऐसे बड़े होते हैं कि झाड़ियों

के पत्तों को अच्छी तरह से पकड़ सकता है। पीठ पर कौहान होता है। बाल छिदरे होते हैं जिससे गरमी कम सताती है। उसके नथुने भी बड़े होते हैं। चलते समय वह उनको बन्द कर लेता है जिसमें रेत न घुस जाय। अरब के लोग उसके बालों का कपड़ा और उनकी रस्सी बनाते हैं और उसका मांस भी खाते हैं। अरब और अफ्रीका में बहुत से ऐसे उजाड़ जंगल हैं जिनमें न पेड़ हैं न पानी के सोते, सिवाय बालू और पत्थर की चट्टानों के कोसों तक कुछ दिखाई नहीं देना। जब किसी को ऐसे जंगलों में होकर जाना पड़ता है तब वह अपने साथ खाने पीने का सब सामान पहिले ही से रख लेता है। ऐसा न करे तो रास्ते ही में भूख प्यास के मारे लोट पोट हो जाय। ऐसी जगहों में केवल ऊँट ही काम आता है, क्योंकि वह बिना खाये पिये कितने ही दिन तक रह सकता है और चलने के पहिले इतना पानी पी लेता है कि कई दिनों के लिये निश्चिन्त हो जाता है। इसीसे अरब के लोग ऊँट को बहुत चाहते हैं और उसकी बड़ाई में तरह २ के गीत गाते हैं।

पाठ ४०—भलेचगे रहने की रीति

संसार में निरोग रहने के बराबर कोई सुख नहीं है। जब आदमी को रोग लग जाता है सारे सुख फीके पड़

जाते हैं, यहाँ तक कि अपना जीना तक भारी हो जाता है। जो तुम चाहते हो कि तुम्हें कोई रोग न हो तो मकान ऐसी जगह बनाओ जहाँ सील न हो। ऊँची जगह में सील कम होती है। मकान का पटाव ऊँचा रक्खो। उस में दरवाज़े और खिड़कियाँ इतनी होनी चाहिये कि हवा सहज में आ जा सके। जहाँ बहुत आदमी रहते हैं वहाँ की हवा साँस लेने से बिगड़ जाती है। खिड़कियाँ और दरवाज़े होने से यह बिगड़ी हवा निकल जाती है। ऐसी छोटी २ कोठरियाँ मकान में न बनाना चाहिये जिनमें उजाला न जा सके। अँधेरे मकान मैले रहते हैं। उजाले से सील नहीं रहती। मकान के बंद रहने से हवा बिगड़ जाती है। मकान लीप पोत कर साफ़ रखना चाहिये। कूड़ा मकान से दूर फेंकवा देना चाहिये। मकान मैला रहने से हवा बिगड़ जाती है और बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं। मकान के बाहर भी चारों तरफ़ सफ़ाई रखना चाहिये क्योंकि सफ़ाई न होने से जो हवा बाहर से भीतर आवेगी वह साफ़ न रहेगी। पानी भी मकान के इधर उधर न इकट्ठा होना चाहिये। उस पानी पर होकर जो हवा आवेगी वह अच्छी न होगी। मोहरी और पायख़ाने नित धुलवाना चाहिये। पशुओं को अलग मकान में रखना उचित है।

ऐसा खाना न खाना चाहिये जो अवगुन करे। पानी साफ़ पीना चाहिये। पसीने से भीगे कपड़े न पहनना चाहिये। थोड़ी २ कसरत भी नित करना चाहिये। रात में समय पर सोना और तड़के उठना चाहिये। ऊपर की बातों पर ध्यान देने से आरोग्यता रहेगी।

पाठ ४१—आदमी के शरीर के भाग

आदमी के शरीर के तीन मुख्य भाग हैं—सिर, धड़ और हाथ पैर। सिर और धड़ को गर्दन मिलाती है। सिर का सबसे ऊँचा हिस्सा जो आगे की ओर है माथा कहलाता है। माथे के दायें या बायें हिस्से को कनपटी कहते हैं। माथे के नीचे भौंहें हैं। भौंहों के नीचे पलकें और पलकों के नीचे आँखें हैं जिनसे हम देखते हैं। आँखों के बीच में नाक है। इसमें दो छेद होते हैं जो नथुने कहलाते हैं। इन्हीं के सहारे से हम साँस लेते हैं और सुगंध दुर्गंध पहिचानते हैं। नाक के दायें बायें गाल हैं और गालों से मिले हुये दोनों ओर दो कान हैं जिन से हम सुनते हैं। नाक के नीचे मुँह है जिससे हम खाते हैं और साँस भी लेत हैं। मुँह के ऊपर नीचे ओठ (होठ) हैं और उसके भीतर जीभ और दाँत हैं। आँख, कान, नाक, मुँह को इंद्रिया कहते हैं। सिर के सबसे ऊँचे हिस्से को खोपड़ी कहते हैं। जहाँ गर्दन धड़ से जुड़ी है वहाँ दो

हड्डियाँ धड़ के बीच से कंधों की ओर चली गई हैं जिन को हँसली कहते हैं। धड़ में दोनों ओर की हड्डियाँ पसली कहलाती हैं। पीछे की ओर जहाँ यह हड्डियाँ मिली हैं उस का नाम रीढ़ है। रीढ़ में चौबीस टुकड़े होते हैं। यह टुकड़े इसलिये बने हैं कि देह सहज में झुक सके। धड़ के पीछे का हिस्सा पीठ है। आगे के मुख्य तीन हिस्से हैं। ऊपर छाती है, बीच में पेट और उसके नीचे पेड़ू। पेट और पेड़ू जहाँ मिले हैं उसके बीच में एक भँवरी सी है उसका नाम तोंदी है। जहाँ बाहें धड़ से मिली हैं वह कंधा है, बाँह के दो हिस्से हैं जिनके जोड़ को कोहनी कहते हैं। जहाँ हाथ बाँह से जुड़ा है वह गट्टा या कलाई है। हर एक हाथ में एक २ अँगूठा और चार २ अँगुलियाँ हैं। ऐसाही हाल टाँगों का है। टाँगों के बीच का जोड़ घुटना कहलाता है। घुटने के ऊपर का हिस्सा जाँघ है और नीचे का पिंडली। पैर जहाँ टाँग में जुड़ा है वह टखना है। हर एक पैर में एक २ अँगूठा और चार २ अँगुलियाँ होती हैं।

पाठ ४२—विनय के दोहे।

प्रातहि = सवेरे	सत = अच्छा	बान (बाण) = तीर
मनुज = आदमी	निरादर = अपमान	अमित = अत्यन्त
हृदय = दिल	वित्त = धन	शुक = तोता
समनेह = एक सा प्यार	सुपूत = अच्छा लड़का	प्रभु = ईश्वर
सुत = लड़का	कुसुत = बुरा लड़का	सारिका = मैना
दुर्जन = बदमाश	समता = बराबरी	ईर्षा = डाह

चराचर = चलने वाले और न चलने वाले

प्रातहि उठि के निच नित, करिये प्रभु को ध्यान ।
याते जग में होय सुख, अरु उपजै सत ज्ञान ॥१॥
काहू ते कड़ुवो वचन, कहौ न कबहूँ जान ।
तुरत मनुज के हृदय में, छेदत है जिमि बान ॥२॥
पढ़िबे में कबहू नहीं, नागा करिये चूक ।
कुपढ़ लोग माँगत फिरहिं, सहहिं निरादर भूक ॥३॥
कबहुँ न चोरी कीजिये, यदपि मिले बहु विच्त ।
नर फँस ताके फंद में, पावहिं लाज अमित्त ॥४॥
मीठी बोली बोलिये, करके सब सों प्रीति ।
करें प्रेम तासों सकल, लखि शुक सारिक रीति ॥५॥
यदपि होत पितु मातु को, सब सुत पै सम नेह ।
लखि सुपूत ठंढक लहै, जरै कुसुत लखि देह ॥६॥
जो जन ईर्षा धारि मन, जरत देखि पर हित्त ।
कैसे ऐसे पुरुष के, शीतलता रह चित्त ॥७॥
जानि सर्व गति ईश की, करै न कबहूँ पाप ।
सबहि चराचर जगत को, देखत है वह आप ॥८॥
सुनि के दुर्जन के वचन, हो रहिये चुपचाप ।
करै जो समता तासु की, नीच कहावै आप ॥९॥
झूठ कबहुँ नहिं बोलिये, झूट पाप कर मूल ।
झूठे की कोउ जगत में, करै प्रतीति न भूल ॥१०॥

पाठ ४३—उपदेश के दोहे

यातना = कड़ी वेदना	सम = बराबर	थल = स्थान
मूल = जड़	पराई आस = दूसरे के भरोसे	सन्मान = आदर
शूल = दर्द	भल = अच्छी तरह	द्रव्य = रुपया पैसा
महान = बड़ा	सुग्गा = तोता	मूरख = मूर्ख
परम = बहुत	पशु = जानवर	बैरी = दुश्मन

पाप करम ते दूर ही, सदा रहहु सब लोग।
पापी जन पावैं महा, दुःख यातना भोग ॥१॥

निश्चय करि जानो सबै, क्रोध पाप कर मूल।
है जाके आधीन नर, सहे महा दुख शूल ॥२॥

सब दोषन में आलसहु, अवगुन एक महान।
नाश होहिं याते सदा, गुन अनेक अरु ज्ञान ॥३॥

बड़ा पशू सोई अहै, विद्या नहिं जेहि पास।
परम दीन जन सम सदा, रहे पराई आस ॥४॥

पढ़िबो सोई है भलो, जो भल बूझो जाय।
बिनु बूझो सुग्गो पढ़ै, पंडित सो न कहाय ॥५॥

मूरख होनो नहिं भलो, आदर करै न कोय।
जाते बोलन चहतु है, फेरि लेय मुख सोय ॥६॥

पंडित जन को सबहि थल, होत बड़ो सन्मान।
द्रव्य देय सीखैं सबै, इन्ह तें सुन्दर ज्ञान ॥७॥

विद्या सम गुन जगत में, और न दूजो कोय।
ते जाके सदा, अति अद्भुत सुख होय ॥८॥

विद्या पढ़िबे में सदा, करु श्रम मन चितलाय।
या जग धन सुख लहन को, सुलभ न और उपाय ॥९॥
लालच सम अरु दोष नहिं, यहि जग दूजो कोय।
जाके वश नर होय के, घर को बैठें खोय ॥१०॥

पाठ ४४—नीति के दोहे

रिपुता = दुश्मनी
मीत (मित्र) = दोस्त
प्रफुल्लित = खुश
रिपु = वैरी
भीत = भय

नृप = राजा
लहै = पावै
कीरति [कीर्ति] = यश
आपति = दुःख
कुबाट = बुरी राह

अरम्भै = शुरू करै
लाज = शरम
शपथ = सौगन्द
दीन = गरीब
पद = ऊँचा दर्जा

करो न रिपुता काहु सों, सब के रहिये मीत।
जाते मन प्रफुलित रहे, होय न रिपु की भीत ॥१॥
रहो जौन से देश में, तहँ के नृप की रीति।
देख चलो ता चाल पर, यह चतुरन की रीति ॥२॥
श्रम सुचाल के कारणे, नर लह प्रभु चित बास।
ताते धन कीरति लहै, पूरे पद की आस ॥३॥
जो नृप विद्याबल बिना, कियो चहै परबन्ध।
सो पूरी आपति लहै, जिमि कुबाट चल अंध ॥४॥
पहिले लखि के दोष गुण, फेर अरम्भै काज।
जाते दुःख न होय मन, लहै न जग में लाज ॥५॥
शपथ खाय बोलै सदा, चिकनी चुपड़ी बात।
ऐसे नर सों बचि रहो, करै न कबहूँ घात ॥६॥

सब की बात को प्रथमहिं ढूँढो हेत।
फिर उत्तर मुख ते कहो, [illegible] बिधि राखो चेत ॥७॥

जो आपस में बैर करि, मिलैं और के साथ।
वे भोगत हैं बहुत दुःख, परि बैरी के हाथ ॥८॥

पालौ परजा पाय पद, याते यश जग होय।
पाओ सुख परलोक में, यह कहि चतुरनि जोय ॥६॥

पर निंदा करि जो तुम्हें, देत बड़ाई पूर।
मत भूलो या पै कहुक, तुम्हें कहेगो कूर ॥१०॥

पाठ ४५—प्रश्नोत्तर के दोहे

लीन = लगा हुआ	नेह = प्रेम	लच्छण = चिह्न
ईश = भगवान	तृष्णा = लालच	अकाज = हानि
सृष्टि = जगत	विमुख = उलटा	नर = आदमी
राय = राजा	सज्जन = अच्छे आदमी	दुष्ट = बदमाश
परोदय = दूसरे की बढ़ती	निश्चय = ठीक	

सुखी जगत में कौन है, जाको दुख कछु नाहिं।
होय लीन भगवान में, सुखी वही जग माहिं ॥१॥

दुखी कहत हैं कौन को, ईश सृष्टि के बीच।
देखि परोदय जो जरै, दुखी रहत वह नीच ॥२॥

को जग में धनवान है, जाको मन न डोलाय।
जो राखै संतोष मन, वह धनिकन में राय ॥३॥

कहत दरिद्री कौन को, कहो मोहि करि नेह।
धन तृष्णा जाके अधिक, जानु दरिद्री तेह ॥४॥

॥ श्री ॥

फागन का फूल

प्रकाशक—

पं० मदनमोहन सिद्ध

मिश्रराजाजी का रास्ता,
जयपुर सिटी.

प्रथमावृत्ति २०००

प्रेमप्रकाश प्रेस, जयपुर

मूल्य १पैसा

फागण का फूल

लीलाम बाजी

लिलाम लगाकर फीचर को।
पीया नाश करो क्यों ई घरको ॥टेर॥

कोई चवजी की लुगाई- कोई चदने यू कही।
सारे दिन फिरता फिरो थे काम सिर लागो नही ॥
कैया एका दुआ में जी भरगो ॥१॥

बावला नित काम का क्यों रोज रोव रोज छे।
एक दिन ज्यो फल गयो तो जिन्दगी भर मोज छे॥
बिजली लम्प लगास्यां मोटर को ॥२॥

दिन आथता ही रिकस कोड रोजकी थे जाओ छो।
ग्यारा बज्जा पाछे भी कोई नीठ सी थे आओ छो॥
सूता सूता सपना में भी भड को ॥३॥

रोजकी तू टोकदे और सोए सारा टाल दे।
रामजी केसी लुगाई पोतसारा गाल दे॥
कदे नाम न लेवे पीहर को ॥४॥

गहना गाठा कपडा लत्ता करदिया सब गोल गुप।
सब तरह नागी करी क्यों होगया छो अब थे चुप॥
ई सें जावो में छोड्यो पीहर को ॥५॥

मेहीं कांई एकलो सारो जगत मोद्दा करे।
कुंड चौपड गलो रसंत चलावां खेला भंर ॥
ज्यादा काम नहीं छै जिक्कर को ॥६॥

सबके बेई झूंठ को थांका जिभ्या हांसो करे।
चोरं जूआं खोरही लिल्लाम का खेला भरे ॥
बदनाम करे ई जैपुर को ॥ ७ ॥

जात छत्तीस्यूं करे हिन्दू, मुसलमा दोन्यूं दीन।
मरद औरत धनी मानी ऊंच नीचा और हीन ॥
काल छिक्को फलो होरा हीनर को ॥८॥

घरमें बिलकुल नाज कोन मागं बिलकुल छै नहीं।
बलीता भी बीत गो क्यूं सुनो छो कांई कही ॥
थाम लेश नहीं छै फीकर को ॥९॥

नाज को नांवों लगास्यां साग को सातो सही।
बलीता में दूआ तीयो बात तू सांची कही ॥
लडी चाही लगास्यां नहीं धडको ॥१० ॥

चून पाडोसन उधारो देर सब पछता रही।
ल्यावो मूने मार गेरो जीवा से अकथा रही ॥
जीसें थांकोभी मिट जासी खटको ॥११

बात सारी सोचकर मुनेभी आयो होश छे।
या बुरी हालत हुई लिल्लाम कोही दोस छै ॥
गयो अबतो जमानो शनीचर को ॥१२॥

ज्ञानकी जो मानली तो फेर आनन्द होगया।
बचगया फन्दा सें थे और दुख सारा खो गया॥
करो भजन खुशी हो ईश्वर को॥ १३॥

नशे बाज़ों का बयान।
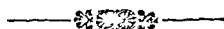
जरा देख सुरत आइने में,
क्या हाल नशे ने करदीना॥ टेर॥

जो बीडी सीगरेट पीतेहैं,
वो सिसक २ कर जीतेहैं।
कफ खांसी दम से बेहराज़ई,
और दर्द सदा रहे सीने में॥ १॥

जो चिलम तमाखू वाला है,
मुंह हाथ सदाही काला है।
दर २ पर मांगे आग,
फर्क क्या उसमें और कमीनेमें॥२॥

गांजा सब गुन को देना गाल,
बुद्धी हो भ्रष्ट और चिपके गाल।
धान पान का रोग करे,
गिर जाय जरासे झीनेमे॥ ३॥

सुलफे के दमकी यह लीला,
खुस २ में खुश्क चेहर पीला।
कम जोर करे दम रोग भेरे,
दम चढे २ जब जीने में ॥ ४ ॥

जो करते हैं चंडू बाजी,
किस्मत की उनसे नाराजी।
काया में घुण खुनस लगे।
ज्यूं लगे अन्न के कीनेमे ॥ ५ ॥

जो मर्द फांकता है जरदा,
गिरजाता अक्कल पर परदा।
सब जन्म कर्म में हों थू २,
नहीं रहता कभी करीने में ॥ ६ ॥

जरजेवर चेहरा फूलकमल,
सब चाट गई यह हाय अमल।
लग गये बादगर छोड़ोतो,
पड़ जावें सांसे जीनेमें ॥ ७ ॥

मत भूल कभी पीना पोसत,
नहीं पछतावोगे फिर दोसत।
रंग होय बदरंग स्याई,
चढ रही जैसे सीने में ॥ ८ ॥

जिन भंग का रंग लगाहै,
उन वक्त फ़िजूल गमाया है।
बनजाय दरद्री आलस में,
लानत है भंग के पीनेमें ॥ ९ ॥

सब से बदतर है यार शराब,
कर देती बिलकुल बहुत खराब।
पेशाब करें कुत्ते मुंहमें,
बदबू मू और पसीने में ॥ १० ॥

ओ नई जवानी के शोकीन,
मत ज्ञान कभी खाना कोकीन।
तन के कपड़े बिकजावेंगे,
मागे गा भीक महीने में ॥ ११ ॥

गजलों का हार

* प्रकाशक *
ला० कन्हैयालाल-चन्दूलाल
ताजर कुतब, देहली।

मुन्शी श्यामबिहारीलाल के द्वारा "हिन्दुस्तान"
इलेक्ट्रिक प्रिंटिंग वर्क्स देहली में छपा।

मूल्य -)

*

* गजल नं० १ *

श्री गंगे से ध्यान लगाना मुझे ।
मन मैल को धोके बहाना मुझे ॥

शेर—सामान बाध रेलपर जा मन मगन किया ।
गाडी में जाके बैठके हो मैने दम लिया ॥
नहीं मिलता खुशी का ठिकाना मुझे ॥ श्री० ॥
गढ पहुंच उतरे रेल से तांगे पर हो सवार ।
दर्शन किये जा गंगे के बहतीथी निरमल धार ॥
डेरा गंगा किनारे लगाने मुझे ॥ श्री गंग० ॥
स्नान ध्यान करके मगन मन में हो गया ।
और शीलता का दौर सकल तन में हो गया ॥
गाना हरदम हरि का तराना मुझे ॥ श्री० ॥
आइ जो विशनु लोक से शिव शीश पर लई ।
संसार तारने को मृतलोक में वही ॥
पार सागर से मैया लगाना मुझे ॥ श्री० ॥
पापी कुटिल कठोर जो स्नान आ करें ।
सुर पुर में वास जा करे जम त्रास ने भरे ॥
ऐसी फन्द से जमके बचाना मुझे ॥ श्री० ॥

तपकर भागीरथ आपको प्रसन्न कर लिया ॥
पुरुषों को उसके नर्क से तुमने स्वर्ग दिया ।
ऐसी भगती का रसना बताना मुझे ॥ श्री० ॥

* गजल नं० २ *

स्वामी मेले को सैर करादो मुझे ।
जो २ वस्तु कहूं सो दिलादो मुझे ॥
शेर—आटा भी दाल घी भी और ईंधनभी लाईये ।
जल्दी से मैं बना धरूं भोजन भी पाईये ॥
जल भी निर्मलसा लाके पिलादो मुझे ॥ स्वामी० ॥
खान मुझ खिलौने हैं लोले के वास्ते ।
रो रहा है कल से यह पोते के वास्ते ॥
थोडी सबजी वह मीठा दिलादे मुझे ॥ स्वामी०॥
धोती रुमाल टोपी और कन्ठी वह पत्रलडी ।
लोटा गिलास इलायची दाने भी १ घडी ॥
सारा बाटन का सोदा दिलादो मुझे ॥ स्वामी०॥
कडडा व कठडा वेलनी छोटी सी ढोलकी ।
डिबया भी ढकनेदार १ दिलवादो मोल की ॥
बेटे नन्हे की खबरी दिलादो मुझे ॥ स्वामी०॥

नाडा ननद के वास्ते और धोती भी सास को ।
चुन्डी भी मुझे देना है कुछ काम २ का ॥
इतना सोद जरूर दिलादो मुझे ॥ स्वा०पी० ॥

❋ गजल नं० ३ ❋

प्यारी मेले की सैर कराऊं तुझे ।
जो २ वस्तु कहो सो दिलाऊं तुझे ॥
शोर–झगडे में छोटा करने को पडता है क्यों फजूल ।
चढ जायगी जो धूप तो उठने लगेगी धूल ।
हलवा पूरी कचौरी खिलादूं तुझे ॥ प्यारी० ॥
पहिले तो चल बाजार में खाने को खाइये ।
प्रसाद लूटने को फिर सामान लाइये ॥
ठंडे २ में सोदा दिलादूं तुझे ॥ प्यारी० ॥
करने को तेरे वास्ते धोती दिलाऊंगा ।
नाडा में मजेदार १ रेशम का लाऊंगा ॥
झलफल की चूंदडी दिलादूं तुझे ॥ प्यारी ॥
जो कुछ पसन्द आ गया तुझको बाजार में ।
छोडूं नहीं वह चीज मैं लाऊं हजार में ॥
बाजी खेलन को चौसर दिलादूं तुझे ॥ प्यारी ॥

गांड़ा गंडेगी मूलियां और लेनेहै संतरे ।
खाना गुलाब जामनें जो दिल तेरा करे ॥
सोडा वाटर की बोतल पिलादूं तुझे ॥ प्यारी ॥
पढ़नी तुझे किताब अगर मेरी जान है ।
माइडीयरसर की आई दुकान है ॥
उनसे सस्ती कितावें दिलादुं तुझे ॥ प्यारी ॥

* गजल नं० ४ *

शम्भू अपने कैलाश बुलाले मुझे ।
गोरा माता के दर्शन करादो मुझ ॥
अपनी विथा केऽशपर में माता से वर्णन करूं ।
वोही करेगी पालना में ध्यान नित उनका धरू ॥
शम्भू माता ही पार लगावे मुझे ।
मात अपने पुत्र की विनती सुनेगी ध्यानदे ।
पुत्र के दुख क समय में मात गोरा प्राणदे ॥
तबतो बिगडी पडेगी बनानी तुझे ।
थी मी यें शुध भूमी अ। अशुद्ध सब होगई ।
सभ्यता जाती रही सारी सजीवनी खोगई ॥
शम्भू तन में लगी अब केसे वुझे ।

गेर मुल्को के पखेरू आबसे है हिन्द में ॥
हिन्द के वासी गिरे अब कोनसे जा सिन्ध में ।
शम्भू चाहता है दुष्ठ मिटाना मुझे ।
बस रहे है चोर नगरी में अनेको देखलो ॥
अपने भक्तो की दशा को आप भगवन देखलो ।
इनको यहां से उठाना पडेगा तुझे ।
इसलिये हूं लीन दुख मे सुख नजर आता नहीं ।
बस बुला कैलाश को कुछ और अब भाता नहीं ॥
शम्भू दिन पर दिन मेरा काया रुझे ।
येही निवेदन मातसे कैलाश पर होगी मेरी ॥
दुख निवारण मात वो छिपता हट यगी मेरी ॥
प्यारे शियाम यही अभिलाशा मुझे ।

* गजल नं० ५ *

सियाराम अयोध्या बुलालो मुझे ।
अपने चरणोका दास बनालो मुझे ॥
शेर—यह दिशा इसदेशकी है हरतरह मजबुर है ।
बादये गफलत को देखो हरतरह मखमूर है ॥
अपनी प्रीति का प्याला पिलादो मुझे ।

कदीरने चक्कर दिया बनवासअब तुमकोदिया।
ये सता की केकई ने माग वर उसने लिया॥
राजा दशरथ कहे दास बनालो मुझे ॥ सिया॥
यह दशा सीताने देखी राम तो बनको चले।
सोचा यह दिलमें उसने यह तेरे बुरे दिन आचले।
बोली साथ में नाथ निभालो मुझे॥ सिया॥
राम सीता चलदिये तब साथ में लक्षमण चले।
नगरी अयोध्या को यह प्रानी तीनो खाली करचले॥
कह सुमन्त यह रथमें बिठालो मुझे ॥ सिया॥
दास हुं मे आपका मुझ पर कृपा कीजिये प्रभु।
नाम हे केशी मेरा यह भी सुन लीजिये प्रभु॥
मेरी प्रीति से अपना बनालो मुझे ॥ सिया॥

* गजन नं० ६ *

मेरे शम्भू तू लीजो खबरिया मोरि।
बीती जाती है सारी उमरिया मोरी॥
शेर—जटा में गंग बहे पाप नाश दुख हरनी।
करे हे मोक्ष सभों की बस आप वह तरनी॥
इसी से नाम जगमें हे तारनी तरनी॥

हरी हुओरपै मुक्ती तू कीजो मेरी ॥ मेरे ॥
भालपै चंद्र तिलक तीन नेत्र साजे है ।
डमरू भी हाथ लिये नंदी पर बिराजे हैं।
दरश के देते ही सब दुख दूर भाजे है ।
मोहे लागेरे प्यारी सुरतिया तेरी ॥ मेरे ॥
गले है कंठ तेरे रुड मुंड की माला ॥
बिछाये बैल पर बैठे है सिंह की छाला ॥
गौरजा बाएं अंग दाए अंग हैं ज्वाला ॥
बस तुम्ही से लागी नजरिया मेरी ॥ मेरे ॥
शेर—बगैर हुक्म तेरे पत्ता भी नहीं हिलता ॥
बगैर दर्श तेरे मम कमल नहीं खिलता ।
बता सेवक को सीधी डगरिया तेरी ॥ मेरी ॥

* गजल नं० ७ *

मेरे प्रभू जी दरश दिखा दो मुझे ।
गमो रंज से आन छुडादो मुझे ॥
शेर—मुद्दत हुई तडपते हुए इन्तजार में ।
सोदाई बन रहा हूं तेरी यादगार में ।
कब दरशन हो नाथ बतादो मुझे ॥ मेरे ॥

शेर—संसार सागरमें मेरी यह नाव डुबी जारही
लोखबर जल्दी मेरी है जां लबों पर आरही।
डूबा जाता हूं पार लगादो मुझे। मेरे०।
शेर—मद काम क्रोध लोभ से मुझको बचाइये।
आवागमन के फंद से जल्दी छुडाइये॥
अपनी भक्ति का प्रेम पढादो मुझे। मेरे।
शेर—हरदम लगन लगी है मुझे तेरे नाम की।
मंगतके दिलमें लगरही वैकुठधाम की।
अपनी भगती का जाम पिलादो मुझे। मेरे।

* गजल नं० ८ *

मोटर लाके तू लेजा रसीने मुझे।
मारे गरमी के आये पसीने मुझे।
शेर—जिस मका के बीचमें छाजाय गर कोई बवा
क्या शफा देसकती है टेबिलफेन की हवा।
किया बेदम हवायें सडीने मुझे। मोटर०।
शेर—बीचमें कोठी चिनादो हो किलेके सामने।
खिल हुए हों गुनचे गुल कोठी के सामने।
किया बिसमिल जवानो चढीने मुझे। मोटर०।

ा र–खिल रही हैं गुल ललूखा की वडांपर डालियां.
स्त हो बुलबुल फिर रहीहैं और वनीहो क ारियां
ाही आये पसन्द कजीने मुझे ॥ मोटर० ॥
ार—बनगया जंजाल मेरे वास्ते यह घर सनम।
मैं रसीने जाकर रहुंगी पिया तेरी कसम॥
ायें दाग्यान कोठ और जीने मुझे ॥ मोटर० ॥
ार—नीचे २ घर तेरे ना धूप है ना छाय है।
ाक्खी मच्छर और खटमल रातदिन तडफाय है॥
ाही सोच ने बारह महीने मूझे ॥ मोटर ॥
ार-डायर प्यारे कह चुकी हूं तुझसे लाखों बार मैं।
ा रही हूं नाम मिलकर जिन्दगी से ख्वार मैं॥
युंही गुजरे तडफते महीने मूझे ॥ मोटर ॥

* गजल नं० ९ *

प्यारी सीता सुरतिया दिखादो मुझे।
कहां छोडी लखन ये बतादो मुझे॥
शे०-चौकडी तुम भर रहेथे बनके ये मृगो इधर।
क्या वृक्षो तुमको सीता भी नहीं आई नजर।
आया कोन बशर ये जितादो मुझे ॥ प्यारी ॥

वे फलक देखा नहीं क्या तू भी अंधा हो गया।
छुप गया सुरज जगत में ये अंधेरा हो गया॥
कैसे आया सितमगर सुनादो मुझे॥ प्यारी॥
है तड़पती जां हमारी बिन पिया दीदार के।
काल को लूंगा बुला गल में कटारी मार के॥
खबर देके सिया की बचादो मुझे॥ प्यारी॥
मिल गया कुछ भी पता गर उस सितमगरका मुझे।
जल्द लूंगा में पलट फिर देख लेना तुम मुझे॥
जरा नाम तो उसका बता दो मुझे॥ प्यारी०॥
ढूडने जावो लखन ब्रह्मान्ड भर को देखना।
बनके छोटा का पता हो इसे भी तुम पूछना॥
पता सीता का जल्दी लगादो मुझे॥ प्यारी॥

* गजल १० *

मेरे बाबू बुलाले रसीने मूझे।
नादेगी ये फुरकत तो जीने मूझे॥
सफाई हुसन की झलकती है गो रसीने में।
चमक कहां है यह अलमास के नगीने में॥
नादेगी ये फुरकत तो जीने मूझे॥ मेरे॥

कभी मिटते हैं विलायत की मैं कामों पर ।
कभी फिदा हुवे कशमीरी नाजनीनों पर ॥
नादेगी ये फुरकत तो जीने मुझे ॥ मेरे ॥
हमेशा चढते रैहे रंडियों के जीनों पर ।
सभाला होस तो मरने लगे हसीनों पर ॥
नादेगी ये फूरकत तो जीने मुझे ॥ मेरे ॥
हवा लेचल उडा कर तु मुझे जल्दी रसीने में ।
तडफना है ये दिल मेरा भरा अरमान सोनेमें ॥
नादेगी ये फूरकत तो जीने मुझे ॥ मेरे ॥
तांगे वाले तु लेचल रसीने मुझे ॥

* गजल नं० ११ *

जानी जुबना पै ना इतराया करो ॥
कभी खौफ खुदा भी तो खाया करो ॥
गैरसै इस दरजे उलफत दिल रुबां अच्छी नहीं ।
मान जावो आशिकों की बददुवा अच्छी नहीं ॥
अपने आशिक को यूं ना जलाया करो । जानी ।
क्यों हवाई उड रही है रुखे रोशन पर तेरे ।
मैं न तडफूंगा जो छींटें आये दामन पर तेरे ॥

जरा बचके न खजर चलाया करो । जानी० ।
सामने आते हो मेरे डालकर मुंहपर नकाब ॥
गैर से परदा नहीं किस वास्ते आली जनाव ।
देखो आशिक के दिल न दुखाया करो । जानी ।
बात कहता हुं अगर मानो उसे अव माहेरुवा ।
इक तो है नाजुक जमाना और फिर तुम नौजवां॥
कहीं शब को अकेले न जाया करो । जानी० ।
आशिकों की लाग होती है बुरी अय महलका ॥
कोई जालिम पान जादुका न दे तुमको खिला ।
देखो हरएक का पान न खाया करो । जानी० ।
मेरे घर आये इनायत आपने ये मुझ पे की ।
मेरे सिर आखोंपेआओ थी येकव खिसमत मेरी ॥
मेरे गैरों को साथ न लाया करो । जानी० ।
खुद व खुद इस माहरुने मुझको बुलवाकर कहा।
यह तो मैं समझा हुं ढूंढा है हंसी कोई नया ।
मिया अहमान यहां भी तो आया करो । जानी ।

* गजल नं० १३ *

किया याद न तुम के हसीने मुझे ।

यही रंज तो देगा न जीने मुझे ॥
बेखबर हुं मैं मुहब्बत की मुझे तमीज क्या ।
इश्को उलफत किसको कहते हैं वफा हैचीज क्या ॥
नहीं प्यार के याद करीने मुझे ॥
बेखुदी में जों २ से मकां पूछा किया ।
हर सिजर हर वर्गसे नामो निशां पुछा किया ॥
तेरा घर न बताया किसीने मुझे ॥
आंख मे दम है अगरचे गम में हुं बहारहूं ।
बांसरी वाले कहां है आ कि मैं खामोश हूं ॥
पडे मौत के ठंडे पसीने मुझे ॥ किया० ॥

* गजल नं० १४ *

मुझे देहली का सैर करादो पिया ।
मेरा मोटर में बैठन को तरसे जिया ॥
जाती है नित हमसाइया मोटर में बैठके ।
जब भी कहुं बोलते हैं आप ऐंठके ॥
क्या गुना मैंने ऐसा तुम्हारा किया ॥मेरा॥
कहती हुं हाथ जोडके मानो हमारी बात ।
ठंडी सडक पैं लेचलो बिठलाके अपने सात ॥

मुझे लाल किला भी दिखादो पिया ॥मेरा
मुद्दत से कह रही हूं रसीने तो लेचलो ।
दरशन को कालकाजी के वहा से चले चलो
शिम्भू दिया ल में भोजन खिवादो पिया॥मेरा
मोटर टरेम गाड़ियों में औरतें सदा ।
जाती हैं रोज सेरको देखा नहीं है क्या ॥
मेरी अरजा को तुम भी निभादो पिया
मेरा मोटर में बैठन को तरसे जिया ।

* गजल नं० १५ *

सिया राम शरण में बुलालो मुझे ।
अपने चरणो का दास बनालो मुझे ॥
नीच हूं में पातकी निज धर्म छोड़ा है मैंने ।
रात दिन करताहुं अघ सतकर्म छोडा है मैंने ॥
जैसा हूं मैं तुम्हारा निभालो मुझे ॥ सीया ।
होगया उन्मत्त पीकर मोह रूपी भंग को ।
जा कुसंगति में फंसा तजकर के शुभ सतसंग को ॥
गिरा ऊंचे शिखर से उठालो मुझे ॥ सीया ॥
ज्ञान भक्ति है न किंचित सब तरह से हीन हूं ।

करता हूं सेवन विषय अविचार में तल्लीन हूं ॥
मोह फांसी से न अब बचालो मुझे ॥सिया॥
नित भटकता ही फिरा संसार में नहीं सुख मिला।
बस जिधर दौड़ा मैं सुख को सुख के बदले दुख मिला
अब तो गोद में अपनी बिठालो मुझे ॥सि०॥
मांगता हूं आपसे भिक्षा मैं भक्ति की हरी।
पार करदो नाव मेरी शोक सागर से हरी ॥
आया दर पे तुम्हारे न टालो मुझे ॥सिया॥
शत्रु हूं मैं आपका संकट को मेरे दो निवेर ॥
नाथ जीवन मरण का सब तोड दो ये हेर फेर।
मत मायके चक्कर में डालो मुझे ॥ सीया ॥
गीध व्याध गजादि गणिका शबरी सदना तरे।
आपने करके कृपा भवपार कर दीने हरे ॥
अपने चरणों की रज में लिटालो मुझे ॥ सिया ॥

पुस्तक मिलने का पता—

लाला कन्हैयालाल चन्दूलाल
दरीबा कलां, देहली।